Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Faculty of Humanities- Hindi *Semester - III*

Paper Code : HHINCT-1202, Title राष्ट्रीय चेतनामूलक हिंदी कविता (Major)

Curriculum Details: (for 4 Credits)

Module No.	Unit No.	Name of Topic	1 Hrs.=60 M.
1.0		राष्ट्रीय चेतना मूलक हिंदी कविता : पृष्ठभूमि	
	1.1	राष्ट्रीय चेतना का अर्थ, स्वरूप, महत्व	
	1.2	भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय, विकास	10
	1.3	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन	
	1.4	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता	
2.0		स्वतंत्रतापूर्व राष्ट्रीय चेतनामूलक हिंदी कविता-कवि का जीवन परिचय, रचनाएँ	29
	2.1	2.1.1 भारतेंदु हरिश्चंद्र -भारत-दुर्दशा न देखी जाई 2.1.2 अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' -जन्मभूमि 2.1.3 मैथिलीशरण गुप्त-आर्य	
	2,2	2.2.1 जयशंकर प्रसाद - अरुण यह मधुमय देश हमारा 2.2.2 सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'-जागो फिर एक बार-2 2.2.3 माखनलाल चतुर्वेदी -पुष्प की अभिलाषा	20
	2.3	2.3.1 सुभद्राकुमारी चौहान - झाँसी की रानी 2.3.2 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'-कोटी कोटी कंठ से निकली यही स्वर धारा है 2.3.3 रामधारीसिंह दिनकर -.शहीद स्तवन (कलम,आज उनकी जय बोल)	
	2.4	2.4.1 सोहनलाल द्विवेदी -मातृभूमि 2.4.2 श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'- झंडा गीत (विजयी विश्व तिरंगा प्यारा) 2.4.3 श्याम नारायण पाण्डेय -.राणा प्रताप की तलवार	
3.0		स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्रीय चेतनामूलक हिंदी कविता- कवि का जीवन परिचय, रचनाएँ	
	3.1	द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी - वीर तुम बढ़े चलो	
	3.2	गोपालप्रसाद व्यास- खूनी हस्ताक्षर	15
	3.3	अटल बिहारी वाजपेयी -उनकी याद करें	
	3.4	डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक'- हम भारतवासी	
4.0		समकालीन राष्ट्रीय चेतनामूलक हिंदी गीत- गीतकार का जीवन परिचय, रचनाएँ	
	4.1	कवि प्रदीप - ऐ मेरे वतन के लोगों	
	4.2	कैफी आज़मी- कर चले हम फ़िदा जाने तन साथियों	15
	4.3	साहिर लुधियानवी - यह देश है वीर जवानों का	
	4.4	इंदीवर - है प्रीत जहाँ की रीत सदा	
		Total	0

डॉ वनिता आग्रे
हिंदी विभाग,
दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर

बी ए द्वितीय वर्ष

राष्ट्रीय चेतनामुलक हिंदी कविता-पेपर क्रमांक -6

सत्र तिसरा

प्र टिप्पणी लिखिए।

1. भारत दुर्दशा कविता का भाव

कविता का प्रमुख उद्देश्य है, तत्कालीन भारत की दुर्दशा को दिखाना एवं दुर्दशा के कारणों को कम कर दुर्दशा करने वालों का यथार्थ चित्र उपस्थित करना। व्यंग्य इस कविता का प्रधान गुण है। समाज व्यवस्था, धर्म व्यवस्था, सरकारी व्यवस्था, देशवासियों तथा समाज सुधारकों सभी पर तीखे व्यंग्य दिखाई देते हैं इसमें भारतेंदु जी की राज भक्ति तथा भारत का धन विदेश जाने की चिंता साफ-साफ नजर आती है-

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी। पैधन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी"

भारत दुर्दशा कविता का मुख्य उद्देश्य भारत की तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण करना और देशवासियों को इस दुर्दशा पर विचार करने और इसे दूर करने के लिए प्रेरित करना है। इस कविता के माध्यम से भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रिटिश शासन, आपसी कलह, और सामाजिक कुरीतियों को भारत की दुर्दशा का कारण बताया है।

कविता में भारत की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है, जिसमें गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, और आपसी फूट जैसी समस्याएं प्रमुख हैं। कविता में ब्रिटिश शासन द्वारा किए जा रहे शोषण और अत्याचारों को उजागर किया गया है, और यह दिखाया गया है कि कैसे वे भारत को लूट रहे हैं।

कविता में तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों, जैसे कि बाल विवाह, सती प्रथा, और अंधविश्वास, पर व्यंग्य किया गया है और इन्हें बदलने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

कविता का उद्देश्य देशवासियों में देशभक्ति की भावना जगाना है, ताकि वे अपनी मातृभूमि के प्रति जागरूक हों और इसे बेहतर बनाने के लिए एकजुट होकर प्रयास करें।

कविता के माध्यम से भारतेंदु हरिश्चंद्र ने देशवासियों से आह्वान किया है कि वे अपनी दुर्दशा पर रोने के बजाय, इसे दूर करने के लिए सक्रिय रूप से काम करें।

संक्षेप में, "भारत दुर्दशा" एक सामाजिक-राजनीतिक कविता है जिसका उद्देश्य भारत की दुर्दशा का चित्रण करना, उसके कारणों को उजागर करना, और देशवासियों को इसे सुधारने के लिए प्रेरित करना है।

2. आर्य' कविता का मूल उद्देश्य

मैथिलीशरण गुप्त की कविता "आर्य" के नाम से हम ज्ञात है। हालाँकि, गुप्त जी ने कई ऐसी कविताएँ लिखी हैं जो भारतीयता, राष्ट्रीयता और आर्य संस्कृति से संबंधित हैं।"भारत-भारती" में भारतीय संस्कृति और इतिहास का गौरवगान है, जो उस समय के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई थी, जिसके कारण महात्मा गांधी ने उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि दी.

गुप्त जी को "राष्ट्रकवि" के रूप में जाना जाता है, और उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्रीयता के भाव प्रमुख रूप से पाए जाते हैं। कविता, मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखी गई है, जो मनुष्य के आर्य होने पर जोर देती है। कविता में, कवि ने प्राचीन आर्यों के गुणों, जैसे कि उनका ज्ञान, कला, कौशल और निस्वार्थता, का वर्णन किया है। साथ ही, उन्होंने वर्तमान समय में आर्यों की

अधोगति पर चिंता व्यक्त की है। कवि चाहते हैं कि मनुष्य अपने पूर्वजों के आदर्शों को याद रखें और उनके जैसा बनने का प्रयास करें।

कवि भारत के प्राचीन गौरव को याद करते हैं, जब आर्य विद्या, कला और कौशल में अग्रणी थे और पूरे विश्व को ज्ञान प्रदान करते थे। कवि वर्तमान में आर्यों की स्थिति पर दुख व्यक्त करते हैं, जो पहले से बहुत कम हो गई है। वे स्वार्थी और मोह-माया में फंसे हुए हैं।

कवि का संदेश है कि मनुष्य को अपने पूर्वजों के आदर्शों को याद रखना चाहिए, मोह-माया से दूर रहना चाहिए, और निस्वार्थ भाव से दूसरों की सेवा करनी चाहिए।

कवि ने आर्यों के गुणों का वर्णन किया है, जैसे कि उनका ज्ञान, कला, कौशल, निस्वार्थता, और स्वतंत्रता। उन्होंने वर्तमान समय में आर्यों की अधोगति पर चिंता व्यक्त की है।

कवि का संदेश है कि मनुष्य को अपने पूर्वजों के आदर्शों को याद रखना चाहिए और उनके जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए।

'आर्य' कविता की मूल संवेदना मानव की पतनशील स्थिति का चित्रण करना और प्राचीन आर्यों के श्रेष्ठ गुणों को पुनः स्थापित करना है। कवि भारत के गौरवमय अतीत को याद करते हुए वर्तमान की स्वार्थी और पथभ्रष्ट स्थिति पर चिंता व्यक्त करता है. यह कविता प्राचीन आर्यों की स्वतंत्रता, निःस्वार्थता, भक्ति और परोपकार की भावना का स्मरण कराती है, ताकि पाठक भी इन आदर्शों को अपनाकर अपने जीवन को सार्थक बना सकें। कविता की मुल संवेदनाएँ ,अतीत का गौरव और वर्तमान की निराशा को व्यक्त करना है।

गुप्त जी भारत के प्राचीन गौरव का स्मरण करते हैं, जब भारत भूमि ऋषियों और ज्ञान की भूमि थी, और ज्ञान का प्रकाश यहीं से फैला. इसके विपरीत, वर्तमान मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति और पतनशील स्थिति पर कवि को दुःख है।

आर्यों की आदर्श स्थिति को बयां करते हुए कहते हैं ।प्राचीन काल आर्यों को अज्ञान और मोह-बंधन से मुक्त, स्वतंत्र, शांतिपूर्ण, और ईश्वर भक्ति में लीन थे।वे दूसरों के हित के लिए जीते थे, न कि केवल अपने स्वार्थ के लिए।मानव चेतना का पुनरुद्धार ही उनका एकमात्र उद्देश्य था।

यह कविता भारतवासियों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और आगे क्या होंगे. कवि चाहता है कि आज का मनुष्य भी प्राचीन आर्यों के आदर्शों को अपनाए और स्वार्थ त्याग कर परोपकार और आत्म-भक्ति का जीवन जिए। राष्ट्रीयता और नैतिक शिक्षा प्रचार प्रसार करें।गुप्त जी की यह रचना राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत है, जिसमें भारत की महान संस्कृति और उसके पतन पर कवि ने पीड़ा व्यक्त की है। यह कविता नैतिकता और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने का संदेश देती है।

3. जागो फिर एक बार का उद्देश्य:

जागो फिर एक बार' प्रस्तुत कविता स्वतंत्रता आन्दोलन की ऊर्जा से प्रेरित होकर लिखी गयी एक छायावादी कविता है । इसकी काव्य - भाषा और विवरण में राजनीतिक भाषा का प्रयोग तो नहीं हुआ है, मगर इसकी भाव - योजना के भीतर स्वतंत्रता आन्दोलन की सक्रियता बनी हुई है ।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता "जागो फिर एक बार" का दूसरा भाग, भारतवासियों को उनकी गौरवशाली अतीत और छिपी हुई शक्ति को याद दिलाते हुए, उन्हें कर्म और जागरण की ओर प्रेरित करता है। यह भाग, विशेष रूप से, भारत की पराधीनता और सुप्त मानसिकता पर प्रकाश डालता है, और देशवासियों से अपनी सोई हुई चेतना को जगाने का आह्वान करता है।

कविता का दूसरा भाग, भारतवासियों को उनकी वीरतापूर्ण परंपराओं और शौर्य की याद दिलाता है। निराला, गुरु गोविंद सिंह के उदाहरण का उपयोग करते हुए, भारतीयों को उनकी अदम्य भावना को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जो इस प्रकार है-

१)पराधीनता की निंदा:

कवि, पराधीनता की स्थिति को "सिंह की गोद से छीनता रे शिशु कौन" जैसी पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे भारत, अपनी स्वतंत्रता खोने के बाद, एक शिशु के समान असहाय और कमजोर हो गया है।

२)गौरवशाली अतीत का स्मरण:

निराला, भारत के महान इतिहास और सांस्कृतिक विरासत की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, और भारतीयों को उनके वीर पूर्वजों और पराक्रमी योद्धाओं को याद दिलाते हैं।

३)कर्म और जागरण का आह्वान:

कवि, भारतीयों को आलस्य और निष्क्रियता से जागने और अपने देश के लिए कुछ करने का आह्वान करते हैं। वे राष्ट्रीय चेतना और आत्म-सम्मान की भावना को जगाने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

४)भ्रमित चेतना का निराकरण:

निराला, भारतवासियों को उनकी भ्रमित चेतना से बाहर निकलने और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे उन्हें सांसारिक सुखों में लिप्त होने के बजाय, राष्ट्रीय कर्तव्य और सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते हैं। भारतवासियों को उनकी खोई हुई शक्ति और गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है, और उन्हें जागृत होकर अपने देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'जागो फिर एक बार' स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखी गई है, जिसमें उन्होंने सोए हुए भारतीयों को जगाने और उनमें देशप्रेम की भावना जगाने का प्रयास किया है। यह कविता पराधीनता से निराश भारतीयों को उनके गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है और उन्हें अपनी खोई हुई शक्ति और सम्मान को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

'इस कविता में, निराला ने भारतीय जनता की कायरता और निष्क्रियता पर प्रकाश डाला है, और उन्हें उनके बहादुर पूर्वजों के उदाहरणों से प्रेरित करते हुए, अपनी खोई हुई शक्ति और गौरव को पुनः प्राप्त करने का आह्वान किया है। कविता में, कवि ने समाज को संगठित होने और एकजुट होकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है।

संक्षेप में, 'जागो फिर एक बार' कविता एक ऐसे आंदोलन की पृष्ठभूमि बनाती है जो न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग करता है, बल्कि भारतीय जनता के भीतर आत्म-सम्मान, गौरव और राष्ट्रीयता की भावना को भी जगाने का प्रयास करता है। यही उद्देश्य इस कविता के अंतर्गत कवि ने व्यक्त किया है।

4.मातृभूमि कविता का मुल संदेश:

मातृभूमि' कविता का मुख्य संदेश यह है कि हमें अपने देश, अपनी जन्मभूमि से गहरा प्रेम और लगाव रखना चाहिए। कवि ने मातृभूमि की महानता, सुंदरता और उसके लिए अपने कर्तव्यों की याद दिलाई है। हमें अपनी मातृभूमि की उन्नति, सुरक्षा और सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। कवि के अनुसार, देश के लिए बलिदान देना और उसकी सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। मातृभूमि के प्रति निस्वार्थ प्रेम और समर्पण ही सच्ची देशभक्ति है।

मातृभूमि" सुप्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी द्वारा रचित एक प्रेरणादायक कविता है। इस कविता में भारत की प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक गरिमा और महानता का अद्‌भुत चित्रण किया गया है।इस कविता में देशभक्ति, प्रकृति प्रेम और भारत की महानता का भावनात्मक चित्रण किया गया है, जो लोगों में अपनी मातृभूमि के प्रति गर्व और सम्मान की भावना उत्पन्न करता है।

भारत ऋषि मुनियों का देश है जिन्होंने आजीवन पवित्र जीवन का संदेश अपने देश तक ही नहीं अपितु तो संपूर्ण दुनिया तक पहुंचाया है ।उन्होंने सत्य ,अहिंसा ,मानवता ,दया, प्रेम, भाईचारे का संदेश दिया है। जिसके कारण यह भूमि पवित्र हो गई है। भारत नदियों का देश है यहां की मिट्टी बहुत उपजाऊ है जिसके कारण भरपूर फसल होती है अर्थात वह सोना उगाती है। यही कारण है कि इसे स्वर्ण भूमि कहते हैं कवि का कहना है कि मातृभूमि ही हमारे लिए सब कुछ है जिससे हमें भारत की राष्ट्रीयता मिली है । इसलिए कवि ने भारत भूमि को मातृभूमि की संध्या दी है ।जिस प्रकार मां अपने बच्चों को पालती है, उसे अपना दूध पिलाती है, उसके हर एक सुख दुख का ध्यान रखती है। ठीक उसी प्रकार मातृभूमि भारत भूमि अपनी मिट्टी से उत्पन्न अनाज खिलाकर हमारा लालन-पालन करती है। उसका शीतल एवं मधुर जल पीकर हम बड़े हुए हैं अंत: उसे मातृभूमि कहना सर्वथा उचित है।

जन्मे जहां थे रघुपति,
जन्मी जहां थी सीता,
श्रीकृष्णा ने सुनाई ,
वंशी पुनीत गीत।

इस प्रकार यह भारतभूमि, यह मातृभूमि, स्वर्ण भूमि है।
भारत माता की भूमि राम सीता कृष्ण और बुद्ध जी से महान आत्माओं की जन्मभूमि है जिन्होंने दुनिया को जीवन मूल्य सिखाए हैं मातृभूमि कविता देशभक्ति राष्ट्रभक्ति और अपनी धरती के प्रति प्रेम सिखाती है ।तथा अपनी सांस्कृतिक ऐतिहासिक घटनाओं के अंतर्गत प्रेम भावनाओं को जगाती है इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत भूमि तथा मातृभूमि के गौरव गान उसकी संस्कृति उसकी प्रकृति चित्रण तथा वीर,संत महात्माओं के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया है।

5. **कर चले हम फिदा' कविता का मुख्य उद्देश्य** :

प्रस्तुत कविता में देश के सैनिकों की भावनाओं का वर्णन है। सैनिक कभी भी देश के मानसम्मान को बचाने से पीछे नहीं हटेगा। फिर चाहे उसे अपनी जान से ही हाथ क्यों ना गवाना पड़े। भारत – चीन युद्ध के दौरान सैनिकों को गोलियाँ लगने के कारण उनकी साँसें रुकने वाली थी ,ठण्ड के कारण उनकी नाड़ियों में खून जम रहा था परन्तु उन्होंने किसी चीज़ की परवाह न करते हुए दुश्मनों का बहदुरी से मुकाबला किया और दुश्मनों को आगे नहीं बढ़ने दिया। सैनिक गर्व से कहते है कि हमें अपने सर भी कटवाने पड़े तो हम ख़ुशी ख़ुशी कटवा देंगे पर हमारे गौरव के प्रतिक हिमालय को नहीं झुकने देंगे अर्थात हिमालय पर दुश्मनों के कदम नहीं पड़ने देंगे। लेकिन देश के लिए प्राण न्योछावर करने की ख़ुशी कभी कभी किसी किसी को ही मिल पाती है। अर्थात सैनिक देश पर मर मिटने का एक भी मौका नई खोना चाहते। जिस तरह से दुल्हन को लाल जोड़े में सजाया जाता है उसी तरह सैनिकों ने भी अपने प्राणों का बलिदान दे कर धरती को खून से लाल कर दिया है सैनिक कहते हैं कि ,हम तो देश के लिए बलिदान दे रहे हैं परन्तु हमारे बाद भी ये सिलसिला चलते रहना चाहिए। जब भी जरुरत हो तो इसी तरह देश की रक्षा के लिए एकजुट होकर आगे आना चाहिए। सैनिक अपने देश की धरती को सीता के आँचल की तरह मानते हैं और कहते हैं कि अगर कोई हाथ आँचल को छूने के लिए आगे बड़े तो उसे तोड़ दो।अपने वतन की रक्षा के लिए तुम ही राम हो और तुम ही लक्ष्मण हो अब इस देश की रक्षा का दायित्व तुम पर है।

देशभक्ति की भावना को प्रबल करना और देश के बलिदानियों के प्रति सम्मान जगाना है, जिससे देशवासी देश की रक्षा में अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर रहें। यह कविता सैनिकों के अदम्य साहस और देश के प्रति उनके सर्वोच्च समर्पण को दर्शाती है और देशवासियों से भी उसी भावना का पालन करने और देश के गौरव की रक्षा करने का आह्वान करती है।

कवि चाहता है कि लोग अपने देश के लिए बलिदान की भावना को समझें और उसे अपनाएँ।

यह कविता युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान करने वाले सैनिकों के अंतिम समय के विचारों को व्यक्त करती है।कविता का उद्देश्य देश के मान-सम्मान की रक्षा के लिए हिमालय जैसे प्रतीकों को झुकने न देने का संदेश देना है।यह गीत देशवासियों को देश की रक्षा और विकास के लिए प्रेरित करता है, ताकि वे बलिदान के पथ पर आगे बढ़ सकें। कविता यह संदेश देती है कि जो सैनिक शहीद हो गए, उनके बाद देश की रक्षा की जिम्मेदारी अब देशवासियों के कंधों पर है।

यह कविता, १९६२ के भारत-चीन युद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई थी और यह उन सैनिकों के बलिदान और साहस की भावना को दर्शाती है, जिन्होंने भारत की धरती की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था।

6.**जागो फिर एक बार का भावार्थ-**

जागो फिर एक बार' प्रस्तुत कविता स्वतंत्रता आन्दोलन की ऊर्जा से प्रेरित होकर लिखी गयी एक छायावादी कविता है । इसकी काव्य - भाषा और विवरण में राजनीतिक भाषा का प्रयोग तो नहीं हुआ है, मगर इसकी भाव - योजना के भीतर स्वतंत्रता आन्दोलन की सक्रियता बनी हुई है ।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता "जागो फिर एक बार" का दूसरा भाग, भारतवासियों को उनकी गौरवशाली अतीत और छिपी हुई शक्ति को याद दिलाते हुए, उन्हें कर्म और जागरण की ओर प्रेरित करता है। यह भाग, विशेष रूप से, भारत की पराधीनता और सुप्त मानसिकता पर प्रकाश डालता है, और देशवासियों से अपनी सोई हुई चेतना को जगाने का आह्वान करता है।

कविता का दूसरा भाग, भारतवासियों को उनकी वीरतापूर्ण परंपराओं और शौर्य की याद दिलाता है। निराला, गुरु गोविंद सिंह के उदाहरण का उपयोग करते हुए, भारतीयों को उनकी अदम्य भावना को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जो इस प्रकार है-

१)पराधीनता की निंदा:

कवि, पराधीनता की स्थिति को "सिंह की गोद से छीनता रे शिशु कौन" जैसी पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे भारत, अपनी स्वतंत्रता खोने के बाद, एक शिशु के समान असहाय और कमजोर हो गया है।

२)गौरवशाली अतीत का स्मरण:

निराला, भारत के महान इतिहास और सांस्कृतिक विरासत की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, और भारतीयों को उनके वीर पूर्वजों और पराक्रमी योद्धाओं को याद दिलाते हैं।

३)कर्म और जागरण का आह्वान:

कवि, भारतीयों को आलस्य और निष्क्रियता से जागने और अपने देश के लिए कुछ करने का आह्वान करते हैं। वे राष्ट्रीय चेतना और आत्म-सम्मान की भावना को जगाने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

४)भ्रमित चेतना का निराकरण:

निराला, भारतवासियों को उनकी भ्रमित चेतना से बाहर निकलने और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे उन्हें सांसारिक सुखों में लिप्त होने के बजाय, राष्ट्रीय कर्तव्य और सामाजिक जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करने की सलाह देते हैं। भारतवासियों को उनकी खोई हुई शक्ति और गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है, और उन्हें जागृत होकर अपने देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'जागो फिर एक बार' स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि में लिखी गई है, जिसमें उन्होंने सोए हुए भारतीयों को जगाने और उनमें देशप्रेम की भावना जगाने का प्रयास किया है। यह कविता पराधीनता से निराश भारतीयों को उनके गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है और उन्हें अपनी खोई हुई शक्ति और सम्मान को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है।

'इस कविता में, निराला ने भारतीय जनता की कायरता और निष्क्रियता पर प्रकाश डाला है, और उन्हें उनके बहादुर पूर्वजों के उदाहरणों से प्रेरित करते हुए, अपनी खोई हुई शक्ति और गौरव को पुनः प्राप्त करने का आह्वान किया है। कविता में, कवि ने समाज को संगठित होने और एकजुट होकर देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया है।

संक्षेप में, 'जागो फिर एक बार' कविता एक ऐसे आंदोलन की पृष्ठभूमि बनाती है जो न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग करता है, बल्कि भारतीय जनता के भीतर आत्म-सम्मान, गौरव और राष्ट्रीयता की भावना को भी जगाने का प्रयास करता है। यही उद्देश्य इस कविता के अंतर्गत कवि ने व्यक्त किया है।

7. पुष्प की अभिलाषा भाव -

प्रस्तुत कविता में कवि ने पुष्प के माध्यम से हमें म्रातभूमि की सेवा करने के लिए प्रेरित किया है। पुष्प के कई तरह के उपयोग है किन्तु पुष्प की अभिलाषा यह है कि म्रातभूमि के प्राणोत्स्रग करने वालों के पथ पर ही उसे डाला जाए। पुष्प की देश के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना को दर्शाया गया है।

पुष्प का यह कहना कि वह वीरों के पैरों में कुचला जाना चाहता है, बलिदान की भावना को दर्शाता है।

पुष्प की इच्छाएँ भौतिक सुखों से परे हैं, जो सादगी और त्याग का प्रतीक हैं। कविता में, पुष्प की यह अभिलाषा है कि -

"मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक"

अर्थात मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों के रास्ते पर फेंका जाए. वह किसी भी सांसारिक या भौतिक सुखों की चाह नहीं रखता, जैसे कि सुंदर स्त्रियों के गहनों में लगना, प्रेमियों की माला में पिरोया जाना, या देवताओं के सिर पर चढ़ना.

कविता में, पुष्प की मुख्य अभिलाषा हैकि,कविता में कवि ने पुष्प के माध्यम से हमें म्रातभूमि की सेवा करने के लिए प्रेरित किया है। पुष्प के कई तरह के उपयोग है किन्तु पुष्प की अभिलाषा यह है कि म्रातभूमि के प्राणोत्स्रग करने वालों के पथ पर ही उसे डाला जाए। अर्थात पुष्प आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों के पैरों तले मसलाना पसंद करता है। यही उसकी इच्छा है।

कविता में फूल अपनी इच्छाओं को प्रकट करता है। वह देव कन्याओं के गहनों, दुल्हन की वरमाला में गूँथा जाना नहीं चाहता। पुष्प न तो राजा महाराजाओं की मृत्यु पर उनके शव पर अर्पित होना चाहता और न ही देवताओं के सिर पर चढ़कर अपने भाग्य पर घमंड करना चाहता है। अंततः फूल अपनी देशप्रेंम की भावना को प्रकट करते हुए वनमाली से प्रार्थना कर कहता है कि वह उसे तोड़कर उन मार्गों में फेंक दे, जिन मार्गों से अपनी मातृभूमि की रक्षा करने के लिए वीर पुरुष गुजरते हैं।

उक्त कविता में माखनलाल चतुर्वेदी जी ने फूल के माध्यम से देशभक्ति की भावना का चित्रण बहुत ही मनोरम ढंग से किया है। फूल की अभिव्यक्ति को देखकर साधारण मानव के मन में भी अपने देश के प्रति प्रेंम के भाव जागृत हो जाते हैं।

पुष्प की अभिलाषा' कविता में कवि ने देश के प्रति समर्पित होने का संदेश दिया है। पुष्प के माध्यम से कवि ने प्रेरणा दी है कि हमें अपने देश के लिए त्याग-बलिदान करने में पीछे नहीं रहना चाहिए। हमें अपने देश पर स्वयं को बलिदान करने के लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

इस कविता के माध्यम से कभी नहीं भारतवासियों को देश के प्रति समर्पित होने का संदेश देते हैं तथा अपने देश की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए एक पुष्प की इच्छाओं के माध्यम से देश सेवा करना यही हमारा परम कर्तव्य इसी उद्देश्य को इस कविता के माध्यम से कवि ने हमारे सामने रखा है।

8. **झांसी की रानी कविता की मूल संवेदना :**

झांसी की रानी कविता से ये संदेश दिया गया है कि अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजादी दिलाने में अनेक देशभक्त वीर एवं वीरांगनाएं शहीद हुई॥ आजादी के प्रथम युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई ने देशवासियों में तयाग बलिदान की जो भावना जगाई हमें उसका सम्मान करना चाहिए और देश की स्वतंत्रता की खातिर बड़ा से बड़ा त्याग करना चाहिए। हर हालत में देश के गौरव की रक्षा करनी चाहिए।

कविता में, कवयित्री ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को एक ऐसी बहादुर महिला के रूप में चित्रित किया है, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध में अद्वितीय वीरता दिखाई। वह बचपन से ही युद्ध कलाओं में निपुण थी और झांसी की रक्षा के लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी। कविता में रानी लक्ष्मीबाई को "मर्दानी" कहा गया है, जो उनकी वीरता और पराक्रम को दर्शाता है।

यह कविता छात्रों को न केवल इतिहास की जानकारी देती है, बल्कि उन्हें देशभक्ति, साहस और बलिदान जैसे गुणों को भी सिखाती है।सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "झाँसी की रानी" रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस और वीरता का वर्णन करती है। यह कविता 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में उनके अद्वितीय पराक्रम को दर्शाती है। कविता में, लक्ष्मीबाई को एक बहादुर योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है, जो “मर्दानी” की तरह अंग्रेजों से लड़ती है और झांसी की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देती है।

9 **कोटि-कोटि कांड से निकली यही स्वर धारा है कविता का उद्देश्य:**

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता 'कोटि-कोटि कंठ से निकली यही स्वर धारा है, भारतवर्ष हमारा है यह हिंदुस्तान हमारा है'।के कई प्रमुख उद्देश्य हैं, जो राष्ट्रीयता और देशभक्ति की भावना से जुड़े हैं। ये उद्देश्य कविता के विस्तृत भावार्थ और मुख्य संदेश में निहित हैं।
कविता के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं:

राष्ट्रप्रेम की भावना को जगाना कवि का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। देशवासियों के मन में अपने राष्ट्र के प्रति गहरा प्रेम और सम्मान जगाना है। वह करोड़ों भारतीयों की एकजुट आवाज़ के माध्यम से यह संदेश देते हैं कि भारत हमारा है और हमें इस पर गर्व है।

देश के गौरवशाली इतिहास से परिचय ,भारत के प्राचीन इतिहास, संस्कृति और ज्ञान-निधान होने का उल्लेख किया गया है। इसका उद्देश्य लोगों को अपने देश की महानता और समृद्ध विरासत से परिचित कराना है, ताकि वे अपने राष्ट्र पर गर्व कर सकें।

एकजुटता की भावना को बढ़ावा देना: "कोटि-कोटि कंठों से निकली यही स्वर धारा है" पंक्ति एकजुटता का प्रतीक है। कवि यह दर्शाना चाहते हैं कि भले ही भारत में अनेकता है, लेकिन राष्ट्रप्रेम के मामले में सभी भारतीय एक हैं।

देशभक्ति की प्रेरणा देन, यह कविता लोगों को अपने देश के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और समर्पित रहने की प्रेरणा देती है। इसका ओजपूर्ण स्वर लोगों को अपनी मातृभूमि के लिए कुछ भी करने के लिए प्रेरित करता है।

प्राकृतिक और सांस्कृतिक समृद्धि का गुणगान तथा कवि ने भारत की नदियों, पर्वतों और प्राचीन ज्ञान का उल्लेख करके देश की प्राकृतिक और सांस्कृतिक समृद्धि का बखान किया है। इसका उद्देश्य लोगों में अपने देश के प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आदर का भाव पैदा करना

10. **उनकी याद करें कविता का मूल संदेश:**

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लिखित कविता 'उनकी याद करें', उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। यह कविता देशभक्ति की भावना को जगाती है और हमें यह

"जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।":

इन पंक्तियों में, वाजपेयी उन क्रांतिकारियों को याद करने का आह्वान करते हैं, करती है और उन्हें राष्ट्र के प्रति अपने 'उनकी याद करें' पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कविता है। यह उन स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि है जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। इस कविता में, वाजपेयी देश के नागरिकों से उनके बलिदान को याद

करने और सम्मान देने का आग्रह करते है । कवि उन क्रांतिकारियों को याद करने का आह्वान करते हैं, जिन्होंने देश की आजादी के लिए वर्षों तक जेलों में अमानवीय यातनाएँ सही और हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को गले लगा लिया।

"याद करें काला पानी को, अंग्रेजों की मनमानी को, कोल्हू में जुट तेल पेरते, सावरकर से बलिदानी को।"

कवि वीर सावरकर जैसे महान बलिदानियों का स्मरण करते हैं, जिन्होंने काला पानी की सजा भुगती और अंग्रेजों के अत्याचारों का सामना किया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे शहीदों को याद करते हैं, जिन्होंने बहरे ब्रिटिश शासन को जगाने के लिए बम फोड़े और अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। हमारे पूर्वजों ने अन्याय के खिलाफ निडरता से लड़ाई लड़ी और कभी भी दया की भीख नहीं माँगी। हमें उनका स्मरण

अटल बिहारी वाजपेयी की कविता 'उनकी याद करें' का मुख्य संदेश यह है कि देश को स्वतंत्रता दिलाने वाले अनगिनत बलिदानियों को कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए। यह सिर्फ एक स्मरण नहीं, बल्कि उनके त्याग से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण के लिए एकजुट होने का आह्वान है।

वाजपेयी हमें उन स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के लिए कहते हैं, जिन्होंने जेलों में यातनाएं सहीं और हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गए। यह कविता हमें याद दिलाती है कि स्वतंत्रता आसानी से नहीं मिली, बल्कि यह हमारे पूर्वजों के महान बलिदान का परिणाम है।

अतीत से प्रेरणा जो मिलती है कविता हमें अपने गौरवशाली इतिहास को याद रखने का संदेश देती है। इसमें विशेष रूप से वीर सावरकर, भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे अमर बलिदानियों के पवित्र आत्म-त्याग का उल्लेख है।संगठित होकर आगे बढ़ना, मानवता का मूल्य है। वाजपेयी कहते हैं कि यदि हम सच्ची मुक्ति और प्रगति चाहते हैं, तो हमें संगठित शक्ति सही रणनीति और अटूट विश्वास आवश्यकता है।

निराशा को त्यागना कविता का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि अंतिम विजय निश्चित है, इसलिए रास्ते में निराशा के भाव को त्याग देना चाहिए। हमें शहीदों के बलिदान से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

जागरूकता का आह्वान: यह कविता एक तरह से राष्ट्र के लोगों को जगाने का प्रयास है, जो शायद अपने इतिहास और स्वतंत्रता के महत्व को भूल रहे हैं। वाजपेयी लोगों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक करते हैं।

11. **हम भारतवासी कविता का भावार्थ:**

हम भारतवासी' कविता का मुख्य उद्देश्य भारतीय नागरिकों में देशभक्ति, विश्व बंधुत्व और उच्च मानवीय मूल्यों को विकसित करना है। कवि रमेश पोखरियाल 'निशंक' इस कविता के माध्यम से हमें एक बेहतर और अधिक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं।
इस कविता के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

देशभक्ति की भावना का विकास करनाकविता का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य देश के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना को जगाना है। यह बताती है कि हम भारतवासी अपने देश के गौरवशाली इतिहास और समृद्ध संस्कृति पर गर्व करते हैं।

विश्व शांति और भाईचारे का संदेश देनायह कविता भारत की उस प्राचीन परंपरा को दर्शाती है, जिसमें पूरे विश्व को एक परिवार माना जाता है। कवि हमें दुनिया को एक पवित्र और शांतिपूर्ण स्थान बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

नैतिक और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना कवि हमें जीवन में प्रेम, श्रद्धा, त्याग, समर्पण, और करुणा जैसे गुणों को अपनाने का संदेश देते हैं। वह कहते हैं कि हमें स्वार्थ को छोड़कर दूसरों की भलाई के लिए काम करना चाहिए।

विविधता में एकता को स्थापित करना कविता में 'ऊँच-नीच का भेद मिटाकर' सभी के बीच प्यार फैलाने की बात कही गई है। इसका उद्देश्य अलग-अलग धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोगों के बीच सद्भाव और एकता को बढ़ावा देना है।

सकारात्मकता और आशा का संचार करना, तथा निराश और हताश लोगों के मन में विश्वास और आशा जगाने की बात करती है। यह हमें यह सिखाती है कि हमें हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच रखनी चाहिए।

अज्ञानता का नाश करना, कवि कहते हैं कि हमें उलझे हुए लोगों को सत्य का मार्ग दिखाना चाहिए। इसका उद्देश्य यह है कि हम ज्ञान और विवेक के माध्यम से लोगों के जीवन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करें।

12. **शाहिद स्तवन कविता की मूल संवेदना:**

शहीद-स्तवन कविताओं का उद्देश्य मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीरों का स्तवन करना, उनके त्याग, साहस और आदर्शों को याद करना तथा पाठकों, विशेषकर युवाओं में राष्ट्रप्रेम, बलिदान की भावना और देश के प्रति समर्पण को जागृत करना है. ये कविताएँ शहीदों के जीवन-दर्शन को प्रस्तुत करती हैं, अगली पीढ़ी को प्रेरणा देती हैं और इतिहास को जीवित रखने में मदद करती हैं.

१)शहीदों को श्रद्धांजलि: इस कविता का मुख्य उद्देश्य देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि देना है। दिनकर जी शहीदों की निस्वार्थ देशभक्ति, बलिदान और वीरता को याद करते हैं।

२)देशभक्ति की भावना का संचार: कविता लोगों के दिलों में देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना जगाती है। यह हमें यह महसूस कराती है कि आजादी और सम्मान का मूल्य बहुत बड़ा है, और इसे पाने के लिए बहुत से लोगों ने अपनी जान दी।

३)कर्म और बलिदान का आह्वान: दिनकर जी शहीदों के बलिदान को व्यर्थ न जाने देने का संदेश देते हैं। वे कहते हैं कि शहीदों के त्याग को याद करके हमें अपने राष्ट्र के निर्माण और रक्षा के लिए प्रेरित होना चाहिए।

४)वर्तमान और भविष्य को प्रेरित करना: कविता न केवल बीते हुए शहीदों का सम्मान करती है, बल्कि उन 'जीवित शहीदों' को भी नमन करती है जो देश के लिए संघर्ष कर रहे हैं। साथ ही, यह आने वाली पीढ़ियों को भी त्याग और संघर्ष के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।

५)वीर रस का संचार: यह कविता अपनी ओजस्वी भाषा और भावों के कारण श्रोताओं में वीर रस का संचार करती है। यह हमें साहसी और निडर बनने के लिए प्रेरित करती है। शहीदों के आदर्शों को जीवित रखना: ये कविताएँ शहीदों के जीवन, उनके विचारों, उनके मूल्यों और उनकी उच्च वैचारिकता को उजागर करती हैं, ताकि उनका त्याग व्यर्थ न जाए.

६)इतिहास और संस्कृति को जीवित रखना: शहीद-स्तवन कविताएँ देश के गौरवशाली इतिहास और संस्कृति को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बनती हैं.

७)आह्वान और जागरण: ये कविताएँ सुस्त और आत्म-केंद्रित समाज को जगाने का काम करती हैं, उन्हें राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जागरूक करती हैं और उन्हें राष्ट्र के उत्थान के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं।

कवि अपनी कलम से उन वीरों की जय जयकार करने और उनके बलिदानों का स्मरण करने का आवाहन इस कविता के माध्यम से करते हैं।

13**. खूनी हस्ताक्षर का भावार्थ:**

कविता की शुरुआत एक जोश भरे सवाल से होती है, जिसमें कवि उन लोगों को ललकारते हैं जिनके खून में देश के लिए कोई उबाल या जज़्बा नहीं है। वे कहते हैं कि अगर खून देश के काम न आए, तो वह सिर्फ पानी है। यह कविता उस ऐतिहासिक क्षण को दर्शाती है जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता के लिए बलिदान का आह्वान किया था।

गोपाल प्रसाद व्यास की कविता 'खूनी हस्ताक्षर' का मुख्य उद्देश्य देशवासियों में देशभक्ति और बलिदान की भावना जगाना है। यह कविता नेताजी सुभाष चंद्र बोस के उस जोशीले आह्वान पर आधारित है, जब उन्होंने भारत की आजादी के लिए लोगों से अपना खून कुर्बान करने की अपील की थी।

बलिदान के लिए प्रेरित करना और देश के प्रति त्याग की भावना रखना ही इस कविता का प्रमुख तत्व है। कविता का सबसे प्रमुख उद्देश्य यह बताना है कि अगर देश को आजाद कराना है, तो उसके लिए बातों से नहीं, बल्कि खून बहाने से ही काम चलेगा।

खून की कीमत समझाना: यह कविता दर्शाती है कि वह खून किसी काम का नहीं है, जो अपनी मातृभूमि की आजादी के काम न आ सके।

देशभक्ति की भावना का संचार कविता के अंतर्गत दिखाई देता है। यह कविता लोगों में राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण और स्वाभिमान की भावना भरती है, ताकि वे देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाएं।नेताजी के आह्वान का महत्व बताना कवि का मुख्य उद्देश्य है। कविता में उस ऐतिहासिक क्षण का वर्णन किया गया है, जब नेताजी ने लोगों से अपने खून से आजादी के परवाने पर हस्ताक्षर करने को कहा था। यह घटना लोगों में नया जोश भर देती है।

अमर शहीदों को श्रद्धांजलि भाव है। कविता में उन सभी गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

14**. झंडा गीत का मुख्य भाव**

झंडा गीत का मुख्य भाव राष्ट्रीय गौरव, एकता और देश के प्रति अदम्य प्रेम को व्यक्त करना है। इसे प्रसिद्ध कवि श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' ने लिखा था। यह गीत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लोगों में जोश और देशभक्ति की भावना भरने का एक महत्वपूर्ण साधन था।

झंडा गीत के मुख्य भाव निम्नलिखित हैं:

राष्ट्रीय गौरव गीत राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे की महिमा का गुणगान करता है। इसे 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' कहकर देश के सम्मान और प्रतिष्ठा को दर्शाया गया है।

स्वतंत्रता का संकल्प यह गीत भारतवासियों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। इसमें 'लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय' जैसी पंक्तियां दर्शाती हैं कि स्वतंत्रता हमारा अटल लक्ष्य है।

एकता और बलिदान से यह गीत सभी भारतीयों को एकजुट होकर अपने देश और धर्म की रक्षा के लिए बलिदान देने का आह्वान करता है। यह सिखाता है कि ध्वज के सम्मान के लिए जान भी कुर्बान की जा सकती है।

साहस और निर्भीकता: गीत में यह भाव व्यक्त होता है कि भारतीय लोग अपने झंडे के नीचे निर्भीक खड़े हैं और उनके मन में शत्रुओं का कोई भय नहीं है।

शक्ति और प्रेम,तिरंगा झंडा शक्ति और प्रेम का प्रतीक है। यह गीत बताता है कि झंडा शक्ति प्रदान करने वाला है और प्रेम का अमृत बरसाने वाला है।

मातृभूमि से जुड़ाव: गीत में झंडे को मातृभूमि का तन-मन कहा गया है, जो देश के प्रति गहरे प्रेम और सम्मान को दर्शाता है।

कुल मिलाकर, झंडा गीत का उद्देश्य भारतीय ध्वज के प्रति सम्मान और उसके माध्यम से देश के प्रति प्रेम, समर्पण और एकता की भावना को दृढ़ करना है।

15. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी कविता :

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के निर्माण में व्यक्ति की यही संधर्षशील चेतना कार्यरत है। गुलामी के बन्धन को तोड़कर उन्मुक्त होने की कामना ने 1857 में क्रान्ति की नयी जमीन को खोज निकाला। इस क्रान्ति महायज्ञ में प्रथम आहुति देने वाले बलिया जनपद के हलद्वीप गाँव के ब्राह्मण कुलोत्पन्न पंडित मंगल पाण्डेय ने 8 अप्रैल 1857 को अपनी शहादत से स्वतन्त्रता का प्रथम दीप जलाया।

आजादी को लेकर देश में व्याप्त उथल-पुथल को हिन्दी कवियों ने अपनी कविता का विषय बनाकर साहित्य के क्षेत्र में दोहरे दायित्व का निर्वहन किया। स्वदेश व स्वधर्म की रक्षा के लिए कवि व साहित्यकार एक ओर तो राष्ट्रीय भावों को अपनी कविता का विषय बना रहे थे वही दूसरी ओर राष्ट्रीय चेतना को हवा दे रहे थे। कवि व साहित्यकार अपनी उर्वर प्रज्ञा भूमि के कारण युगीन समस्याओं के प्रति अधिक सावधान व संवेदनशील रहता है। स्वतन्त्रता आंदोलन के आरम्भ से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक भिन्न-भिन्न चरणों में राष्ट्रीय भावनाओ से ओत-प्रोत कविताओं की कोख में स्वातन्त्र्य चेतना का विकास होता रहा। 'विप्लव गान' शीर्षक कविता में कवि की क्रान्तिकामना मूर्तिमान हो उठी है।

''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाये
एक हिलोर इधर से आये,
एक हिलोर उधर को जाये'

भारतेन्दु युग का साहित्य अंग्रेजी शासन के विरूद्ध हिन्दुस्तान की संगठित राष्ट्रभावना का प्रथम आह्वाहन था। यही से राष्ट्रीयता का जयनाद शुरू हुआ। जिसके फलस्वरूप द्विवेदी युग ने अपने प्रौढ़तम स्वरूप के साथ नवीन आयामों और दिशाओं की ओर प्रस्थान किया। भारतेन्दु की 'भारत दुर्दशा' प्रेमघन की आनन्द अरूणोदय, देश दशा, राधाकृष्ण दास की भारत बारहमासा के साथ राजनीतिक चेतना की धार तेज हुई। द्विवेदी युग में कविवर 'शंकर' ने शंकर सरोज, शंकर सर्वस्व, गर्भरण्डारहस्य के अर्न्तगत बलिदान गान में 'प्राणों का बलिदान देष की वेदी पर करना होगा' के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए क्रान्ति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी। 'बज्रनाद से व्योम जगा दे देव और कुछ लाग लगा दे' के ओजस्वी हुंकार द्वारा भारत भारतीकार मैथिलीषरण गुप्त ने स्वदेश-संगीत व सर्वश्रेष्ठ

सशक्त रचना भारत-भारती में ऋषिभूमि भारतवर्ष के अतीत के गौरवगान के साथ में वर्तमान पर क्षोभ प्रकट किया है। छायावादी कवियों ने राष्ट्रीयता के रागात्मक स्वरूप को ही प्रमुखता दी और उसी की परिधि में अतीत के सुन्दर और प्रेरक देशप्रेम सम्बन्धी मधुरगीतों व कविताओं की सृष्टि की । निराला की 'वर दे वीणा वादिनी', 'भारती जय विजय करे', 'जागो फिर एकबार', 'शिवाजी का पत्र', प्रसाद की 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' चन्द्रगुप्त नाटक में आया 'हिमाद्रि तुंगश्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती' आदि कविताओं में कवियों ने हृदय के स्तर पर अपनी प्रशस्त राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति की है।

हिन्दी की राष्ट्रीय काव्यधारा के समस्त कवियों ने अपने काव्य में देशप्रेम व स्वतन्त्रता की उत्कट भावना की अभिव्यक्ति दी है। राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रणेता के रूप में माखन लाल चतुर्वेदी की हिमकिरीटनी, हिमतरंगिनी, माता, युगचरण, समर्पण आदि के काव्यकृतियों के माध्यम से उनकी राष्ट्रीय भावछाया से अवगत हुआ जा सकता है। चतुर्वेदी जी ने भारत को पूर्ण स्वतन्त्र कर जनतन्त्रात्मक पद्धति की स्थापना का आहवाहन किया। गुप्त जी के बाद स्वातन्त्र्य श्रृखला की अगली कड़ी के रूप में माखन लाल चतुर्वेदी का अविस्मृत नाम न केवल राष्ट्रीय गौरव की याद दिलाता है अपितु संघर्ष की प्रबल प्रेरणा भी देता है। जेल की हथकड़ी आभूषण बन उनके जीवन को अलंकृत करती है।

इस प्रकार हम देखते है कि, स्वतन्त्रता आंदोलन के उत्तरोत्तर विकास के साथ हिन्दी कविता और कवियों के राष्ट्रीय रिश्ते मजबूत हुए। राजनीतिक घटनाक्रम में कवियों के तेवर बदलते रहे और कविता की धार भी तेज होती गई। आंदोलन के प्रारम्भ से लेकर स्वतन्त्रता प्राप्ति तक हिन्दी काव्य संघर्षो से जूझता रहा। स्वाधीनता के पश्चात राष्ट्रीय कविता के इतिहास का एक नया युग प्रारम्भ हुआ। नये निर्माण के स्वर और भविष्य के प्रति मंगलमय कल्पना उनके काव्य का विषय बन गया। फिर भी स्वतन्त्रता यज्ञ में उनके इस अवदान और बलिदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता। भारत का ऐतिहासिक क्षितिज उनकी कीर्ति किरण से सदा आलोकित रहेगा और उनकी कविताए राष्ट्रीय आस्मिता की धरोहर बनकर नयी पीढ़ी को अपने गौरव गीत के ओजस्वी स्वर सुनाती रहेगीं।

प्रश्नावली

1. **प्र राष्ट्रीय चेतना का अर्थ स्वरूप महत्व को विशद कीजिए।**

राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी है, जहाँ राष्ट्र के प्रति प्रेम, गौरवशाली अतीत और पराधीनता के प्रति विद्रोह जैसे भावों ने हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। यह चेतना भारतेन्दु युग से शुरू होकर मैथिलीशरण गुप्त, निराला, और दिनकर जैसे कवियों के माध्यम से देशवासियों को एकता, आत्म-बलिदान और क्रांति के लिए प्रेरित करती है।

राष्ट्र की अवधारणा

१)लोगों का समूह: राष्ट्र एक ऐसा समूह है जो एक ही वंश, परंपरा, संस्कृति और भाषा से जुड़ा होता है।

२)सांस्कृतिक एकता: राष्ट्र की पहचान उसकी सांस्कृतिक एकता से होती है, जहाँ लोग अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं को साझा करते हैं।

३)सामूहिक भावना: राष्ट्र के भीतर लोगों में भाईचारे और प्रेम की भावना होती है, जो उन्हें एक-दूसरे से जोड़ती है।

४)एक इकाई के रूप में: राष्ट्र उस लोगों के समूह को संदर्भित करता है जो एक ही देश या भूभाग पर निवास करते हैं।

राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप

१)सामूहिक भावना: यह राष्ट्र के नागरिकों की वह समग्र सोच और अनुभूति है जो राष्ट्र के प्रति प्रेम और गौरव का भाव पैदा करती है।

२)अस्मिता की रक्षा: राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र की पहचान और उसकी अस्मिता को सुरक्षित रखने की प्रेरणा देती है।

३)गौरव गान: इसमें राष्ट्र के गौरव और उसके अतीत के प्रति अनुराग शामिल होता है।

४)एकीकरण का प्रतीक: राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र को मजबूत बनाती है और नागरिकों को एकता के सूत्र में पिरोती है।

५)आंदोलनों का आधार: स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय चेतना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जहाँ साहित्यकारों और समाज सुधारकों ने लोगों में राष्ट्रवाद की भावना भरी।

राष्ट्रीय चेतना का महत्व राष्ट्र को एकता, प्रगति और गौरव प्रदान करने में है। यह देश के प्रति प्रेम, सम्मान और त्याग की भावना जगाकर नागरिकों को राष्ट्र के विकास और उसकी अखंडता की रक्षा के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीय चेतना समाज के सभी वर्गों को जोड़ती है, स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाती है, और आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय चेतना का महत्व :

१)राष्ट्र की एकता: यह लोगों को एक साझा पहचान और मूल्यों से जोड़ती है, जिससे समाज में एकता और सामंजस्य बढ़ता है।

२)राष्ट्रीय सुरक्षा और गौरव: यह नागरिकों में राष्ट्र के सम्मान और गौरव की भावना पैदा करती है, जिससे वे देश की स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए तैयार रहते हैं।

३)सामाजिक प्रगति: राष्ट्रीय चेतना के माध्यम से लोग राष्ट्र के विकास में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक उन्नति होती है।

४)आत्म-त्याग और बलिदान की भावना: यह नागरिकों के मन में राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान की भावना को जागृत करती है, जो राष्ट्रीय आंदोलनों और विकास के लिए आवश्यक है।

५)राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान: राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित नागरिक देश की गरीबी, बेरोजगारी और अन्य सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के खिलाफ एकजुट होकर प्रयास करते हैं।

६)अतीत से जुड़ना और भविष्य का निर्माण: यह नागरिकों को अपने पूर्वजों के आदर्शों औरउपलब्धियों से जोड़ती है, जिससे उन्हें वर्तमान की समस्याओं का सामना करने और भविष्य को बेहतर बनाने की प्रेरणा मिलती है।

७)व्यक्तिगत जिम्मेदारी में वृद्धि: यह नागरिकों को राष्ट्र के प्रति उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी का अहसास कराती है, जिससे वे राष्ट्र के भविष्य निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

प्र 2. राष्ट्रीय चेतना का उदय और विकास कैसे हुआ स्पष्ट किजिए।

राष्ट्रीय चेतना का विकास राष्ट्र के प्रति लोगों में साझा पहचान, एकता और प्रेम की भावना के उदय से जुड़ा है, जो 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के अत्याचारों के प्रति प्रतिक्रिया में शुरू हुआ. आधुनिक शिक्षा का प्रसार, भारतीय संस्कृति और गौरव की पुनः खोज, राजनीतिक जागरूकता, और साहित्य व कला के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया गया।

राष्ट्रीय चेतना का उदय और विकास १९वीं सदी में ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ, जब भारतीय लोगों का बड़े पैमाने पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण हुआ, जिससे व्यापक असंतोष पैदा हुआ। शिक्षा के प्रसार, आधुनिक संचार माध्यमों (जैसे रेल, डाक, तार) के विकास और अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों को समझने से भारतीयों में एकता और पहचान की भावना बढ़ी, जो राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हुई।
इसके विकास के प्रमुख कारक रहे हैं.

राष्ट्रीय चेतना के विकास के कारण-

१)ब्रिटिश शासन का प्रभाव: अंग्रेजों द्वारा किए गए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक शोषण ने भारतीयों में व्यापक असंतोष पैदा किया, जिससे राष्ट्रीय चेतना का जन्म हुआ.

२)आधुनिक शिक्षा का प्रसार: पश्चिमी शिक्षा और शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भारतीयों ने आधुनिक विचारों, स्वतंत्रता संग्राम और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के बारे में जाना.

३)भारतीय संस्कृति की पुनः खोज: स्वामी विवेकानंद जैसे समाज सुधारकों ने भारतीय गौरव, संस्कृति और मानवतावादी मूल्यों पर बल दिया, जिससे लोगों में अपनी पहचान के प्रति गर्व की भावना जागी.

४)राष्ट्रीय आंदोलन और नेतृत्व: महात्मा गाँधी जैसे नेताओं के नेतृत्व में हुए स्वतंत्रता आंदोलनों ने लोगों को एक सूत्र में बाँधने और राष्ट्रीय हितों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी.

५)साहित्य और कला का योगदान: भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद और रामधारी सिंह दिनकर जैसे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव, देश की दुर्दशा और स्वतंत्रता की आवश्यकता को दर्शाया, जिससे जन-जागरण हुआ.

राष्ट्रीय चेतना के विकास की प्रक्रिया

६)जागरूकता का प्रसार: अंग्रेजों के अन्याय और शोषण के प्रति शिक्षित भारतीयों ने जागरूकता फैलाई.

७)एकजुटता का भाव: ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों के कारण विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग एकजुट हुए.

८)सांस्कृतिक पुनर्जागरण: सांस्कृतिक और सामाजिक सुधारकों ने भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार पर जोर दिया, जिसने राष्ट्रीय पहचान को मजबूत किया ।

९)स्वतंत्रता संग्राम: स्वतंत्रता आंदोलन ने राष्ट्रीय भावना को जन-जन तक पहुँचाया और देश की स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रेरित किया।

प्र **3. राष्ट्रीय चेतन मूलक हिंदी कविता की पृष्टभूमि क्या है? लिखिए।**

राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि हिन्दी कविता में मुख्य रूप से भारतेन्दु युग से ही विकसित होने लगी, जहाँ अतीत के गौरव और देशप्रेम को व्यक्त किया गया। बीसवीं सदी में, ब्रिटिश शासन के अन्याय और देश की एकता की आवश्यकता को गहराई से महसूस किए जाने पर यह भावना और तीव्र हुई। स्वतंत्रता आन्दोलन इसका प्रमुख आधार बना, जिसमें राष्ट्रकवि जैसे मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, और जयशंकर प्रसाद जैसे कवियों ने जन-जन में देशप्रेम और बलिदान की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रीय चेतना की पृष्ठभूमि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ी है, जहाँ राष्ट्र के प्रति प्रेम, गौरवशाली अतीत और पराधीनता के प्रति विद्रोह जैसे भावों ने हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना को जन्म दिया। यह चेतना भारतेन्दु युग से शुरू होकर मैथिलीशरण गुप्त, निराला, और दिनकर जैसे कवियों के माध्यम से देशवासियों को एकता, आत्म-बलिदान और क्रांति के लिए प्रेरित करती है।

विकास के मुख्य चरण और तत्व:

१)भारतेन्दु युग: राष्ट्रवाद की भावना की शुरुआत यहीं से हुई, जिसमें अतीत की महत्ता का गान और देशप्रेम को अभिव्यक्ति मिली। राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता ब्रिटिश शासन के दौरान देशवासियों ने देश की एकता की आवश्यकता को गहराई से समझा, जिससे राष्ट्रीय चेतना को बल मिला।

२)अतीत का गौरव: और वर्तमान की पीड़ा कवियों ने भारत के गौरवशाली अतीत का गुणगान किया और पराधीनता के कारण देश की दयनीय वर्तमान स्थिति का वर्णन किया, जिससे जनता में सुधार की भावना जागी।

३)स्वतंत्रता आन्दोलन :में हिन्दी कविता ने राष्ट्रीय चेतना को जगाने में सशक्त भूमिका निभाई। राष्ट्रकवियों की कविताओं ने आम जनता को स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

४)शोषित वर्ग और सामाजिक चेतना: निराला जैसे कवियों ने शोषित वर्ग (किसान और मजदूर) की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए आर्थिक क्रांति का आह्वान किया, जिससे समाज में जागरूकता आई।

राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी ने न केवल विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ा, बल्कि इसे पूरे राष्ट्र की भाषा के रूप में अपनाया गया, जिससे राष्ट्रीय चेतना को मजबूती मिली।

प्रमुख कवि और उनके योगदान:

१)मैथिलीशरण गुप्त: इन्होंने 'भारत भारती' जैसी रचनाओं से समाज के हर वर्ग में राष्ट्र चेतना को कूट-कूट कर भरने का प्रयास किया, जिससे सैकड़ों युवक स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए।
२)रामधारी सिंह दिनकर: ओजस्वी कवि दिनकर ने अपनी लेखनी से राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत साहित्य रचा। 'हुंकार' और 'कुरुक्षेत्र' जैसी कविताओं में उन्होंने क्रांति और जन-जागरण का शंखनाद किया।

३)जयशंकर प्रसाद: 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' जैसी कविताओं से प्रसाद ने सांस्कृतिक और राष्ट्रीय जागरण का उद्घोष किया और पलायनवादी होने के आरोपों का खंडन किया।

४) सुर्यकांत त्रिपाठी निराला: 'वर दे वीणा वादिनी' और 'बादल राग' जैसी कविताओं में उन्होंने 'भारत माता' के प्रति बलिदान की इच्छा व्यक्त की और शोषित वर्ग को जगाने का प्रयास किया।
हिंदी कविता में राष्ट्रीय चेतना का विकास एक ऐसी पृष्ठभूमि से हुआ जहाँ देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, और स्वदेश की मुक्ति के लिए संघर्ष ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह चेतना न केवल लेखकों को प्रेरित करती है, बल्कि पाठकों में राष्ट्रभक्ति और देशसेवा की भावना को भी जागृत करती है।

4. भारतेंदु हरिश्चंद्र जीवन परिचय:

भारतेंदु हरिशचंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 बनारस के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम 'हरिश्चंद्र' था और 'भारतेंदु' उनकी उपाधि थी।वे अत्यंत धनाढ्य परिवार से थे मगर साहित्य की सेवा और गरीबों के प्रति उदारता के कारण सबकुछ लुटा दिया। किसी को दु:खी और परेशान देखकर उसे तन के वस्त्र तक उतारकर दे देना भारतेंदु का सामान्य व्यवहार था। धनहीन होने पर उन्हें सबसे ज्यादा अफसोस इसी बात का होता था कि वह निर्धनों की सहायता नहीं कर पा रहे थे।भारतेंदु हरिशचंद्र का जन्म 9 सितंबर 1850 बनारस के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था. 6 जनवरी 1885 को उनका देहांत हो गया. उनका मूल नाम 'हरिश्चंद्र' था और 'भारतेंदु' उनकी उपाधि थी. वे अत्यंत धनाढ्य परिवार से थे मगर साहित्य की सेवा और गरीबों के प्रति उदारता के कारण सबकुछ लुटा दिया. किसी को दु:खी और परेशान देखकर उसे तन के वस्त्र तक उतारकर दे देना भारतेंदु का सामान्य व्यवहार था. धनहीन होने पर उन्हें सबसे ज्यादा अफसोस इसी बात का होता था कि वह निर्धनों की सहायता नहीं कर पा रहे थे.उनके पिता गोपाल चंद्र एक कवि थे। वह गिरधर

दास के नाम से कविता लिखा करते थे। भारतेन्दु जब 5 वर्ष के हुए तो मां का साया सर से उठ गया और जब 10 वर्ष के हुए तो पिता का भी निधन हो गया। भारतीय नवजागरण की मशाल थामने वाले भारतेंदु ने अपनी रचनाओं के ज़रिए ग़रीबी, ग़ुलामी और शोषण के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की। हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है।

सिर्फ़ पैंतीस वर्ष की उम्र पाने वाले भारतेंदु की अनेक विधाओं पर पकड़ थी। वे एक गद्यकार, कवि, नाटककार, व्यंग्यकार और पत्रकार थे। उन्होंने 'बाल विबोधिनी' पत्रिका, 'हरिश्चंद्र पत्रिका' और 'कविवचन सुधा' पत्रिकाओं का संपादन किया। भारतेन्दु ने सिर्फ 18 वर्ष की उम्र में 'कविवचनसुधा' पत्रिका निकाली, जिसमें उस वक्त के बड़े-बड़े विद्वानों की रचनाएं प्रकाशित होती थीं। हिंदी में नाटकों की शुरुआत भारतेन्दु हरिश्चंद्र से मानी जाती है। नाटक भारतेन्दु के समय से पहली भी लिखे जाते थे, लेकिन बाकायदा तौर पर खड़ी बोली में नाटक लिखकर भारतेन्दु ने हिंदी नाटकों को नया आयाम दिया। भारतेन्दु के नाटक लिखने की शुरुआत बांग्ला के विद्यासुंदर (1867) नाटक के अनुवाद से हुई।

साहित्यिक परिचय:

१)**काव्यकृतियां:**

भक्तसर्वस्व, प्रेममालिका ,कार्तिक स्नान वैशाख महात्म्य,प्रेम सरोवर,प्रेमाश्रुवर्षण ,जैन कुतूहल, प्रेम सतसई श्रृंगार,प्रेम माधुरी,प्रेम-तरंग ,उत्तरार्द्ध भक्तमाल प्रेम-प्रलाप,होली ,मधु मुकुल,राग-संग्रह ,वर्षा-विनोद,विनय प्रेम पचासा,फूलों का गुच्छा प्रेम फुलवारी,कृष्णचरित्र ,प्रातः स्मरण,उरेहना तन्मय लीला, दानलीला,रानी छद्म लीला,संस्कृत लावनी,बसंत,मुंह दिखावनी,उर्दू का स्यापा,प्रबोधिनी,नये ज़माने की मुकरियां इत्यादि।

2)**नाटक:**

प्रेमजोगिनी , भारत दुर्दशा, श्री चन्द्रावली विषस्य विषमौषधम् अंधेर नगरी ,नीलदेवी ,सती प्रताप ,
अनूदित नाट्य रचनाएँ
विद्यासुन्दर ,
पाखण्ड विडम्बन, 'प्रबोधचंद्रोदय
धनंजय विजय,
कर्पूर मंजरी
भारत जननी,
मुद्राराक्षस
दुर्लभ बंधु

3)निबंध संग्रह:

कालचक्र (जर्नल)
लेवी प्राण लेवी

भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
कश्मीर कुसुम
जातीय संगीत
संगीत सार
हिंदी भाषा
स्वर्ग में विचार सभाअद्‌भुत अपूर्व स्वप्न

4)यात्रा वृत्तान्त:
सरयूपार की यात्रा
लखनऊ
आत्मकथा
एक कहानी- कुछ आपबीती, कुछ जगबीती

5)उपन्यास
पूर्णप्रकाश चन्द्रप्रभा

प्र5. भारत दुर्दशा कविता में कविने भारत की दुर्दशा का चित्रण कैसे किया है?

यह कविता भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक 'भारत-दुर्दशा' से ली गयी है। इस कविता का मुख्य विषय देश प्रेम है और इसमें भारतेन्दु समस्त भारतवासियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि इस समय, अंग्रेज़ों के राज में, भारत की वह दुर्दशा हो चुकी है जो मुझसे देखी नहीं जाती और जिस पर हम सभी भारतीयों को चिंता और चिंतन करना चाहिए।

१) तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण: भारतेन्दु ने भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का उल्लेख करते हुए उसकी आज के वर्तमान से तुलना की है और कहा है कि हम सभी का इस समय यही कर्त्तव्य है कि अपने वर्तमान को भी अपने इतिहास की तरह महान बनाएँ।

भारतेन्दु ने अशिक्षा, धार्मिक भेदभाव, अकर्मण्यता की ओर इशारा करके कहा है कि अंग्रेज़ों के औपनिवेशिक शासन में भारत गरीब होता जा रहा है और इस देश में महंगाई, अकाल और बीमारियों ने पैर पसार लिए हैं। भारत की इस दुर्दशा को भारतीयों के सामने रखकर उनकी यही अपेक्षा है कि सब में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हो और सभी इस दशा को सुधारने में अपना योगदान दें! कविता का प्रमुख उद्देश्य है, तत्कालीन भारत की दुर्दशा को दिखाना एवं दुर्दशा के कारणों को कम कर दुर्दशा करने वालों का यथार्थ चित्र उपस्थित करना। व्यंग्य इस कविता का प्रधान गुण है।

२) ब्रिटिश शासन का विरोध:

समाज व्यवस्था, धर्म व्यवस्था, सरकारी व्यवस्था, देशवासियों तथा समाज सुधारकों सभी पर तीखे व्यंग्य दिखाई देते हैं इसमें भारतेंदु जी की राज भक्ति तथा भारत का धन विदेश जाने की चिंता साफ-साफ नजर आती है

'अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पैधन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी'

३) सामाजिक कृतियों पर प्रहार:

भारतेंदु ने भारत दुर्दशा का कारण सामाजिक विकृतियों को माना। लोगों में व्याप्त हालत व रूढ़िवादी सोच को माना है। लोगों के निराशावादी ,लक्ष्यहीन ,व पत्तनों उन्मुखी सोच ,को भारतेंदु ने भारत दुर्दशा का कारण माना व समाज में जो आर्थिक संरचना धार्मिक संरचना है वह समाज की नींव को खोखली कर रही है। आपस में भेदभाव व जाति का वर्गीकरण आपसी मनमुटाव स्वार्थ परखता ,लोग भारत की दुर्दशा का कारण है। भारत सदैव धार्मिक व अंधविश्वास की रूढ़ियों व परंपरा मान्यताओं से ग्रसित रहा है ,जिसके कारण एक धर्म दूसरे धर्म को नीचा दिखाने के लिए आपस में लड़ता रहा। जिसके कारण विदेशियों का भारत में आगमन हुआ और सारे विनाश का कारण बना।

” हरि वैदिक जैन डुबाई पुस्तक सारी ।
करी कलह बुलाई जवन सैन पुनि भारी।।”

४) जागृति और सुधार:

समाज का एक बड़ा तबका आलसी ,अशिक्षित वह कमजोर का है जो अपनी पुरानी सड़ी-गली मान्यता को ढो रहा है। वह अपने तक ही केंद्रित है दूसरा वर्ग इस समाज का निरंतर शोषण करता रहा है। किंतु यह उस परंपरा का विरोध नहीं करते वह निराशावादी वह भाग्यवादी होते जा रहे हैं। यही कारण है कि कुमति व आलस का वर्चस्व समाज में बढ़ते जा रहा है।

५) देश भक्ति की भावना का संचार:

इस कविता का उद्देश्य ही भारतवासियों में देशभक्ति की भावना जागृत करना है ताकि वह अपनी मातृभूमि के प्रति जागरूक हो और इसे बेहतर बनाने के लिए एकजुट होकर प्रयास करें हर भारतवासी के मन में देशभक्ति की लहर निर्माण हो।

भारत दुर्दशा सामाजिक राजनीतिक भाव को निर्माण करने वाली कविता है। जिसका उद्देश्य भारत की दुर्दशा का चित्रण एवं उसके कर्म को उजागर करना है देशवासियों को इसी राजनीतिक सुधार के लिए प्रेरित करना और हर तरफ देशभक्ति की लहर निर्माण करना यही भाव इस कविता के माध्यम से उजागर होता है कभी भारतेंदु जी ने इस कविता के अंतर्गतन भारतीयों को एकजुट होकर अपने देश के लिए अपने देश की स्वतंत्रता के लिए और देशवासियों की सुख शांति के लिए अंग्रेज लोगों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देते हैं ।

प्रश्न 6. जन्मभूमि कविता की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए ।

कविवर अयोध्या सिंह उपध्याय 'हरिऔध' जी द्वारा रचित 'जन्मभूमि' कविता राष्ट्रीय चेतना / देश भक्ति भाव से ओतप्रोत है। यहाँ कवि का अपनी मातृभूमि के प्रति अतिशय प्रेमभाव देखने को मिलता है। कवि अपनी मातृभूमि को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

जन्मभूमि कविता का मुख्य उद्देश्य भारत के प्रति असीम प्रेम और गौरव की भावना को जगाना है। कवि ने इस कविता के माध्यम से भारत की प्राकृतिक सुंदरता, महानता और गौरव का वर्णन किया है, और पाठकों में देशभक्ति की भावना को प्रेरित करने का प्रयास किया है। कभी नहीं राष्ट्रीय भाव को इस प्रकार से अपनी कविता के अंतर्गत जागृत किया है-

१)मातृभूमि के प्रति प्रेम:

कविता में कवि ने अपनी जन्मभूमि, भारत के प्रति गहरा प्रेम और सम्मान व्यक्त किया है।

२)प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन:

कवि ने भारत की प्राकृतिक सुंदरता, जैसे हिमालय, नदियाँ, और हरियाली का वर्णन किया है, जो पाठकों को अपनी मातृभूमि से और अधिक जोड़ने में मदद करता है।

३)महानता और गौरव का गुणगान:

कविता में भारत के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और परंपराओं का उल्लेख है, जो पाठकों में राष्ट्रीय गौरव की भावना को जागृत करता है।

४)देशभक्ति की प्रेरणा:

कवि ने अपनी कविता के माध्यम से पाठकों को अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित होने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित किया है।

५)कर्तव्य पालन का संदेश:

कविता में यह भी संदेश दिया गया है कि अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्यों का पालन करना प्रत्येक नागरिक का पवित्र कर्तव्य है।

इसलिए, जन्मभूमि कविता एक देशभक्ति गीत है जो भारत के प्रति प्रेम, सम्मान, और गौरव की भावना को बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली माध्यम है।

7. मैथिलीशरण गुप्त - जीवन परिचय:

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म ३ अगस्त १८८६ में पिता सेठ रामचरण कनकने और माता काशी बाई की तीसरी संतान के रूप में उत्तर प्रदेश में झांसी के पास चिरगांव में हुआ। माता और पिता दोनों ही वैष्णव थे। विद्यालय में खेलकूद में अधिक ध्यान देने के कारण पढ़ाई अधूरी ही रह गयी। रामस्वरूप शास्त्री, दुर्गादत्त पंत, आदि ने उन्हें विद्यालय में पढ़ाया। घर में ही हिन्दी, बंगला, संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। मुंशी अजमेरी जी ने उनका मार्गदर्शन किया। १२ वर्ष की अवस्था में ब्रजभाषा में

कनकलता नाम से कविता रचना आरम्भ किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में भी आये। उनकी कवितायें खड़ी बोली में मासिक "सरस्वती" में प्रकाशित होना प्रारम्भ हो गई।

साहित्यिक परिचय:

महाकाव्य- साकेत ,यशोधरा ।

खण्डकाव्य- जयद्रथ वध भारत-भारती पंचवटी , द्वापर, सिद्धराज, नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान ,कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल ,जय भारत 1952, युद्ध, झंकार 1929 , पृथ्वीपुत्र, वक संहार,शकुंतला, विश्व वेदना, राजा प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला[ग], प्रदक्षिणा, दिवोदास भूमि-भाग आदि।

नाटक - रंग में भंग , राजा-प्रजा, वन वैभव , विकट भट , विरहिणी , वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री , स्वदेश संगीत, हिड़िम्बा , हिन्दू, चंद्रहास

मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली (मौलिक तथा अनूदित समग्र कृतियों का संकलन 12 खण्डों में, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली से प्रकाशित है।

फुटकर रचनाएँ- केशों की कथा, स्वर्गसहोदर,

अनूदित

संस्कृत- स्वप्नवासवदत्ता, प्रतिमा, अभिषेक, अविमारक , रत्नावली

बंगाली- मेघनाथ वध, विहरिणी वज्रांगना , पलासी का युद्ध ।

फारसी- रुबाइयात उमर खय्याम

काविताओं का संग्रह - उच्छवास

पत्रों का संग्रह - पत्रावली

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य की विशेषताएँ इस प्रकार उल्लेखित की जा सकती हैं -

(१) राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता
(२) गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता
(३) पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता
(४) नारी मात्र को विशेष महत्व
(५) प्रबन्ध और मुक्तक दोनों में लेखन
(६) शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग
(७) पतिवियुक्ता नारी का वर्णन।

प्र 8 मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'आर्य' - अतीत के गौरव से भविष्य की ओर"चेतना की पुकार करती है? स्पष्ट कीजिए।

भारतवर्ष एक ऐसा देश है जिसकी आत्मा उसकी संस्कृति, मूल्य-परंपराएं और नैतिक आदर्शों में बसती है। यह मात्र एक भौगोलिक इकाई नहीं, अपितु एक चेतन, चिरंतन और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध जीवनशैली का प्रतीक है। भारतीय काव्यधारा में मैथिलीशरण गुप्त का नाम विशेष सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने कविता को केवल सौंदर्य की साधना न मानते हुए उसे सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय आत्मा के जागरण का माध्यम बनाया। उनकी कविता 'आर्य' एक ऐसी कालजयी रचना है, जो केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान के लिए दिशा और भविष्य के लिए प्रेरणा है।

१) अतीत का गौरव: गुप्त जी की यह रचना एक प्रश्न के साथ प्रारंभ होती है– "हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।" यह प्रश्न केवल आत्मावलोकन नहीं है, बल्कि एक पूरी सभ्यता की आत्मा की पुकार है। यह एक सभ्य, शिक्षित, संस्कारी और त्यागमयी समाज के आत्ममंथन की प्रक्रिया है, जहाँ अपने अतीत की गरिमा के दर्शन होते हैं और वर्तमान की गिरावट का बोध होता है।

भारत भूमि को 'पुण्य लीला स्थल' कहा गया है–यह उस भूखंड की पहचान है जहाँ न केवल ऋषि-मुनियों ने तप किया, अपितु जहाँ ज्ञान, करुणा, सेवा और सहिष्णुता की सरिताएं बहीं। यह वह भूमि है जहाँ हिमालय जैसे अचल संकल्प और गंगा जैसी पवित्र भावना ने संस्कृति को स्वर दिया। इसी धरती पर वे लोग जन्मे जिन्हें 'आर्य' कहा गया–न केवल जन्म से, बल्कि कर्म, विचार और चरित्र से। गुप्त जी की परिभाषा में आर्य वह है जो अपने जीवन को परोपकार, निःस्वार्थ सेवा और सत्य के लिए समर्पित करता है।

कविता में आर्य जीवन के उन गुणों को स्मरण कराया गया है जो आज विलुप्तप्राय हैं। वे अपने लिए नहीं, समाज के लिए जीते थे। उनकी दृष्टि केवल अपने परिवार, गांव या राष्ट्र तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे वैश्विक मानवता के लिए कर्मशील थे। वे न मोह में बंधे थे, न लोभ से संचालित। वे ज्ञान के साधक, त्याग के पथिक और सेवा के पुजारी थे। उन्होंने संसार को वेद, उपनिषद, योग और धर्म के दर्शन दिए। उनका जीवन सादा, किंतु विचार अत्यंत ऊँचे थे। उनका मन सदा प्रभु के भजन में रमा रहता, कर्म में निष्ठा होती और वचन में मधुरता।

२) वर्तमान स्थिति: मैथिलीशरण गुप्त का यह भाव किसी इतिहासकार का बयान नहीं, बल्कि एक ऋषि-दृष्टि है, जो अपने राष्ट्र को उसकी आत्मा से जोड़ने का प्रयास करता है। वे किसी जातीय श्रेष्ठता की बात नहीं करते, बल्कि उस सांस्कृतिक श्रेष्ठता की ओर संकेत करते हैं जो मानव मात्र के कल्याण की बात करती है। आज जब समाज स्वयं को उपभोग, प्रदर्शन और आत्मकेन्द्रिकता की ओर मोड़ रहा है, तब यह कविता हमें याद दिलाती है कि हम एक ऐसे समाज के वंशज हैं जिसने संसार को देना सीखा है, लेना नहीं।

हम कोन थे, क्या हो गये है,
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारे आज मिलकर,
यह समस्याएं सभी।

कविता यह स्वीकार करती है कि वर्तमान में हम उस आदर्श से काफी दूर जा चुके हैं। आज की संतानें उस संस्कृति की संतति होते हुए भी उस चेतना से कट चुकी हैं। हम आज की समस्याओं में उलझे हुए, अपनी जड़ों से दूर और आत्मविस्मृति की स्थिति में हैं। परंतु गुप्त जी निराशा नहीं फैलाते। वे कहते हैं कि अतीत के कुछ चिह्न अभी भी जीवित हैं। हमारी मिट्टी, हमारी स्मृति, हमारी भाषा, हमारी परंपराएं और कुछ आदर्श आज भी विद्यमान हैं, जो हमें पुनः उस मार्ग की ओर ले जा सकते हैं।

३)कवि का संदेश :कविता की पंक्तियाँ हमें जीवन के उस स्वरूप की ओर लौटने की प्रेरणा देती हैं जहाँ जीवन केवल भोग नहीं, बल्कि योग और सेवा है। आर्य जीवन त्याग और समर्पण का जीवन है–वह जीवन जो दूसरों के लिए जिया जाए। जब वह कहता है -
"वे मोह बंधन मुक्त थे,
स्वच्छंद थे स्वाधीन थे,"
तो वह हमें केवल आज़ादी की बात नहीं करता, बल्कि आत्म-नियंत्रण और आत्मशक्ति की बात करता है। समाज में जब मोह, लोभ, स्वार्थ और अहंकार का बोलबाला हो, तब यह कविता एक मौन घोषणा है कि भारतीय आत्मा अभी मरी नहीं है। उसकी चेतना अब भी जीवित है, बस उसे जगाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार अंधेरे में दीपक का महत्व बढ़ जाता है, उसी प्रकार इन पंक्तियों का महत्व भी आज के संदर्भ में और अधिक हो जाता है। 'आर्य' कविता कोई काल्पनिक स्वर्ग नहीं रचती, बल्कि यह हमें एक ऐसी सामाजिक संरचना का दर्शन कराती है जिसमें धर्म और सेवा, ज्ञान और विवेक, संयम और करुणा, त्याग और आत्मबोध के साथ जीवन जिया जाता है। गुप्त जी की यह कविता राष्ट्र की आत्मा की भाषा बोलती है। वे न किसी विशेष कालखंड की बात करते हैं, न किसी वर्ग की–वे मानवता के उस रूप की बात करते हैं, जो भारत की आत्मा में सदियों से रचा-बसा है।

४) पतन की ओर : आज जब विश्व अपनी सांस्कृतिक अस्मिताओं की खोज में लगा है, भारत को चाहिए कि वह अपने अतीत की ओर देखे–न गौरव गान के लिए, न केवल स्मरण के लिए, बल्कि प्रेरणा के लिए। हमारी जड़ें हमारी दिशा तय करती हैं। जो समाज अपनी संस्कृति से कट जाता है, वह दिशाहीन हो जाता है।

कविता के अंत में ब्रह्मानंद की नदी का बिंब आता है और आर्यों को उसके मनोहर मीन कहा गया है। यह प्रतीक गहरा है। यह केवल आध्यात्मिक समर्पण का नहीं, बल्कि उस जीवन की सहजता का प्रतीक है जहाँ व्यक्ति ब्रह्मानंद में रमण करता है। जहाँ जीवन तनाव, प्रतिस्पर्धा और भौतिकता से ऊपर उठ कर शांति, संतुलन और आनंद में जीता है।इस कविता के माध्यम से गुप्त जी न केवल अतीत का गुणगान कर रहे हैं, बल्कि वर्तमान को उसकी विस्मृति से बाहर लाने का कार्य भी कर रहे हैं। वे साहित्यकार के रूप में नहीं, समाज के मार्गदर्शक के रूप में सामने आते हैं। उनकी कविता विचार नहीं, चेतना है। वह केवल पठन के लिए नहीं, बल्कि आत्ममंथन और आत्मसाक्षात्कार के लिए है।

यदि आज का भारत इस चेतना को आत्मसात कर सके, तो वह केवल आर्थिक और तकनीकी रूप से ही नहीं, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से भी विश्व का नेतृत्व कर सकता है। 'आर्य' कविता इस बात

की गवाही देती है कि भारतीयता केवल एक अतीत नहीं, बल्कि भविष्य की भी राह है–बशर्ते हम उसे पहचानें।

आज जब मूल्य संकट, सांस्कृतिक विघटन और सामाजिक विघटन की स्थिति है, तो गुप्त जी की यह कविता एक प्रकाशस्तंभ बनकर खड़ी है। यह हमें पुकारती है, याद दिलाती है, और पुनः जीवंत होने को कहती है। यह केवल कविता नहीं, एक मिशन है–जिसे समझना, आत्मसात करना और आगे बढ़ाना हम सबकी जिम्मेदारी है।

प्र 9. जागो फिर एक बार कविता के अंतर्गत कवि ने भारतीयों को जागते रहने का संदेश कैसे दिया है?

जागो फिर एक बार' कविता के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी है। निराला जी की यह कविता 'परिमल' कविता संग्रह में संकलित है। जिसका प्रकाशन 1930 में हुआ था। इस कविता में कवि ने भारत के अतीत का गौरवमय चित्रण किया है। इसी संदर्भ में कवि भारतियों को जागते रहने का संदेश देते हुए कहते हैं

१)वीरता और गौरव: कविता में कवि भारत के अतीत की गौरव-गाथा को स्मरण करते हुए देशवासियों को नई उत्साह और ओजस्विता को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। वे ऐतिहासिक परिवेश की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि भारत का अतीत बहुत ही गौरवशाली था। हमारे यहाँ के वीर युद्ध-क्षेत्र में प्राणों की बाजी लगाकर अमरत्व को प्राप्त हो जाते थे। ऐसे ही वीर योद्धाओं की गौरव गाथा का गुणगान करते हैं। यहाँ के समुंद्र के विशाल नदियों और उनके तटों पर रहने वाले लोगों अथार्त सिन्धु सभ्यता के लोगों ने भी अनेक बार गाया था। इसलिए जब-जब विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत पर आक्रमण किया है। तब-तब यहाँ के वीरों ने चतुरंगी सेना के साथ उनका डटकर मुकाबला किया। इसी तरह जब विदेशियों ने आक्रमण किया तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने यह घोषणा किया था कि- "सवा-सवा लाख पर एक को चढ़ाऊंगा।" अथार्त "जब तक सवा-सवा लाख शत्रुओं पर अपने एक वीर को समर्पित नहीं करूंगा तब-तक मैं अपने नाम को सार्थक नहीं मानूंगा।" कवि कहते है कि वीर लोग इस राग को सुनकर और भी उत्साह से झूमने लगते है। इस राग से वीर योद्धाओं में दो गुणा शक्ति बढ़ जाता था। अथार्त शत्रु उनपर विजय नहीं पा सकते थे। गुरु गोबिंद सिंह और उनके योद्धा बारह महीनों तक खून की होली खेलते थे। आज भी गुरु गोबिंद सिंह जैसे शेर है किन्तु आज उन शेरों के माँद में शियार घूस गया है इन्हें मारने के लिए। हे! भारतीय वीरों अब तुम जागों और सतर्कता के साथ उनसे सामना करों। उसका दमन करों।मातृभूमि के खातिर बलिदान होने वाले सिक्ख वीरों की प्रशंसा करते हुए कहते है कि मुगलों के विरुद्ध गुरु गोबिंदसिंह जी ने जब 'सत्य श्रीअकाल' का घोस करते हुए युद्ध क्षेत्र में उतरे तब उनके ललाट पर क्रोध रूपी आग की ज्वाला प्रज्वलित हो रही थी। उस धधकती हुई आग में काल भस्म हो गया था। तीनों गुण अथार्त सतोगुण, रजोगुण और तमोंगुण तथा दैविक, दैहिक और भौतिक ये तीनों ताप भी भस्म हो गए थे। हे! भारतवासियों जिसके परिणामस्वरुप तुम शत्रुओं से

अभय हो गए थे। उस समय तुम मृत्यु को जितने वाले देव शिवाजी के सामान बन गए थे। तुम योग साधना के द्वारा सातों आवरणों को भेदकर तथा समस्त शोक से रहित होकर उस उच्चतम स्था के अधिकारी बन गए थे जहाँ पर सिद्ध योगी लोग सांसारिक कष्टों से मुक्त होकर, सहस्त्र-दल कमल पर आसन लगाकर परमानंद में लिन हो जाते हैं। इसलिए तुम फिर से एक बार जागकर उसी शौर्य का प्रदर्शन करो।

२) जागृति:कवि ने वीरों को वसुंधरा की दुहाई देकर देशभक्ति का ओजस्वी स्वर व्यक्त किया है। कवि कहते है कि इस तरह की शक्ति और साहस किस्मे है जो शेरनी के गोद से उसके बच्चे को बलपूर्वक छीन सके क्या शेरनी जीते-जी अपने बच्चे को छीनने देगी और वह छुओ बैठी रहेगी? अथार्त सिंहनी ऐसा तब तक नहीं होने देगी जबतक उसके प्राण रहेंगे कवं भेद ही ऐसी होती है जो अपने बच्चे को गोद से छीने जाने के बाद चुप रहती है वह दुर्बल होने के कारण अपने बच्चे के छीने जाने के बाद भी टकटकी लगाकर देखती रहती है वह अपने संतान के छीने जाने के बाद जीवन भर दुखी होकर आँसू बहाती रहती है अपने व्यथित जीवन पर रोटी रहती है। क्या शक्तिशाली प्राणी इस तरह के अत्याचार को सहकर जीवित रह सकता है? अथार्त नहीं वह अत्याचार सहने से की अपेक्षा मर जाना अच्छा समझेगा। आते तो यही है कि शक्तिशाली व्यक्ति ही जीवित रहता है। यह उक्ति पाश्चात चिंतन की दें नहीं है, यह तो गीता का उपदेश है अतः गीताके कर्मयोग के उपदेश में बार-बार स्मरण करो जागो और जागकर तुम अपने शक्तिशाली स्वरुप को पहचानों।

पशु नहीं, वीर तुम, समर-शूर, क्रूर नहीं .....
पड़ रज भर भी नहीं पूरा यह विश्व-भार।
जागो फिर एक बार।

३) शक्ति का स्मरण: कवी ने भारतवासियों को उनकी शक्ति का स्मरण कराते हुए कहते है कि तुम पशु नहीं हो तुम युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले वीर योद्धा हो, तुम क्रूर आचरण करने वाले नहीं हो तुम तो न्याय के लिए वीरता का प्रदर्शन करने वाले हो तुम कालरुपी चक्र में दबे हुए राजकुमार हो तथा युद्धक्षेत्र के श्रेष्ठ योद्धा हो परन्तु तुम इस तरह क्यों हो? लोकाचार तो माया के बंधन है और तुम हमेशा ही इस सबसे मुक्त रहे हो। जिस प्रकार बाधाओं से अथार्त यति, विराम, लघु और गुरु आदि नियमों के बंधन से मुक्त रहने वाले अथार्त मुक्त छन्द कविता भावपूर्ण लगती है वैसे ही तुम सदा संसारिकता से मुक्त रहकर सच्चिताऩ्द अथार्त परंब्रहम के निमग्न रहते हो। इस देश के कण-कण में अणु-परमाणुओं में ऋषियों के महामंत्र व्याप्त हैं जो मानव के सुखद एवं मुक्ति प्रदान करने वाले हैं इसलिए हे! भारतवासियों तुम सदा से ही महान रहे हो तुम्हारे मन में जो दीनता, कायरता की भावना तथा काम वासनाओं की आसक्ति के भाव उत्पन्न होते रहें है वे सभी नष्ट होने वाले है। अतः तुम ब्रह्मस्वरूप हो यह समस्त विश्व तुम्हारे चरणों की धूल से भी तुच्छ है। आशय यह है कि तुम परमात्मा की सृष्टि के सर्वाधिक सबसे शक्तिशाली प्राणी हो अतएव तुम अपनी शक्ति को पहचानों और फिर से जाग जाओ।
४) आत्मविश्वास: भारतवासियों में आत्मविश्वास से जागने का प्रयास करती है ताकि वे अपनी शक्ति को पहचान सके और बुलाने से मुक्त हो सके। यह कविता राष्ट्रवादी विचारधारा और भारतीय जनता को जगाने की कथा उनकी इच्छा को दर्शाती है।

'जागो फिर एक बार' कविता एक संबोधन गीत है। कवि अपने इस गीत के द्वारा भारतीय नव युवकों को संबोधित करके उनके पराक्रम को जगाने का प्रयास कर रहे हैं। इस कविता में परतंत्रता से निराश भविष्य को लेकर कुछ चिंतित और सूक्त भारतीय जनता को उसके गौरव में अधिक का स्मरण दिलाने का प्रयास कवि ने किया है यही नहीं जग जाने का आह्वान भी इस कविता के माध्यम से कवि ने किया है पराधीनता कल में अनेक कर्म से भारतीयों का मानस सोया हुआ था आने से प्रमोद से ग्रस्त तथा कायरता दीनता से भारतवासी आक्रांत थे उसे समय वह अपनी कमजोरी को जनता हुआ भी उन्हें दूर करने में असमर्थ था इस वास्तविकता का ध्यान रखकर प्रस्तुत कविता में कवि ने कायरता का विरोध करके मानव आत्माओं की अनुभूति पत्र एकता का प्रतिपादन करते हुए भारतीयों में आई दिन तक कायरता काम करता त्याग कर महान होने का स्मरण करके स्वतंत्रता के प्रति भारतवासियों को जागृत करने का प्रयास किया गया है।

10. माखनलाल चतुर्वेदी - जीवन परिचय:

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम नंदलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के ही प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक थे। प्राथमिक शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बांग्ला, गुजरात, अंग्रेजी, आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। मात्र 16 वर्ष की आयु में शिक्षक बन गये थे। माखनलाल चतुर्वेदी भारत के एक ख्याति प्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ हमेशा से ही अत्यंत लोकप्रिय रही हैं। वे सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। इन्होंने 'प्रभा' और 'कर्मवीर' जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में कार्य किया तथा ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया। वे एक सच्चे देशप्रेमी थे और सन् १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा जिस कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति तथा प्रेम का भी चित्रण हुआ है, इसलिए वे सच्चे अर्थों में युग-चारण माने जाते हैं।

साहित्यिक परिचय :

काव्य कृतियाँ:

हिमकिरीटिनी १९४३ ई.,
हिम तरंगिणी १९४९ ई.,
माता १९51 ई.,
समर्पण 1956 ई., तथा अन्य युग चारण, मरण ज्वार, बीजुरी काजल, वेणु लो गूंजे धरा, आँज रही आदि।

गद्यात्मक कृतियाँ
कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, अमीर इरादे :गरीब इरादे, समय के पाँव आदि ।

निबंध संग्रह
साहित्य देवता।
अमीर इरादे गरीब इरादे (1960ई०)

पुरस्कार व सम्मान

१) १९४३ में 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था।
२)'पुष्प की अभिलाषा' तथा 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के लिए १९५९ में सागर विश्वविद्यालय ने
३)डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया।
४)१९६३ में भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया।
५)१६-१७ जनवरी १९६५ को खंडवा में मध्यप्रदेश शासन की ओर से 'एक भारतीय आत्मा' चतुर्वेदी जी के लिए नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।
६)माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल में उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है।
७)उनके काव्य संग्रह 'हिमतरंगिणी' के लिये उन्हें १९५५ में हिंदी के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।
मृत्यू:श्री माखनलाल चतुर्वेदी जी की मृत्यु 30 जनवरी 1968 हो गई. उस समय उनकी आयु 79 वर्ष थी।

11 सुभद्रा कुमारी चौहान

प्र झांसी की रानी कविता में व्यक्त भारत के राष्ट्रीय गौरव और देशभक्ति को कैसे व्यक्त की गई है ?

सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता "झाँसी की रानी" रानी लक्ष्मीबाई के अदम्य साहस और वीरता का वर्णन करती है। यह कविता 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका और अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने में उनके अद्वितीय पराक्रम को दर्शाती है। कविता में, लक्ष्मीबाई को एक बहादुर योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है, जो “मर्दानी” की तरह अंग्रेजों से लड़ती है और झांसी की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देती है।

१)वीरता: यहां पर कवयित्री ने झाँधी की रानी कीवीरता का उल्लेख किया है। जब रानी झाँसी के सिहासन पर बैठी तो उन्होंने अँग्रेजों से अपने देश को आजाद कराने के लिए उनमें युद्ध किया।
जब लक्ष्मीबाई झाँसी की रानी बनीं तो उन्होंने भारतीय जनता में आजादी का मन्त्र फेंक दिया। अंग्रेजों के द्वारा गुलाम बनाये गये राजाओं ने भी अँग्रेजों से युद्ध करने का संकल्प लिया। क्रोध में उनकी भहिं तन उठीं और देश में उथल-पुथल मच गई। भारत जो आजादी की आशा ही छोड़ चुका था उसमें एक नई आशा जागी। अब सबको लग रहा था कि अपनी आजादी जो उन्होंने खो दी थी वह अत्यन्त कीमती थी। अब सबने भारत से अँग्रेजों को खदेड़ने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार सन् 1857 में फिर से अतीत के गौरव की वह तलवार युद्ध में चमक उठी। इस कहानी को बुन्देलखण्ड के हरबोले (गवैये) गाते हैं कि झाँसी की रानी ने अँग्रेजों के साथ पुरुषों की भाँति जमकर युद्ध किया था।

कविता में लक्ष्मीबाई को एक वीर योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है, जो "मर्दानी" की तरह अंग्रेजों से लड़ती है।

२)देशभक्ति की प्रेरणा: लक्ष्मीबाई कानपुर के नाना साहब की मुँहबोली बहिन थीं। उन्होंने बचपन में उनका नाम छबीली रखा था। लक्ष्मीबाई अपने पिता की इकलौती सन्तान थीं। वह बचपन में नाना के साथ पढ़ती थीं और उन्हें के साथ खेलती थीं। बचपन में उनके प्रिय खेल थे बरछी, ढाल, तलवार और कटारों से खेलना। यही उनके खिलौने थे और यही उन्हें अपनी सहेलियों की तरह प्रिय थे। लक्ष्मीबाई बचपन से साहसी थीं। वीर शिवाजी की वीरता की कहानियाँ उन्हें बचपन से ही याद थीं। यह कहानी बुन्देलखण्ड के हरबोले बड़े जोर-शोर से गाते हैं कि लक्ष्मीबाई मर्दों की तरह अँग्रेजों से खूब लड़ी थीं।

कविता में लक्ष्मीबाई की देशभक्ति और स्वतंत्रता के प्रति समर्पण को दर्शाया गया है। लक्ष्मीचाई वीरता को साकार मूर्ति थी। उनकी सगाई झाँसी के राजा के साथ हो गई और वे विवाह करके झाँसी की रानी बन गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वीरता का विवाह सम्पन्नता के साथ हुआ हो। राजभवन में बधाइयाँ बजी खूब खुशियाँ मनाई गई। भाट लोग उनको प्रशंसा के गीत गाते थे।उन्होंने झाँसी के राजा को उसी प्रकार प्राप्त किया था जैसे चित्रा ने अर्जुन को और पार्वती ने शंकर जी को प्राप्त किया था। यह ' कहानी बुन्देलखण्ड के हरबोले गाते हैं। झाँसी की रानी पुरुषों के समान बड़ी वीरता से लड़ी थी।

३)बलिदान: रानी जब विवाह करके झाँसी आई तो ऐसा लग रहा था मानो सौभाग्य उदय हो गया है। महल में प्रसन्नता का वातावरण था किन्तु काल की गति को कोई नहीं जान सकता।वहाँ दुःख के बादल कब छा गए किसी को कुछ भी पता न चला।विधाता को भी रानी के तीर चलाने वाले हाथों में चूड़ियाँ नहीं सुहाई। राजा की असमय मृत्यु से रानी विधवा हो गई। उनके कोई सन्तान भी नहीं थी। अब रानी के शोक का ठिकाना नहीं था। ऐसा बुन्देलखण्ड हरबोले गाते हैं। झाँसी की रानी ने अँग्रेजों से पुरुषों की भाँति वीरता से युद्ध किया।

कविता में लक्ष्मीबाई के बलिदान को महान बताया गया है, जो देश के लिए शहीद हो जाती हैं। जब राजा की मृत्यु हो गई तो अंग्रेज गवर्नर डलहौजी बड़ा प्रसन्न हुआ।उसने सोचा कि अब झाँसी का राज्य हड़पने का अच्छा मौका है। उसने अपनी फौजें झाँसी की ओर भेज दीं और किले पर अपना झण्डा फहरा दिया।वह लावारिस झाँसी का वारिस (मालिक) बन बैठा।रानी को इससे बड़ी भारी पीड़ा हुई।आँखों में आँसू भर कर उसने देखा कि झाँसी परायी हुई जा रही है। बुन्देलखण्ड के हरबोले गाते हैं कि झाँसी वाली रानी ने मर्दों की भाँति अंग्रेजों से वीरतापूर्वक युद्ध किया।

अँग्रेजों ने दिल्ली, लखनऊ को बड़ी आसानी से अपने कब्जे में कर लिया, उन्होंने पेशवा को बिठूर में कैद कर लिया। नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक आदि का तो कहना ही क्या उन्होंने सिंध, पंजाब, ब्रह्मपुत्र, बंगाल, मद्रास आदि नगरों समेत पूरे भारत को अपने अधीन कर लिया। बुन्देलखण्ड के हरबोले इसी कहानी को गाते हैं कि झाँसी वाली रानी ने माँ की तरह साहस से अँग्रेजों से खूब डटकर युद्ध किया था।रानी लक्ष्मीबाई की बीरता और उनके अद्भुत युद्ध कौशल की कहानियाँ झाँसी के मैदानों में बिखरी पड़ी है।युद्ध के दौरान वे पुरुष रूप धारण कर कहर बरसाती थी।अंग्रेजो से छिड़े भीषण युद्ध में अँग्रेजों की सेना का लेफ्टिनेंट बॉकर रार्थ से युद्ध करने के लिए आगे आया। रानी ने

अपनी चमचमाती तलवार खींच ली और इसके साथ ही दो बिना बराबरी के योद्धाओं (एक पुरुष व एक महिला) में युद्ध प्रारम्भ हो गया किन्तु रानी लक्ष्मीबाई के रण-कौशल के आगे उसकी एक न चली और वा शीघ्र ही घायल होकर मैदान से भाग गया। उसे एक महिला के है। वीरता-प्रदर्शन पर काफी आश्चर्य था। बुन्देलखण्ड के हरबोले इसी कहानी को गाते हैं कि झाँसी वाली रानी ने मर्दो की तरह साहस से अँग्रेजों से खूब डटकर युद्ध किया था।रानी लक्ष्मीबाई की बीरता और उनके अद्‌भुत युद्ध कौशल की कहानियाँ झाँसी के मैदानों में बिखरी पड़ी है।युद्ध के दौरान वे पुरुष रूप धारण कर कहर बरसाती थी।अंग्रेजो से छिड़े भीषण युद्ध में अँग्रेजों की सेना का लेफ्टिनेंट बॉकर रार्थ से युद्ध करने के लिए आगे आया। रानी ने अपनी चमचमाती तलवार खींच ली और इसके साथ ही दो बिना बराबरी के योद्धाओं (एक पुरुष व एक महिला) में युद्ध प्रारम्भ हो गया किन्तु रानी लक्ष्मीबाई के रण-कौशल के आगे उसकी एक न चली और वा शीघ्र ही घायल होकर मैदान से भाग गया। उसे एक महिला के है। वीरता-प्रदर्शन पर काफी आश्चर्य था। बुन्देलखण्ड के हरबोले इसी कहानी को गाते हैं कि झाँसी वाली रानी ने मर्दो की तरह साहस से अँग्रेजों से खूब डटकर युद्ध किया था।

झाँसी पर जब अंग्रेजों ने अपना शासन स्थापित कर लिया तो रानी लक्ष्मीबाई ने उनके विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजा दिया। इसी क्रम में वह अपनी एक छोटी-सी टुकड़ी के साथ लगभग सौ मील का लम्बा सफर तय करके कालपी आ पहुँची। इतनी लम्बी दूरी और वह भी लगातार, अत्यधिक थकान के कारण रानी का प्रिय घोड़ा बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा और अगले ही पल उसकी मृत्यु हो चुकी थी।घोड़े की मृत्यु से रानी को झटका लगा किन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी। इस बीच अंग्रेजों को रानी के कालपी पहुँचने की सूचना मिल चुकी थी।यमुना के किनारे अंग्रेजों और रानी के मध्य युद्ध हुआ। फिर से रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ाए और उन्हें पराजय का मुँह देखने के लिए मजबूर कर दिया।अंग्रेजों को धूल चटाने के पश्चात् बड़े मनोबल व आत्मविश्वास के साथ रानी लक्ष्मीबाई ने कालपी से ग्वालियर की ओर कूच किया और ग्वालियर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। रानी के हाथों परास्त ग्वालियर के पूर्व राजा सिंधिया, जो अंग्रेजों का मित्र भी था को अपनी राजधानी छोड़कर भाग जाना पड़ा था। बुन्देलखण्ड के हरबोले इसी कहानी को गाते हैं कि झाँसी वाली रानी ने मर्दों की तरह साहस से अंग्रेजों से खूब डटकर युद्ध किया था।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी को आजाद बनाए रखने के लिए कुल तेईस वर्ष की उम्र में ही अपना बलिदान कर दिया। वह अत्यन्त तेजस्वी थी। उन्होंने स्वतंत्रता की नारी के रूप में जन्म लिया था। उन्होंने हम सभी भारतीयों को 'स्वतंत्रता ही जीवन था' इस तरह शिक्षा देने के लिए अवतार लिया था। उन्होंने हमें आजादी का मार्ग दिखाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उन्हें जो भी हम भारतीयों को सिखाना था, वह अपने बलिदान से सिखा दिया।वह स्वतंत्रता की साक्षात् देवी थी।

४) निडर योद्धा:

झाँसी की रानी' कविता से हमें प्रेरणा मिलती है कि हम अपनी मातृभूमि की आजादी की रक्षा अपने प्राणों की बलि को चढ़ा कर भी करें। अन्याय के आगे न झुकें। साथ ही, हमारे अन्दर राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना पुष्ट होती है।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई स्वर्ग सिधार गईं।अब उसकी अलौकिक सवारी स्वर्ग का विमान था।उसकी आत्मा का तेज परमात्मा के तेज से मिल गया। रानी ने मोक्ष प्राप्त किया। वह इसकी सच्ची अधिकारिणी भी थीं।तेईस साल की उम्र में उसकी वीरता को देखकर ऐसा लगता था कि वह कोई मनुष्य नहीं थी बल्कि अवतार लेकर कोई देवी आई थी। वह स्वतंत्रता की देवी हमें एक नया जीवन देने

आई थी। वह हमें स्वतंत्रता का रास्ता दिखा गई और अपने देश को स्वतंत्र करने का पाठ पढ़ा गई बुंदेलखंड के हरबोले इस कहानी को गाते हैं कि वह मर्दों जैसे युद्ध करने वाली रानी जो बड़ी वीरता से लड़ी थी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ही थी।

कविता स्वतंत्रता संग्राम के नायकों और वीरांगनाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत है।
कविता में लक्ष्मीबाई को एक वीर योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है, जो "मर्दानी" की तरह अंग्रेजों से लड़ती है।

12**. राणा प्रताप की तलवार - डॉ श्याम नारायण पांडे - जीवन परिचय:**

श्याम नारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण कृष्ण पंचमी को सन् 1907 में डुमराँव गाँव, आजमगढ़ उत्तर प्रदेश में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा के बाद श्यामनारायण पाण्डेय संस्कृत अध्ययन के लिए काशी (बनारस) आए। का बसशी विद्यापीठ से वे साहित्याचार्य की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उनके संस्कार द्विवेदीयुगीन, दृष्टिकोण उपयोगितावादी और भाव-विस्तार मर्यादावादी थे। लगभग दो दशकों से ऊपर वे हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर अत्यन्त लोकप्रिय रहे। उन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परम्परा को खड़ी बोली के रूप में प्रतिष्ठित किया। पाण्डेय जी का देहान्त वर्ष 1991 में डुमराँव नामक ग्राम में हुआ था।

साहित्यिक परिचय-

श्यामनारायण पाण्डेय आधुनिक काव्यधारा के प्रमुख वीर कवियों में से एक थे। वीर काव्य को इन्होंने अपनी कविताओं का मुख्य विषय बनाया। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अपने काव्य का आधार बनाकर इन्होंने पाठकों पर गहरी छाप छोड़ी है।श्यामनारायण पाण्डेय जी हिन्दी साहित्य के महान् कवियों में से एक हैं। इन्होंने इतिहास को आधार बनाकर महाकाव्यों की रचना की, जोकि हिन्दी साहित्य में सराहनीय प्रयास रहा। द्विवेदी युग के इस रचनाकार को वीरग्रन्थात्मक काव्य सृजन के लिए हिन्दी साहित्य में अद्वितीय स्थान दिया जाता है।

कृतियाँ (रचनाएँ)-

श्यामनारायण पाण्डेय ने चार उत्कृष्ट महाकाव्यों की रचना की थी, जिनमें से 'हल्दीघाटी और 'जौहर को अत्यधिक प्रसिद्धि मिली। 'हल्दीघाटी' में वीर राणा प्रताप के जीवन और 'जौहर' में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के आख्यान हैं।

इनके अतिरिक्त पाण्डेय जी की रचनाएँ निम्नलिखित है

खण्डकाव्य

तुमुल , रूपान्तर आरत , 'जय हनुमान'

तुमुल 'त्रेता के दो वीर ' नामक खण्ड काव्य का परिवर्धित संस्करण है।

माधव' , 'रिमझिम' , आँसू के कण' और 'गोरा वध' उनकी प्रारम्भिक लघु कृतियाँ हैं।

भाषा शैली-

श्यामनारायण पाण्डेय ने अपने काव्यों में खड़ी बोली का प्रयोग किया है। श्यामनारायण पाण्डेय वीर रस के सुविख्यात हिन्दी कवि थे। इनके काव्यों में वीर रस के साथ-साथ करुण रस का गम्भीर स्थान है। पाण्डेय जी ने काव्य में गीतात्मक शैली के साथ-साथ मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

13 राणा प्रताप की तलवार में राणा के शौर्य और वीरता को कैसे स्पष्ट किया है ?

'राणा प्रताप की तलवार' कविता का भावार्थ यह है कि यह कविता महाराणा प्रताप के पराक्रम, वीरता और उनकी तलवार के शौर्य को दर्शाती है, जो मेवाड़ के स्वाभिमान और आजादी की प्रतीक है। कविता में महाराणा प्रताप के अटूट संघर्ष, दुश्मन के सामने न झुकने के उनके दृढ़ संकल्प और उनकी तलवार द्वारा किए गए शौर्यपूर्ण युद्धों का वर्णन किया गया है, जिससे यह कविता देश के गौरव और बलिदान का प्रतीक बन जाती है। जो इस प्रकार है:

१)शौर्य और पराक्रम:

कविता में महाराणा प्रताप की बहादुरी और तलवार के दम पर किए गए युद्धों का वर्णन है, जिसमें उन्होंने दुश्मन को ललकारा और अपनी धरती के लिए संघर्ष किया। महाराणा प्रताप की सेना और मुगलों की सेना के मध्य भयानक युद्ध चल रहा था। जिस प्रकार भूमि के नीचे पानी में हलचल होने पर उफान उठता है और उस उफान में बहुत कुछ तहस-नहस हो जाता है। उसी प्रकार अपने मान-सम्मान की रक्षा हेतु महाराणा प्रताप के हृदय में उफान उठ गया था। उन्होंने अपने घोड़े पर बैठकर तलवार उठा ली और अपने विरोधियों का संहार करना आरम्भ कर दिया।

मेवाड़ के राजकुमार ने मुगलों की सेनाओं के सर धड़ से अलग करके अपनी जवानी की सार्थकता को सिद्ध किया था। महाराणा प्रताप के इस रौद्र रूप को देखकर मेवाड़ सेनानायक और सिपाहियों में उत्साह का संचार होने लगा था। पहले की अपेक्षा अब मेवाड़ की सेना ने भी युद्ध में अपना प्रयास बढ़ा दिया और विपक्षियों को ध्वस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

पाण्डेय जी की यह कविता उस समय लिखी गई थी जब देश अंग्रेजों के अधीन था. इसलिए इस कविता में देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ने की प्रेरणा छिपी हुई है.

२)वीरता का वर्णन: हल्दीघाटी में मुगल सी और शंकर सेवा में भीषण युद्ध छेड़ गया जब राणा प्रताप युद्ध भूमि तलवार उठाकर चेतन का घोड़े पर सवार होकर युद्ध करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अपने अंदर असीम शौर्य का भरण किया करते थे अर्थात् युद्ध करते हुए उनमें अत्यधिक साहस दिखाई दे रहा है वह इसे पराक्रमी वीर थी जो शत्रु सेवा के सिर पर काट-काट कर अपनी जवानी का वास्तविक परिचय देते थे यहां पर कभी कहते हैं कि युद्ध की नदी से कलकल की ध्वनि गूंज रही है और राणा शत्रु सी को उसमें डुबोने के लिए तत्पर थी राणा प्रताप की तलवार ने नव का रूप धारण कर लिया था जो युद्ध नदी में बहते हुए शत्रु दल को आतिश शीघ्रता से पर लगा रहा था अर्थात शत्रु सेवा का दलन हो रहा था इस प्रकार से एक शूरवीर योद्धा वीर और युद्ध भूमि में साहस के साथ लड़ने वाले महाराणा प्रताप का वर्णन इसमें किया गया है

कविता में महाराणा प्रताप के शौर्य और युद्धभूमि में उनके पराक्रम का अद्भुत वर्णन है. कवि ने महाराणा प्रताप को एक ऐसे योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया है जो शत्रुओं को ललकारते हैं और युद्ध में डटकर मुकाबला करते हैं.

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल पानी को।
राणा प्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को।।

३) देशप्रेम और राष्ट्रीयता:

यह कविता मेवाड़ के स्वाभिमान और अपने राज्य के प्रति महाराणा प्रताप के प्रेम को उजागर करती है, जो उन्होंने अपनी तलवार के माध्यम से व्यक्त किया।

पाण्डेय जी की यह कविता उस समय लिखी गई थी जब देश अंग्रेजों के अधीन था. इसलिए इस कविता में देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ने की प्रेरणा छिपी हुई है।

हल्दीघाटी के युद्ध का सजीव चित्रण इस कविता के माध्यम से किया गया है जहां राणा प्रताप अपनी तलवार से शत्रुओं का शहर करते हुए अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं मेवाड़ और मुगल सेवा के बीच हल्दीघाटी का युद्ध राणा प्रताप की वीरता और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है कविता में राणा प्रताप की देशभक्ति की भावना अभिव्यक्त होती है जिसमें अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए भी बलिदान के लिए भी तात्पर्य है।

४)महाकाली का साक्षात रूप:

महाराणा प्रताप की तलवार सिर्फ एक हथियार नहीं, बल्कि आज़ादी और स्वाभिमान की प्रतीक है, जिसे उन्होंने कभी भी गिरने नहीं दिया और दुश्मन के आगे झुकने से इनकार किया।

कवि कहता है कि मेवाड़ के राजा के साथ-साथ अब उनकी सेना भी दोगुने उत्साह से युद्ध कर रही थी और विरोधियों को परास्त कर रही थी। महाराणा प्रताप ने मुगल सैनिकों को क्षण भर में कोड़े (चाबुक) मारकर रणभूमि में गिरा दिया था। अब महाराणा प्रताप अपने घोड़े से उतरकर युद्ध-कौशल दिखा-दिखाकर मुगल सैनिकों को मार रहे थे। अब ऐसा क्षण देखने को मिल रहा था, जो वास्तव में अत्यन्त भीषण था। महाराणा प्रताप ने विरोधी सैनिकों पर अपनी तलवार से आक्रमण कर दिया और यह देखकर कुछ ही क्षणों में चारों ओर भीषण हाहाकार मच गया था। रणभूमि में मचे इस भीषण नरसंहार को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो रणचण्डी (दुर्गा) की खून की प्यास बुझाने के लिए, राणा अपने विरोधियों का संहार कर रहे हों। महाराणा प्रताप को युद्धभूमि में साक्षात महाकाली का रूप धारण किए हुए बताया गया है, जो अपनी तलवार और आवाज से शत्रुओं को डरा रही थीं.

५)अटूट संकल्प:

कविता दर्शाती है कि महाराणा प्रताप ने कितना भी कष्ट उठाया हो, वे कभी भी समझौते के लिए तैयार नहीं हुए और अपनी तलवार को सम्मान से थामे रहे। युद्ध के मैदान में महाराणा प्रताप की तलवार कैसे दुश्मनों के सिर काट रही थी और जमीन को पाट रही थी, साथ ही युद्ध के दौरान पृथ्वी पर खून और शवों का ढेर लग रहा था।

महाराणा प्रताप का अटूट संकल्प था अपनी मातृभूमि मेवाड़ को अकबर के अधीनता से मुक्त कराना, जिसके लिए उन्होंने महलों को त्यागकर जंगलों में घास की रोटियाँ खाना और घास की बिछौना पर सोना स्वीकार किया। मुगलों का सामना करने और अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने का यह दृढ़ संकल्प ही उनके जीवन का आधार था, जिसके कारण वे आज भी वीरता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं।

इस प्रकार कविता में महाराणा प्रताप के उस महान व्यक्तित्व का वर्णन है जिसने अपनी तलवार के बल पर सदियों तक मेवाड़ की शान और गौरव को बनाए रखा और आज भी वह प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

14. अरुण यह मधुमय देश हमारा -जयशंकर प्रसाद

प्र अरुण यह मधुमय देश हमारा यह कविता भारत की प्राकृतिक सुंदरता को दर्शाती है? स्पष्ट कीजिए।

आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। छायावाद के आलोक स्तंभों में प्रसाद का विशिष्ट स्थान है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद जी ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध सभी विधाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रसाद में भावना, विचार और शैली तीनों की पूर्ण प्रौढ़ता मिलती है, जो विश्व के बहुत कम कवियों में संभव है। व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही दृष्टियों से प्रसाद और उनका काव्य अद्वितीय है।
''अरुण यह मधुमय देश हमारा'' का अर्थ है कि यह देश, जो सूर्य की लालिमा से युक्त है, मधुर और सुखद है। यह पंक्ति, जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध नाटक 'चंद्रगुप्त' के 'कार्नेलिया का गीत' से ली गई है। इस गीत में, कार्नेलिया भारत की सुंदरता और महिमा का वर्णन करती है, और यह पंक्ति विशेष रूप से भारत की प्राकृतिक सुंदरता और प्रेम से भरे वातावरण को दर्शाती है।पंक्ति का भावार्थ है कि भारत एक ऐसा देश है जो

सूर्य की लालिमा से जगमगाता है और प्रेम, आनंद और सुख से भरा हुआ है। यह देश अनजान लोगों को भी सहारा देता है और हरियाली से भरपूर है। यह गीत भारत की प्राकृतिक सुंदरता, प्रेम और आतिथ्य की भावना को व्यक्त करता है।

१)भारत की सांस्कृतिक महत्ता:

यहांँ सूर्य प्रतीक है- ज्ञान का क्योंकि भारत भूमि पर ही सर्वप्रथम ज्ञान, योग, सभ्यता, अध्यात्म, दर्शन का जन्म हुआ जिससे संपूर्ण विश्व आलोकित हुआ है। साथ ही यहाँ इस ओर भी संकेत किया गया है कि इतना समृद्ध शाली देश होने के बावजूद भी भारतीयों के मन में दया, प्रेम, करुणा के भाव विद्यमान हैं ।

२) बंधुत्व की भावना: भारतवासियों में प्रेम, अपनत्व का भाव है वही उनकी संस्कृति को मधुमय बनाता है अर्थात् उनकी प्रेम युक्त बंधुत्व की भावना ही सबके जीवन में मिठास घोलती है। इसलिए यहाँ भारत को "मधुमय देश" कहकर संबोधित किया गया है। अपने इन्हीं गुणों के कारण यहाँ पर आने वाला अनजान व्यक्ति विशेष भी अपने आप को कभी पराया महसूस नहीं करता।

३) अतिथि का स्वागत: भारत की शरणागत-वत्सलता की ओर संकेत करते हुए प्रसाद जी ने कहा है कि भारत अनंत काल से बाहर से आए हुए लोगों का आश्रय स्थल रहा है। अनेकानेक विदेशियों, शरणार्थियों ने भारत में आकर शरण ग्रहण की है और भारत ने उन्हें हृदय से अपनाया है। या यूँ कहें कि भारतवासियों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अनजान विदेशियों को भी अपना बंधु समझ कर उन्हें गले से लगाया जिन्हें सबने ठुकरा दिया, उसे हमने गले से लगाया है।

४) भावुक प्रवृत्ति:भारतवासी अत्यंत संवेदनशील, भावुक प्रवृत्ति के हैं वे दूसरों के दुखों को देखकर करुणा से द्रवित हो जाते हैं और उन्हें अपना लेते हैं, आश्रय देतें हैं इसलिए यहाँ आकर अनजान लोगों को भी सहारा मिल जाता है।

"सरल तामरस गर्भ विभा पर,
नाच रही तरुशिखा मनोहर ।
छिटका जीवन हरियाली पर,
मंगल कुमकुम सारा।"

५)प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण:

प्रात:काल सूर्य आकाश में उदित होने पर ऐसा लगता है मानो चारों और जागरण के गीत गुंजित हो उठे हैं। समस्त प्रकृति जीव-जंतु, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियांँ, जाग उठते हैं। सूर्य की किरणें पेड़ की फुनगी पर नृत्य करती हुई और कमल की पंखुड़ियों पर अपनी आभा बिखरती हुई नजर आती हैं अर्थात पेड़ की सबसे ऊंँची शाखा पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो पेड़ के पत्तों पर स्वर्णिम आभा तो फैल जाती है साथ ही साथ जब हवा चलती है और पत्तों में हलचल होती हैं तो ऐसा लगता है मानो सूर्य की किरणें वृक्ष की सबसे ऊंँची शिखा पर नृत्य कर रही हों। कवि ने यहाँ बड़े ही मनोहारी ढंग से प्रकृति का चित्रण किया है। इतना ही नहीं सूरज तालाब में खिले हुए कमल की पंखुड़ियों पर अपनी आभा बिखेकर उसके सौंदर्य को भी कई गुना बढ़ा देता है।

६) भारत की समृद्धि तथा संपन्नता:

भारत भूमि शस्य श्यामला है। चारों ओर छायी हुई हरियाली उसकी समृद्धि और संपन्नता का परिचायक है। प्रातःकालीन सूर्य ने मानो (भारतीयों के) जीवन रूपी हरियाली पर अपना सारा मंगल कुमकुम छिटका दिया हो। सरल शब्दों में कहें तो भारत धन्य धान्य से सम्पन्न देश है, यहाँ चारों ओर लहराते खेत खलिहान, यहाँ की हरीतिमा, उसकी संपन्नता को बयां करती है। जब सूर्य की रक्तिम किरणें इन पर पड़ती हैं, तो ऐसा लगता है मानो सूरज ने अपना सारा मांगलिक कुमकुम भारतीयों पर बिखेर दिया हो अर्थात भारतवासियों के हरित समृद्ध

जीवन को और खुशहाल बना दिया हो। वास्तव में यहाँ के लोग बहुत परिश्रमी हैं, जो बंजर धरती को भी हरा-भरा बनाने की क्षमता रखते हैं। यहाँ पर जीवन हरियाली पर मांगलिक कुमकुम छिटकने का बड़ा ही मनोहारी चित्रण कवि ने किया है। भारत की समृध्दि में मांगलिकता का भाव निहित है।

इस प्रकार से जयशंकर प्रसाद अपनी कविता अरूणिया मधुमेह देश हमारा के अंतर्गत भारत की प्राकृतिक सुंदरता संपन्नता बंधुता विदेशी अतिथियों के प्रति प्रेम अतिथि भाव समृद्धि परंपरा तथा भारत का इतिहास और गौरव के प्रति एक गीत लिखा है और इस जीत के अंतर्गत उनका भारत के प्रति राष्ट्रीय चेतना तथा देश भक्ति भाव स्पष्ट होता है।

15. शहीद स्तवन -रामधारी सिंह दिनकर -जीवन परिचय:

राष्ट्रकवि' के रूप में समादृत और लोकप्रिय रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय ज़िले के सिमरिया ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ। बचपन संघर्षमय रहा जहाँ स्कूल जाने के लिए पैदल चल गंगा घाट जाना होता था, फिर गंगा के पार उतर पैदल चलना पड़ता था। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा पास करने के बाद आजीविका के लिए पहले अध्यापक बने, फिर बिहार सरकार में सब-रजिस्टार की नौकरी की। अँग्रेज़ सरकार के युद्ध-प्रचार विभाग में रहे और उनके ख़िलाफ़ ही कविताएँ लिखते रहे। आज़ादी के बाद मुज़फ़्फ़रपुर कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष बनकर गए। 1952 में उन्हें राज्यसभा के लिए चुन लिया गया जहाँ दो कार्यकालों तक उन्होंने संसद सदस्य के रूप में योगदान किया। इसके उपरांत वह भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति नियुक्त किए गए और इसके एक वर्ष बाद ही भारत सरकार ने उन्हें अपना हिंदी सलाहकार नियुक्त कर पुनः दिल्ली बुला लिया।

ओज, विद्रोह, आक्रोश के साथ ही कोमल श्रृंगारिक भावनाओं के कवि दिनकर की काव्य-यात्रा की शुरुआत हाई स्कूल के दिनों से हुई जब उन्होंने रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा प्रकाशित 'युवक' पत्र में 'अमिताभ' नाम से अपनी रचनाएँ भेजनी शुरू की। 1928 में प्रकाशित 'बारदोली-विजय' संदेश उनका पहला काव्य-संग्रह था। उन्होंने मुक्तक-काव्य और प्रबंध-काव्य–दोनों की रचना की। मुक्तक-काव्यों में कुछ गीति-काव्य भी हैं। कविताओं के अलावे उन्होंने निबंध, संस्मरण, आलोचना, डायरी, इतिहास आदि के रूप में विपुल गद्य लेखन भी किया।

निधन :24 अप्रैल 1974 | चेन्नई, तमिलनाडु में हुआ।

साहित्यिक परिचय :

१)मुक्तक-काव्य: प्रणभंग, रेणुका, हुँकार, रसवंती, द्वंद्वगीत, सामधेनी, बापू, धूप-छाँह, इतिहास के आँसू, धूप और धुआँ, मिर्च का मज़ा, नीम के पत्ते, सूरज का ब्याह, नील-कुसुम, हारे को हरिनाम सहित दो दर्जन से अधिक संग्रह।
२)प्रबंध-काव्य: कुरुक्षेत्र , रश्मिरथी उर्वशी

३)गद्य : मिट्टी की ओर, रेती के फूल, संस्कृति के चार अध्याय, उजली आग, वेणुवन, शुद्ध कविता की खोज, हे राम!, संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, मेरी यात्राएँ, दिनकर की डायरी, विवाह की मुसीबतें सहित दो दर्जन से अधिक कृतियाँ।

पुरस्कार एवं सम्मान:

१)रामधारी सिंह दिनकर को 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार
२) काव्य-कृति 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
३)भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया। उनकी स्मृति में भारत सरकार द्वारा डाक-टिकट भी जारी किया गया।

प्र 16 मातृभूमि कविता के अंतर्गत कवि ने भारतीय प्रकृति और उसके भारत गौरवगान को उल्लेखित कैसे किया है?

मातृभूमि" कविता का भावार्थ मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा और समर्पण को दर्शाता है, जिसमें उसकी सुंदरता, प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक धरोहर और अपने लोगों के योगदान का वर्णन होता है। कवि मातृभूमि को अपनी माँ के समान मानता है और उसकी रक्षा व सेवा करने की भावना को व्यक्त करता है, साथ ही यह भी बताता है कि यह भूमि केवल एक भौगोलिक स्थान न होकर हमारी पहचान, संस्कार और संस्कृति का प्रतीक है।

मातृभूमि कविता में कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्धि का वर्णन किया है । कवि का कहना है कि भारत की उत्तर दिशा में स्थित हिमालय पर्वत की ऊँची चोटियाँ आकाश को स्पर्श करती हुई प्रतीत होती है। विश्व का सबसे ऊँचा हिमालय पर्वत भारत के गौरव का प्रतीक है। दक्षिण में स्थित हिंद महासागर भारत माँ के चरणों को स्पर्श करता है और अपने भाग्य पर इतराता है

१)मातृभूमि के प्रति प्रेम और सम्मान:

वि ने देश को पुण्यभूमि, स्वर्णभूमि, धर्मभूमि और कर्मभूमि कहकर उसका गौरव बढ़ाया है। यह वही भूमि है जहाँ भगवान राम और माता सीता का जन्म हुआ, जहाँ श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया, और जहाँ गौतम बुद्ध ने करुणा और अहिंसा का संदेश दिया। यह युद्धभूमि भी है, जहाँ धर्म और सत्य की रक्षा के लिए महाभारत जैसे युद्ध लड़े गए, और साथ ही बुद्धभूमि भी है, जिसने पूरे विश्व को शांति और ज्ञान का प्रकाश दिया। कवि इस कविता के माध्यम से अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम, श्रद्धा और गर्व की भावना प्रकट करते हैं और पाठकों के मन में देशभक्ति की भावना जगाते हैं।

कवि अपनी मातृभूमि को माँ के समान पूजता है और उसके प्रति गहरी भक्ति व्यक्त करता है।
ऐसा पवित्र देश है जिसमें गंगा, यमुना एवं सरस्वती जैसी पवित्र नदियों का संगम स्वतः होता है। जिसका अद्‌भुत सौंदर्य चारों ओर बिखरा प्रतीत होता है। कवि को भारत की भूमि पवित्र एवं स्वर्णिम प्रतीत होती है।
२)प्रकृति का वर्णन:प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भारत की भौगोलिक विशेषताओं और प्राकृतिक सुंदरता का गुणगान किया है। भारत के उत्तर में स्थित विशाल और गौरवशाली हिमालय पर्वत को कवि ने ऐसा दर्शाया है मानो वह आकाश को चूम रहा हो, जो देश की शक्ति और अडिगता का प्रतीक है। वहीं, दक्षिण दिशा में स्थित विशाल हिंद महासागर हिमालय के चरणों में झुककर लहरों के माध्यम से अपने उल्लास को प्रकट करता हुआ इतरा रहा है।

कवि ने भारत की पवित्र नदियों–गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम की महिमा का वर्णन किया है। इन नदियों का कलकल प्रवाह और उनकी जगमगाती छटा समस्त धरती पर एक अनुपम सुंदरता बिखेरती है। पर्वतीय झरनों की मधुर ध्वनि और नदियों की लहरों की चंचलता भारत की प्राकृतिक संपदा को और अधिक भव्य बनाती है।

कविता में भारत के हिमालय पर्वत, सागर, पवित्र नदियाँ, हरी-भरी वनस्थली और आम के बागों का मनमोहक वर्णन किया गया है।

उसे अपनी मातृभूमि, अपनी जन्मभूमि भारत पर अत्यधिक गर्व है। भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में कल-कल बहते हुए झरने यहाँ की शोभा बढ़ाते हैं । हरे-भरे वनों में चिड़ियों की चहचहाहट से वातावरण मदमस्त हो जाता है। आम के घने बगीचे में वसंत ऋतु के आगमन पर कोयल की मीठी कूक सुनाई देती है। भारत धरती पर बहती शीतल व शुद्ध हवा हर प्राणियों के तन-मन में स्फूर्ति व ताज़गी भर देती है।

३)सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व:

यह भूमि महान हस्तियों, जैसे राम, कृष्ण, बुद्ध और अन्य धर्मों के जन्मस्थान के रूप में पवित्र और पूजनीय है। अनेक धर्मों की स्थापना हुई जिससे जीवन के संदेश लोगों को मिले। इस देश की पावन धरती पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जन्म लिया जो लोगों के लिए जीवन जीने का आदर्श बने। नारी धर्म का आदर्श प्रस्तुत करने वाली सीता माता की यह पुण्य भूमि है। कर्म का संदेश देने वाले श्रीकृष्ण भी इसी धरती पर जन्मे । प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध भी भारत भूमि के ही रत्न थे। कवि का मानना है कि यह युद्ध भूमि, यह बुद्ध भूमि मेरी मातृभूमि है, मेरी जन्मभूमि है। इस पर मुझे गर्व है।
कविता को हिंदी के प्रसिद्ध कवियों में से एक सोहनलाल द्विवेदी जी ने लिखा है।

वह धर्मभूमि मेरी,
वह कर्मभूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी

मातृभूमि" कविता में कवि सोहनलाल द्विवेदी ने भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महानता का सुंदर चित्रण किया है। इस कविता में हिमालय को देश की अडिग शक्ति और गौरव का प्रतीक बताया गया है, जो आकाश को चूमता हुआ खड़ा है। दूसरी ओर, हिंद महासागर उसके चरणों में लहरों के माध्यम से झुककर अपनी भक्ति प्रकट करता है। कवि ने गंगा, यमुना और सरस्वती के त्रिवेणी संगम की महिमा का उल्लेख करते हुए उनकी पवित्रता को दर्शाया है। भारत की पहाड़ियों से झरते झरने, हरी-भरी अमराइयाँ, कोयल की मधुर पुकार और मलय पवन की शीतलता इस भूमि की प्राकृतिक सुंदरता को और अधिक मोहक बनाते हैं।

४)कृतज्ञता और सेवा का भाव:

कवि अपनी मातृभूमि के उपकारों को याद करते हुए कृतज्ञता व्यक्त करता है और उसके प्रति सेवा करने की अपनी असमर्थता पर लज्जित होता है।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि इस भूमि की पवित्रता को दर्शाते हुए कहते हैं कि यह वही देश है जहाँ भगवान राम और माता सीता का जन्म हुआ। यह वही भूमि है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बांसुरी की मधुर ध्वनि के साथ गीता का पावन ज्ञान संसार को प्रदान किया, जिससे मानवता को धर्म, कर्म और सत्य का मार्गदर्शन मिला।

यही वह भूमि है जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ और उन्होंने अपनी करुणा, अहिंसा और ज्ञान से संपूर्ण विश्व को दया और सत्य का संदेश दिया। उन्होंने अज्ञान के अंधकार में भटके हुए लोगों को सच्चा मार्ग दिखाया और उन्हें मोक्ष की ओर अग्रसर किया।

अंत में, कवि इस देश को "युद्ध-भूमि" और "बुद्ध-भूमि" दोनों कहकर इसकी अद्वितीय विशेषता को दर्शाते हैं। यह वही भूमि है जहाँ धर्म और न्याय की रक्षा के लिए महाभारत जैसे युद्ध लड़े गए, वहीं यह अहिंसा और शांति का संदेश देने वाले महापुरुषों की जन्मस्थली भी रही है। कवि के अनुसार यही उनकी मातृभूमि है और यही उनकी जन्मभूमि है। यह देश केवल भूमि का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि जन्मभूमि और मातृभूमि के रूप में पूजनीय है।

प् 17 इस कविता के माध्यम से कवि ने भारत के गौरव तथा संस्कृति का गुणगान कैसे किया है?

कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर-धारा है, भारतवर्ष हमारा है, यह हिंदुस्तान हमारा है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की कविता "कोटि-कोटि कंठ से निकली यही स्वर धारा है" में भारत देश के गौरवपूर्ण इतिहास, समृद्ध संस्कृति और देशभक्ति की भावना का ओजपूर्ण गुणगान किया गया है। इस कविता का भावार्थ नीचे समझाया गया है:

यह कविता भारत माता की जय और राष्ट्र के प्रति प्रेम का जयघोष है, जो करोड़ों भारतीयों की आवाज़ बनकर निकलता है। कवि इस कविता में बताते हैं कि हमारा भारत देश साधारण नहीं है, बल्कि सृष्टि के आरंभ से ही इसका अस्तित्व है और यह हमारा गर्व है।

१)करोड़ों कंठों का एक स्वर: कविता की पहली पंक्ति ही इस भावना को स्पष्ट कर देती है।

"कोटि-कोटि कंठों से निकली यही स्वर धारा है"

का अर्थ है कि करोड़ों भारतीयों की एक ही आवाज़ है। यह आवाज़ एक सामूहिक संकल्प और दृढ़ विश्वास को दर्शाती है कि यह भारतवर्ष हमारा है, हमारा हिंदुस्तान है।अनादि काल से गौरवशाली इतिहास है कवि बताते हैं कि जब से सृष्टि का निर्माण हुआ, तभी से भारत का अस्तित्व है और यह हमारा अभिमान है।
२)सृष्टि के आरंभ से भारत: कवि बताते हैं कि जब इस सृष्टि का नया सृजन हुआ, जब चाँद-तारे और नभ बने, तभी से यह देश हमारा है। यह पंक्ति भारत की प्राचीनता और उसकी महानता को रेखांकित करती है। यह दर्शाता है कि भारत की जड़ें बहुत गहरी हैं और इसका इतिहास बहुत लंबा है।

३)ज्ञान और संस्कृति का स्रोत: इस कविता में भारत को "ज्ञान-निधान" कहा गया है। यह वह भूमि है जहाँ प्रथम मानव ने आँखें खोलीं, जहाँ 'स्वाहा' और 'स्वधा' जैसे वैदिक मंत्रों का उद्घोष हुआ। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिकता का केंद्र भी रहा है।सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान-केंद्र: यह कविता इस बात को रेखांकित करती है कि भारत वह भूमि है, जहाँ ज्ञान और संस्कृति की शुरुआत हुई।

४)नदियों का वरदान: सतलुज, व्यास, गंगा, यमुना जैसी नदियों का उल्लेख यह बताता है कि भारत की भूमि इन जीवनदायिनी नदियों से सिंचित है। इन नदियों को माता के रूप में पूजकर कवि ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्धि को दर्शाया है।प्राकृतिक सौंदर्य पर गर्व: कवि भारत की नदियों और पर्वतों का गुणगान करते हुए देश के प्राकृतिक सौंदर्य और समृद्धि पर गर्व व्यक्त करते हैं।

४)हिमालय और पर्वतों का गौरव: हिमालय को "पर्वत सम्राट" और विंध्य-सतपुड़ा जैसे पर्वतों को देश के रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है। हिमालय को युगों से भारत की विजय का निशान बताया गया है, जो हमारी अटल और अडिग पहचान का प्रतीक है।

५)इतिहास की अमिट छाप: कवि गर्व से कहते हैं कि हमारा इतिहास बहुत लंबा और गौरवपूर्ण है। हमने कई क्रांतियां की हैं और इतिहास ने हमेशा हमारा मान-सम्मान किया है। यह आत्मविश्वास से भरी हुई पंक्ति बताती है कि हम एक महान अतीत के वारिस हैं। महान इतिहास का उत्तराधिकार: यह कविता हमें यह भी बताती है कि हम एक महान इतिहास के वारिस हैं, जहाँ अनगिनत क्रांतियों और सम्मान की गाथाएँ लिखी गई हैं।

कवि ने अपनी खोजपूर्ण शैली में भारत की गौरव में परंपराओं का दान करते हुए यहां का इतिहास प्राकृतिक गौरव तथा हमारे तीर्थ का वर्णन किया है भविष्य उज्जवल है इसीलिए कोई हमें टकरा नहीं सकता इस कविता में भारतवर्ष की प्रशंसा की गई है जिससे मन में देश की प्रेम की भावना विकसित होती है। यह कविता

हर भारतीय के मन में अपनी मातृभूमि के प्रति असीम गौरव, प्रेम और सम्मान की भावना जगाती है, और एकजुट होकर राष्ट्र की महिमा का गुणगान करने के लिए प्रेरित करती है।

18 खूनी हस्ताक्षर - गोपाल प्रसाद व्यास

प्र खूनी हस्ताक्षर हमें किस घटना की याद दिलाती है?

गोपाल प्रसाद व्यास की कविता 'खूनी हस्ताक्षर' में 'खूनी हस्ताक्षर' का अर्थ है मातृभूमि की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का संकल्प, और यह सिर्फ स्याही से नहीं, बल्कि अपने खून से किया गया वादा है। यह उन शहीदों के बलिदान का प्रतीक है, जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना देश के लिए लड़ने का फैसला किया।

कविता की शुरुआत एक जोश भरे सवाल से होती है, जिसमें कवि उन लोगों को ललकारते हैं जिनके खून में देश के लिए कोई उबाल या जज़्बा नहीं है। वे कहते हैं कि अगर खून देश के काम न आए, तो वह सिर्फ पानी है।

यह कविता उस ऐतिहासिक क्षण को दर्शाती है जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता के लिए बलिदान का आह्वान किया था।

१)खून की कीमत: कविता की शुरुआत इस विचार से होती है कि जिस खून में देश के लिए उबाल नहीं, वह खून नहीं, बल्कि पानी है।

खूनी हस्ताक्षर' का मतलब है कि देशभक्तों ने देश की आजादी के लिए अपना तन, मन, धन और जीवन सब कुछ समर्पित कर दिया ।

२)सुभाष चंद्र बोस का आह्वान: कवि बताते हैं कि जब सुभाष चंद्र बोस ने देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान की माँग की, तो उनकी आँखों में खून उतर आया और उनका चेहरा लाल हो गया। उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वतंत्रता केवल बातों से नहीं मिलती, बल्कि इसके लिए बलिदान और त्याग की आवश्यकता होती है।सुभाष चंद्र बोस ने जिस कोरे कागज पर खून से हस्ताक्षर करने को कहा था, वह कोई साधारण कागज नहीं, बल्कि आजादी का परवाना था।

३)बलिदान का परवाना: सुभाष चंद्र बोस ने एक कोरा कागज़ आगे बढ़ाते हुए कहा कि यह आज़ादी का परवाना है और इस पर स्याही से नहीं, बल्कि अपने खून से हस्ताक्षर करने होंगे। यह उन सभी के लिए एक चुनौती थी, जो खुद को सच्चा हिंदुस्तानी मानते थे।

युवकों का जोश: इस आह्वान से पूरे जनसमूह में हलचल मच गई। लोग "हम देंगे-देंगे खून" का नारा लगाते हुए आगे आए। युवा देशभक्तों ने चाकू-छुरी से अपना रक्त गिराया और उसी रक्त की स्याही से आज़ादी के परवाने पर हस्ताक्षर किए।यह उन देशभक्तों के जोश और जज्बे को दिखाता है जिन्होंने बिना किसी डर के अपना रक्त बहाया।

'उस दिन लोगों ने सही-सही
खून की कीमत पहचानी थी।
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में
माँगी उनसे कुरबानी थी'।

४)नया इतिहास: कवि कहते हैं कि उस दिन तारों ने हिंदुस्तानियों के नए विश्वास को देखा, जब महान रणवीरों ने अपने खून से देश का इतिहास लिखा। कविता में कहा गया है कि उन वीर युवाओं ने अपने खून से एक नया इतिहास लिखा था, जो देश के प्रति उनके अटूट विश्वास को दर्शाता है।

यह कविता उन देशभक्तों के बलिदान और जोश को दर्शाती है, जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने का साहस दिखाया। यह आज भी हमें त्याग और देशभक्ति की भावना से प्रेरित करती है।

19 वीर तुम बढ़े चलो - द्वारिकाप्रसाद महेश्वरी

प्र वीर तुम बड़े चलो कविता का मूल भावार्थ समझाइए।

वीर तुम बढ़े चलो" कविता का भावार्थ है कि हमें जीवन की हर परिस्थिति में, चाहे कितनी भी कठिनाई या बाधा क्यों न हो, कभी हार नहीं माननी चाहिए। कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी चाहते हैं कि हम देश के सम्मान के लिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निडरता और धैर्य के साथ हमेशा आगे बढ़ते रहें, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य और चंद्रमा बढ़ते रहते हैं। कवि \'वीर तुम बढ़े चलो\' कविता में साहसी, निडर और देश के सपूतों को संबोधित करता है, उन्हें बाधाओं से घबराने के बजाय, अपने लक्ष्य पर दृढ़ रहने और आगे बढ़ते रहने का आह्वान करता है। यह संबोधन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वीरों और देश के प्रत्येक नागरिक के लिए है, जो ध्वज और प्रण के साथ मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के लिए निरंतर आगे बढ़ने का संकल्प लेते

निम्नलिखित पंक्तियों का आशय यह है कि हमारी भूमि में अन्न और जल की कोई कमी नहीं है, हमें बस मेहनत करके उसे प्राप्त करना है। हमें अपने प्रयासों से रत्नों की तरह कीमती चीजें निकालनी हैं और निरंतर आगे बढ़ते रहना है।

इस कविता के माध्यम से कवि हमें यह संदेश देना चाहता है कि हमें धैर्य और साहस के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए और कभी भी हार नहीं माननी चाहिए।

कवि हमें यह सिखाना चाहता है कि हमें अपने जीवन में धैर्य और साहस के साथ निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए और किसी भी कठिनाई से डरना नहीं चाहिए।

कविता का मुख्य भाव:
१:निर्भयता और दृढ़ संकल्प: कवि वीरों को संबोधित करते हुए कहता है कि तुम्हारे सामने पहाड़ जैसी बाधा आ जाए या सिंह दहाड़ रहा हो, तो भी तुम्हें डरना नहीं है। तुम्हें पूरी निडरता और दृढ़ संकल्प के साथ डटे रहना है।

एक 'प्रयाण' गीत है। कवि कहता है कि हे वीर, धीर! तुम आगे बढ़ो। हाथ में राष्ट्रीय ध्वज लेकर बिना रुके बढ़ते रहो। चाहे सामने पहाड़ हो या सिंह गरज रहा हो, बिलकुल डरो नहीं, डटकर सामना करो और आगे बढ़ो। चाहे बादल गरज रहे हों, बिजलियाँ कड़क रही हों, सुबह हो या रात, कोई

साथ में हो या न हो, सूर्य और चंद्रमा के समान आगे बढ़ते रहो। इसमें कवि ने पक्के इरादे के साथ आगे बढ़ने की बात की है। लगातार चलने से मुश्किलें भी आसान हो जाती हैं।

२)निरंतरता और प्रगति: चाहे सुबह हो या रात, चाहे कोई साथ हो या न हो, हमें सूर्य और चंद्रमा की तरह निरंतर आगे बढ़ते रहना है। कविता "वीर तुम बढ़े चलो!" में कवि ने बालकों को निडरता, वीरता एवं धैर्य के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया है। उन्होंने कहा है कि चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ या बाधाएँ रास्ते में आएं, बालकों को बिना डरे, दृढ़ता के साथ उनका सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए।बच्चों को वीर बनने और धैर्यपूर्वक आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।

हाथ में ध्वजा थामे, दल सजाए हमेशा आगे बढ़ना चाहिए।चाहे पहाड़ सामने हो या सिंह की दहाड़, डरना नहीं है।

बादल गरजें, बारिश हो या बिजली कड़कें, कभी रुकना या झुकना नहीं है।
सुबह हो या रात, साथ हो या न हो, हमेशा सूर्य-चंद्रमा की तरह आगे बढ़ते रहना है।जीवन में चुनौतियाँ आती रहती हैं, लेकिन सत्य, साहस और धैर्य के साथ हम हर मुश्किल को पार कर सकते हैं। जीत उन्हीं की होती है, जो डरकर नहीं, डटकर आगे बढ़ते हैं।

इसका अर्थ है कि हमारी धरती में अनाज और जल भरपूर मात्रा में उपलब्ध है.
यत्न कर निकाल लो, रत्न भर निकाल लो इन संसाधनों को प्राप्त करने के लिए हमें प्रयास करना होगा और अपने भीतर के छिपे हुए गुणों को भी निकालना होगा, जैसे रत्न होते है।

वीर तुम बढ़े चलो!
धीर तुम बढ़े चलो!

कवि देश के युवाओं से आगे बढ़ते रहने का आह्वान करता है, चाहे कितनी भी मुश्किलें आएं.

३)देश के प्रति समर्पण: कविता राष्ट्रध्वज को हाथ में लेकर आगे बढ़ने का आह्वान करती है, जो देश के सम्मान और कर्तव्य के प्रति समर्पण को दर्शाता है। यह कविता मातृभूमि और देश के सम्मान के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए प्रेरित करती है।

४)आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय: कवि का संदेश है कि आत्मविश्वासी और दृढ़ निश्चय के साथ कार्य करने पर मुश्किलें भी आसान हो जाती हैं और हर संकट पर विजय प्राप्त की जा सकती है। वीरों से कहता है कि वे अपने हाथ में तिरंगा ध्वज लेकर, बाल समूह के साथ, बिना रुके और बिना थके आगे बढ़ते रहें।

५)बाधाओं का सामना: सामने चाहे पहाड़ जैसी बड़ी बाधा आए या सिंह की दहाड़ हो, वीरों को डरना नहीं चाहिए, बल्कि वहीं डटकर उनका सामना करना चाहिए।

६)निरंतरता और धैर्य: सूर्य और चंद्रमा जिस तरह बिना किसी रुकावट के प्रतिदिन आगे बढ़ते रहते हैं, वैसे ही वीरों को भी धैर्य और दृढ़ता के साथ हमेशा आगे बढ़ना चाहिए।

७)चुनौतियों का सामना: जीवन में आने वाली हर बाधा, चाहे वह बादल की गरज हो या बिजली का कड़कना, हमें उसका डटकर सामना करना चाहिए और उसे पार कर आगे बढ़ना चाहिए।

८)सकारात्मकता और आशावाद: कविता हमें यह सिखाती है कि दृढ़ इच्छाशक्ति से काम करने पर मुश्किलों को भी आसान बनाया जा सकता है और जीत उन्हीं की होती है जो डटकर आगे बढ़ते हैं।

यह कविता एक 'प्रयाण गीत' है जो हमें साहस, धैर्य और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, ताकि हम जीवन की हर चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकें।कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहना चाहिए और कभी हार नहीं माननी चाहिए।

20 हम भारतवासी - डॉ रमेश पोखरीयाल 'निशंक'

प्र 20 हम भारतवासी" कविता क्या प्रेरणा देती है। – समझाइए।

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में आर.पी. निशंक जी विशिष्ट स्थान रखते हैं। अपनी इस कविता में आप छात्रों में देश भक्ति भावना के साथ विश्व बंधुत्व विश्वशांति, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि उत्तम गुणों का विकास करना चाहते हैं। कवि कहते हैं कि हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे। हम अपने मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे। सब में ऊँच – नीच का भेद मिटाकर दिल में प्यार बसायेंगे। नफ़रत को दूर भगाकर अमृत बरसायेंगे। निराशा को दूर करके लोगों में विश्वास जगायेंगे। उलझनों में उलझे लोगों को तथ्य दीप समझायेंगे। जीवन पथ से भटकनेवालों को सच्चा राह दिखायेंगे।

सच्चे भारतीय होने के कारण सारी दुनिया को पावन धाम बनाना चाहता हूँ। यह मेरा प्रमुख कर्तव्य है। इसके लिए मैं पहले अपने दिल में निर्मल और उत्तम भावनाएँ भर लूंगा। सबके दिलों में एकता और सौभ्रातृत्व भावना जगाने का प्रयत्न करूँगा। प्रेम भाव का महत्व समझाते लोगों को भेद – भावों से दूर रहने का आग्रह करूँगा। सारी मानव जाति एक है – यह नारा देते भक्ति और धर्मयुक्त जीवन बिताने बाध्य करूँगा। खुद सत्य, अहिंसा, त्याग, आत्म समर्पण जैसे उत्कृष्ट गुणों का प्रचार करते लोगों को रास्ता दिखाऊँगा।

कवि का संदेश -

१) विश्व बंधुत्व-

कविता में कवि देश भक्ति के साथ – साथ विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि सद्‌गुणों का विकास छात्रों में करते हैं।

कवि कहते हैं कि,

हम भारतवासी दुनिया को पावन धाम बनायेंगे |
मन में श्रद्धा और प्रेम का अद्‌भुत दृश्य दिखायेंगे ।

हम सबमें ऊँच – नीच का भेद मिटाकर दिल में प्यार बसायेंगे | नफ़रत नामक कुहासे को तोड़कर हम अमृत सरसायेंगे | हम खुशी में निराशा को दूर भगाकर विश्वास जयायेंगे । कवि और कहते हैं कि उलझनों में उलझे लोगों को तथ्य दीप समझायेंगे और जीवन पथ से भटकते रहने वालों को राह दिखायेंगे तथा हम खुशियों के दीप जलाकर जीवन ज्योत जलाकर जीवन ज्योत निर्माण करेंगे। हम सत्य, अहिंसा, त्याग और समर्पण की भावनाओं का विचारों का प्रचार में सरसायेंगे।

२) देशप्रेम और सम्मान:कविता ऊँच-नीच के भेदभाव को खत्म कर सभी के बीच प्यार फैलाने की प्रेरणा देती है।निराशा को दूर कर लोगों के मन में विश्वास और उत्साह जगाने का आह्वान करते हैं।भारतवासियों के त्याग और समर्पण की भावना को भी उजागर करती है, जो देश को महान बनाते हैं।कविता यह संदेश देती है कि भले ही हम अलग-अलग हों, लेकिन अंततः हम सभी भारतवासी हैं और भारत माता की संतान हैं। यह भावना सभी भिन्नताओं के बावजूद एक मजबूत राष्ट्रीय पहचान बनाती है।

३) विविधता में एकता:निराश और परेशान लोगों के मन में विश्वास और खुशियों के दीप जलाना चाहते हैं।

सही राह दिखाकर जो लोग जीवन की उलझनों में फंसे हैं, उन्हें सत्य का मार्ग दिखाकर सही रास्ता दिखाना चाहते हैं।भारतवासी' कविता में विविधता में एकता को कई तरीकों से दर्शाया गया है। यह कविता बताती है कि भारतीय लोग भले ही अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हों, पर कुछ साझा मूल्यों और भावनाओं के कारण एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कविता में सभी भारतवासी मिलकर दुनिया को एक पवित्र और शांतिपूर्ण जगह बनाने का संकल्प लेते हैं। यह साझा लक्ष्य लोगों को उनकी व्यक्तिगत भिन्नताओं से ऊपर उठकर एक साथ लाता है।कविता में 'ऊँच-नीच का भेद मिटाकर' और 'दिल में प्यार बसाकर' नफरत को खत्म करने की बात कही गई है। यह बताता है कि अलग-अलग जाति, धर्म या वर्ग के लोग भी प्रेम और सद्भाव की भावना से एक हो सकतेजब सभी भारतवासी मानवता को सर्वोपरि मानते हैं, तो उनकी व्यक्तिगत पहचान जैसे कि धर्म, भाषा या क्षेत्र गौण हो जाती है। मानवता का यह साझा मूल्य ही उन्हें एकता के सूत्र में पिरोता है।

४) आत्मबल और दृढ़ता:हम भारतवासी' कविता में आत्म बल को सीधे शब्दों में नहीं, बल्कि कई कार्यों और संकल्पों के माध्यम से दर्शाया गया है। यह आत्म बल ही है जो भारतवासियों को कठिन लक्ष्यों को पूरा करने और चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा देता है।

'निराशा को दूर भगाकर, विश्वास जगाएँगे,
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, दिल में प्यार बसाएँगे।

यह पंक्ति बताती है कि भारतवासी नकारात्मकता और निराशा के माहौल में भी लोगों के मन में विश्वास और आशा जगाने की क्षमता रखते हैं। यह एक मज़बूत आंतरिक शक्ति का प्रमाण है, जो दूसरों को भी प्रेरित करती है।

आत्म बल ही है जो लोगों को भेदभाव और नफरत जैसी नकारात्मक भावनाओं से ऊपर उठकर प्रेम और सद्भाव को चुनने की शक्ति देता है। यह दिखाता है कि भारतवासी बाहरी मतभेदों के बावजूद एकता की भावना बनाए रख सकते हैं।

५) सकारात्मक सोच:

'खुशियों के दीप जलाकर,
उनके जीवन में ज्योति लाएँगे।'

यह पंक्ति दूसरों के लिए काम करने और उनके जीवन में सकारात्मकता लाने के आत्म बल को दर्शाता है। किसी से बिना कुछ अपेक्षा किए दूसरों की मदद करना एक महान आंतरिक शक्ति का परिचायक है।

पूरी दुनिया को एक पवित्र स्थान बनाने जैसा विशाल लक्ष्य रखना एक अटूट आत्म बल और दृढ़ संकल्प के बिना संभव नहीं है। यह भारतवासियों की सामूहिक इच्छाशक्ति और साहस को दिखाता है। कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहते हैं कि भारतीय समाज की विविधता उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी ताकत है, और यही विविधता आपस में सम्मान और प्रेम के साथ रहने पर एकता का रूप ले लेती है।

निष्कर्ष रूप में कहे तो, कविता में आत्म बल को केवल शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय गुणों जैसे प्रेम, सद्भाव, सकारात्मकता और निस्वार्थ सेवा के रूप में दर्शाया गया है। यह आत्म बल ही है जो उन्हें अपनी विविधताओं के बावजूद एक-दूसरे से जोड़े रखता है और एक बेहतर भविष्य के लिए एकजुट होकर काम करने की प्रेरणा देता है।

21 उनकी याद करें- अटल बिहारी वाजपेयी

जीवन परिचय:

अटल बिहारी वाजपेयीका 25 दिसंबर 1924 -उनका जन्म हुआ। एक भारतीय कवि, लेखक और राजनेता थे, जिन्होंने भारत के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया , पहली बार 1996 में 13 दिनों की अवधि के लिए, फिर 1998 से 1999 तक 13 महीने की अवधि के लिए, उसके बाद 1999 से 2004 तक पूर्ण कार्यकाल के लिए । वह कार्यालय में पूर्ण कार्यकाल की सेवा करने वाले पहले गैर- कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे। वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सह-संस्थापकों में से एक और वरिष्ठ नेता थे। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य थे , जो एक दक्षिणपंथी हिंदू राष्ट्रवादी अर्धसैनिक स्वयंसेवी संगठन था। वह एक हिंदी कवि और लेखक भी थे।

वाजपेयी ने अपनी प्राथमिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर, ग्वालियर और हाई स्कूल की शिक्षा गोरखी स्कूल, ग्वालियर से प्राप्त की । इसके बाद उन्होंने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (अब महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय उत्कृष्टता महाविद्यालय) में दाखिला लिया, जहाँ से उन्होंने हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत में कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की । बाद में, मास्टर डिग्री के लिए, तत्कालीन ग्वालियर राज्य के सिंधिया राजवंश ने उन्हें 75 रुपये की मासिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की और इस छात्रवृत्ति सहायता से उन्होंने डीएवी कॉलेज, कानपुर , आगरा विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में कला स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की ।

1951 में, वाजपेयी को दीनदयाल उपाध्याय के साथ आरएसएस द्वारा नवगठित भारतीय जनसंघ , जो आरएसएस से संबद्ध एक हिंदू दक्षिणपंथी राजनीतिक दल था, के लिए कार्य करने हेतु नियुक्त किया गया। उन्हें दिल्ली स्थित पार्टी के उत्तरी क्षेत्र के प्रभारी राष्ट्रीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। वे जल्द ही पार्टी नेता श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अनुयायी और सहयोगी बन गए। 1957 के भारतीय आम चुनाव में , वाजपेयी ने भारतीय संसद के निचले सदन, लोकसभा के लिए चुनाव लड़ा । वे मथुरा में राजा महेंद्र प्रताप से हार गए , लेकिन बलरामपुर से निर्वाचित हुए ।

एक भारतीय कवि, लेखक और राजनेता थे, जिन्होंने भारत के प्रधान मंत्री के रूप में कार्य किया , पहली बार 1996 में 13 दिनों की अवधि के लिए, फिर 1998 से 1999 तक 13 महीने की अवधि के लिए, उसके बाद 1999 से 2004 तक पूर्ण कार्यकाल के लिए । [2] वह कार्यालय में पूर्ण कार्यकाल की सेवा करने वाले पहले गैर- कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे। वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी

(भाजपा) के सह-संस्थापकों में से एक और वरिष्ठ नेता थे। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्य थे , जो एक दक्षिणपंथी हिंदू राष्ट्रवादी अर्धसैनिक स्वयंसेवी संगठन था। वह एक हिंदी कवि और लेखक भी थे।

विक्टोरिया कॉलेज , ग्वालियर (बीए)
डीएवी कॉलेज, कानपुर (एम ए)

स्नातक के समय, यह आगरा विश्वविद्यालय से संबद्ध था ।

भारतीय संसद के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले सदस्य , वाजपेयी पांच दशकों से अधिक समय तक सांसद रहे, वे दस बार लोकसभा , निचले सदन और दो बार राज्यसभा , उच्च सदन के लिए चुने गए। स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण 2009 में सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्त होने से पहले, उन्होंने लखनऊ, ग्वालियर, नई दिल्ली और बलरामपुर निर्वाचन क्षेत्रों से संसद सदस्य के रूप में कार्य किया। वे भारतीय जनसंघ (BJS) के संस्थापक सदस्यों में से थे , जिसके वे 1968 से 1972 तक अध्यक्ष रहे। BJS ने कई अन्य दलों के साथ विलय कर जनता पार्टी का गठन किया , जिसने 1977 का आम चुनाव जीता । मार्च 1977 में, वाजपेयी प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में विदेश मंत्री बने । उन्होंने 1979 में इस्तीफा दे दिया और इसके तुरंत बाद जनता गठबंधन टूट गया। भारतीय जनसंघ के पूर्व सदस्यों ने 1980 में भाजपा का गठन किया

प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान , भारत ने 1998 में पोखरण-II परमाणु परीक्षण किया। वाजपेयी ने पाकिस्तान के साथ राजनयिक संबंध सुधारने की कोशिश की और प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मिलने के लिए बस से लाहौर गए । पाकिस्तान के साथ 1999 के कारगिल युद्ध के बाद , उन्होंने राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के साथ बातचीत के जरिए संबंधों को बहाल करने की कोशिश की और उन्हें आगरा में एक शिखर सम्मेलन के लिए भारत आमंत्रित किया । वाजपेयी की सरकार ने कई घरेलू आर्थिक और ढांचागत सुधार पेश किए , जिनमें निजी क्षेत्र और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करना, सरकारी अपव्यय को कम करना , अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करना और कुछ सरकारी स्वामित्व वाले निगमों का निजीकरण शामिल है। [उनके कार्यकाल के दौरान, 2001 के भारतीय संसद हमले और 2002 के गुजरात दंगों सहित कई हिंसक घटनाओं से भारत की सुरक्षा को खतरा था, जिसके कारण अंततः 2004 के आम चुनाव में उनकी हार हुई ।

वाजपेयी को 1992 में भारत सरकार द्वारा भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था । नरेंद्र मोदी सरकार ने 2014 में घोषणा की कि वाजपेयी के जन्मदिन, 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाएगा । 2015 में, उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान - भारत रत्न से सम्मानित किया गया था । 2018 में आयु संबंधी बीमारी के कारण उनका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय:

वाजपेयी ने हिंदी काव्य और गद्य दोनों में अनेक रचनाएँ लिखीं ।

गद्य

राष्ट्रीय एकता
भारत की विदेश नीति के नए आयाम
गठबंधन की राजनीति
कुछ लेख, कुछ भाषा
बिन्दु-बिन्दु विचार
निर्णायक दिन
संकल्पकल
विचार-बिंदु
आसियान और एशिया-प्रशांत क्षेत्र पर भारत का दृष्टिकोण
न दैन्यम् न पलायनम्
नई चुनौती : नया अवसर

कविता
क़ैदी कविराज की कुण्डलियाँ
अमर आग है
मेरी इक्यावन कविताएं , इनमें से कुछ कविताओं को जगजीत सिंह ने अपने एल्बम संवेदना के लिए संगीतबद्ध किया था ।
क्या खोया क्या पाया: अटल बिहारी वाजपेई, व्यक्तित्व और कविताएं।
वाजपेयी के मूल्य, दृष्टि और छंद: भारत के भाग्य पुरुष
इक्कीस कविताएँ
चुनी हुई कविताएँ
वाजपेयी की कुछ हिंदी कविताओं के चयन का अंग्रेजी अनुवाद 2013 में प्रकाशित हुआ था।
पद पुरस्कार :
भारत रत्न (27 मार्च 2015)
पद्म विभूषण
विदेशी सम्मान
मोरक्को :
ऑर्डर ऑफ औइसम अलाउइट , ग्रैंड कॉर्डन

बांग्लादेश मुक्ति युद्ध सम्मान
कानपुर विश्वविद्यालय
डॉक्टर ऑफ लेटर्स (डी. लिट.)
अन्य पुरस्कार
1994, लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार
1994, उत्कृष्ट सांसद पुरस्कार
1994, पंडित गोविंद बल्लभ पंत पुरस्कार

प्र 22 उनकी याद करें कविता युवकों कौनसी प्रेरणा देती है ?

अटल बिहारी वाजपेयी की कविता "उनकी याद करें" में स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों और देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले बलिदानियों को याद करने का आह्वान किया गया है। यह कविता देशभक्ति, राष्ट्रवाद और उन संघर्षों के प्रति कृतज्ञता की भावना को जगाती है, जिन्होंने भारत को आजादी दिलाई।
यह कविता उन शहीदों को समर्पित है जिन्होंने आजादी के लिए संघर्ष किया।

कविता का भावार्थ

१(बलिदानियों का स्मरण: कविता की शुरुआत उन लोगों को याद करने के आह्वान से होती है, जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया। इसमें उन स्वतंत्रता सेनानियों का जिक्र है, जो फांसी पर चढ़े, जिन्होंने काले पानी की सजा काटी और जिन्होंने अंग्रेजों के अत्याचार सहे।कविता उन वीरों को याद करने का आह्वान करती है जो फांसी पर चढ़ गए, जिन्होंने काला पानी की सजा भुगती और अंग्रेजों की क्रूरता का सामना किया।इसमें सावरकर जैसे क्रांतिकारियों के योगदान का भी उल्लेख है, जिन्होंने कोल्हू में जुतकर तेल पेरा, और भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे शहीदों का, जिन्होंने बहरे शासन को जगाने के लिए बम फेंके।

२)लोकतंत्र की पुकार: इसमें लोकतंत्र की दुहाई का भी उल्लेख है, जो लोगों को उनके बलिदानों को याद करने और उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करता है।कविता कहती है कि लोकतंत्र उन बलिदानियों की दुहाई दे रहा है, और स्वाभिमान से वही जी सकता है जिसने आजादी की कीमत चुकाई है।

३)स्वतंत्रता का मूल्य: कविता में यह संदेश है कि आजादी हमें आसानी से नहीं मिली, बल्कि इसके लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है। इसलिए हमें उन बलिदानों को कभी नहीं भूलना चाहिए। यह कविता शक्ति को संगठित करने, सही युक्ति अपनाने और भक्ति के साथ आगे बढ़ने का आह्वान करती है ताकि अंतिम विजय सुनिश्चित हो सके।

४)स्वाभिमान और कर्तव्य: वाजपेयी जोर देते हैं कि स्वाभिमान से जीने के लिए हमें उन शहीदों को याद करना होगा, जिन्होंने अपनी जान दाँव पर लगाई। यह हमें अपने कर्तव्य का पालन करने की याद दिलाता है।

"जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें। जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।"

५)संगठित शक्ति: कविता स्वतंत्रता के लिए संगठित शक्ति, सही रणनीति और अदम्य भक्ति की आवश्यकता पर भी बल देती है, ताकि हम अंतिम विजय प्राप्त कर सकें। कविता का मुख्य संदेश यह है कि आजादी का उत्सव मनाते समय हमें उन गुमनाम चेहरों को नहीं भूलना चाहिए, जिनके बलिदान से यह आजादी संभव हो पाई। यह सिर्फ एक कविता नहीं, बल्कि उन शहीदों के प्रति एक गहरा सम्मान है, जिन्होंने राष्ट्र के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया।

कविता का मुख्य संदेश यह है कि आजादी का उत्सव मनाते समय हमें उन गुमनाम चेहरों को नहीं भूलना चाहिए, जिनके बलिदान से यह आजादी संभव हो पाई। यह सिर्फ एक कविता नहीं, बल्कि उन शहीदों के प्रति एक गहरा सम्मान है, जिन्होंने राष्ट्र के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया। कविता

का केंद्रीय भाव यह है कि स्वतंत्रता एक अनमोल उपहार है, जो हमारे पूर्वजों के महान बलिदान का परिणाम है। यह कविता लोगों में देशभक्ति की भावना को प्रेरित करती है और उन्हें राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का स्मरण कराती है।

प्र 23 ए मेरे वतन के लोगों यह गीत शहीदों की शहादत को कैसे बयां करता है ?

मेरे वतन के लोगो एक हिन्दी देशभक्ति गीत है जिसे कवि प्रदीप ने लिखा था और जिसे सी॰ रामचंद्र ने संगीत दिया था। ये गीत १९६२ के चीनी आक्रमण के शहीद हुए भारतीय सैनिकों को समर्पित था। यह गीत तब मशहूर हुआ जब लता मंगेशकर ने इसे नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस के अवसर पर रामलीला मैदान में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में गाया।। चीन से हुए युद्ध के बाद 27 जनवरी 1963 में डेल्ही नेशनल स्टेडियम में स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने दिया था। यह कहा जाता है इस गाने को सुनने के बाद नेहरु जी की आँखें भर आई थी। 27 जनवरी 1963 को नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में गया था। उस दौरान तत्कालीन राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन और तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू भी कार्यक्रम में मौजूद थे
देश प्रेम और देश के लिए कुछ कर गुज़रने का जज़्बा हर नागरिक में होता है। हिंदी सिनेमा ने भी इस मोहब्बत और जज़्बे को बख़ूबी अभिव्यक्त किया है। आज भी देशभक्ति के कई ऐसे गाने हैं जो लोकप्रिय हैं। बदलते वक़्त के साथ इनकी लोकप्रियता में इज़ाफ़ा ही हुआ है। कुछ ऐसे बेशक़ीमती गीत है जो हर नागरिक को वतन के प्रति अपनी मोहब्बत का इज़हार करने के लिए अल्फ़ाज़ देते है। 'ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आंख में भर लो पानी...।

१)शहीदों को श्रद्धांजलि:

'ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आंख में भर लो पानी'
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़र्बानी'

यह मशहूर देशभक्ति गीत कवि प्रदीप ने लिखा था

यह गीत 1962 के भारत-चीन युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों को एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि है। यह हमें उन सैनिकों के बलिदान को याद करने और सम्मान देने का संदेश देता है, जिन्होंने देश की रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।यह गीत उन बहादुर सैनिकों की याद दिलाता है जो देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए थे.

२)एकता और देशभक्ति: यह गीत देशवासियों को एकजुटता का संदेश देता है, यह दर्शाता है कि किसी भी राज्य या जाति का हो, सरहद पर लड़ने वाला हर सैनिक एक भारतीय है। यह हर भारतीय के दिल में राष्ट्रप्रेम की भावना जगाता है।

३)बलिदान को न भूलें: गीत भारत के लोगों को शहीदों के बलिदान को याद करने और उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रेरित करता है, खासकर 1962 के भारत-चीन युद्ध के संदर्भ में, जिसमें भारत को हार का सामना करना पड़ा था.

यह गीत हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने सैनिकों के बलिदान को कभी नहीं भूलना चाहिए। इसमें लोगों से कहा गया है कि वे शहीदों की कुर्बानियों को हमेशा याद रखें।यह गीत उन सैनिकों के महान त्याग और बलिदान को याद दिलाता है, जो निजी सुख-चैन को त्यागकर, घर से दूर, देश की रक्षा के लिए लड़ते रहे.

४)मनोबल बढ़ाना: गीत देशभक्ति की भावना जगाता है और देश के प्रति प्रेम, निष्ठा और कृतज्ञता व्यक्त करता है, विशेष रूप से उन लोगों के प्रति जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया।यह कविता उन सैनिकों की वीरता और देश के प्रति उनके समर्पण को सम्मान देती है, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी.

यह गीत 1962 के युद्ध के बाद देश के निराशाजनक माहौल में भारतीयों के टूटे हुए मनोबल को फिर से उठाने के लिए लिखा गया था। यह देशवासियों को यह संदेश देता है कि युद्ध में हार के बावजूद भी हमें अपने सैनिकों के शौर्य और बलिदान पर गर्व करना चाहिए।

'जब देश में थी दीवाली वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में वो झेल रहे थे गोली।'

५)देश के प्रति कर्तव्य: यह हमें यह भी याद दिलाता है कि देश के लिए बलिदान देने वालों की कुर्बानी का सम्मान करना और अपने देश की सेवा करना हमारा कर्तव्य है। यह गीत देशभक्ति और राष्ट्रीय गौरव की भावना को जगाता है और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराता है.
गीत ने उन बहादुर सैनिकों के बलिदान को अमर कर दिया, जिन्होंने युद्ध में अपनी जान गंवाई थी।
युद्ध के बाद देश में निराशा का माहौल था।

यह गीत लोगों को एकजुट करने और दुख की घड़ी में सांत्वना देने का एक साधन बना। गीत देशवासियों को यह याद दिलाता है कि जब हम अपने घरों में सुरक्षित थे, तब हमारे सैनिक सीमा पर अपनी जान जोखिम में डालकर देश की रक्षा कर रहे थे।
यह गीत राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता और गौरव की भावना पैदा करता है, और लोगों को देश के लिए किए गए बलिदानों को कभी न भूलने के लिए प्रेरित करता है।

24 है प्रीत जहां की रीत सदा- इंदीवर

जीवन परिचय: इन्दीवर का जन्म 1 जनवरी 1924 को झाँसी, संयुक्त प्रांत, ब्रिटिश भारत के गुआवली गाँव में हुआ था और झाँसी ज़िले के ही बरुआ सागर में वे पले बढ़े। बाद में एक गीतकार के रूप में पेशेवर कैरियर बनाने के लिए वह बम्बई (मुंबई) चले गए। दिनांक 27 फरवरी 1997 को 73 वर्ष की आयु में मुंबई, महाराष्ट्र में उनका निधन हुआ। बाल्यकाल में वे अपने मामा के घर गुआवली (निवाड़ी) में भैंस चराते हुए गाना गाते रहते थे।

कैरियर

उन्हें वर्ष 1951 में फ़िल्म ‘मल्हार’ से पहचान मिली, जिसमें उन्होंने "बड़े अरमानों से रखा है बलम, तेरी कसम" गीत लिखा था जिसके लिए संगीत हिंदी सिनेमा के एक प्रमुख संगीत निर्देशक रोशन ने तैयार किया। अपने चार दशक से अधिक के कैरियर में उन्होंने 300 से ज़्यादा फिल्मों में एक हजार से अधिक गीत लिखे। इंदीवर ने प्रसिद्ध पॉप जोड़ी 'नाज़िया हसन' और 'ज़ोहैब हसन' के लिए भी गीत लिखे। नाज़िया हसन के प्रसिद्ध गीत "आप जैसा कोई", "बूम बूम", "मेहरबानी", "दिल की लगी"

प्रसिद्ध गीत

इन्दीवर के लिखे कुछ गाने काफ़ी प्रसिद्ध हुए, जिनमें शामिल हैं:

बड़े अरमानो से रखा है (मल्हार)
रोशन तुम्ही से दुनियाँ (पारसमणि)
पास बैठो तबियत (पुनर्मिलन)
हम ने तुझको प्यार किया (दूल्हा दुल्हन)
जो प्यार तू ने मुझको दिया था (दूल्हा दुल्हन)
जिस दिल में बसा था प्यार (सहेली)
वक़्त करता जो वफ़ा (दिल ने पुकारा)
हर खुशी हो वहाँ (उपकार)
कसमे वादे प्यार वफ़ा (उपकार)
फूल तुझे भजा है ख़त में (सरस्वती चंद्रा)
छोड़ दे सारी दुनियाँ किसी के लिये (सरस्वती चंद्र)
चंदन सा बदन (सरस्वती चंद्र)
ताल मिले नदी के जल में (अनोखी रात)
कोई जब तुम्हारा हृदय तोड़ दे (पूरब और पश्चिम)
है प्रीत जहाँ की रीत सदा (पूरब और पश्चिम)
दरपन को देखा तू ने (उपासना

पुरस्कार:

1976 "दिल आइसा केसी ने मेरा तोड़ा" (अमानुष) फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ गीतकार पुरस्कार जीता
1966 "एक तू ना मिला" (हिमालय की भगवान में) नामांकित
1974 "समझौता गमों से कर लो" (समझौता) नामांकित
1975 "बहना ने भाई की कलाई
1985 "प्यार का तोहफा नामांकित

प्र 25 है प्रीत जहां की रीत सदा गीत इस गीत में भारत की संस्कृति और उसका गुणगान किया है बताइए।

'है प्रीत जहाँ की रीत सदा,
मैं गीत वहाँ के गाता हूँ,
भारत का रहने वाला हूँ,
भारत की बात सुनाता हूँ '।

एक देशभक्ति गीत की प्रसिद्ध पंक्ति है, जो एक व्यक्ति के भारत के प्रति गहरे प्रेम और अपने देश की बात सुनाता है।

प्रीत जहाँ की रीत सदा" एक देशभक्ति गीत है जो भारत की संस्कृति और उपलब्धियों का जश्न मनाता है। यह गीत भारत को सभ्यता का जन्मस्थान और ज्ञान का स्रोत बताता है, खास तौर पर गणित में शून्य के आविष्कार का उल्लेख करते हुए, और यह बताता है कि भारत ने ही दुनिया को गिनती और दशमलव का ज्ञान सिखाया है। गीत यह भी कहता है कि भारत की सबसे बड़ी रीत प्यार है, जो किसी भी रंग या नस्ल के भेद के बिना हर दिल से जुड़ाव रखती है. "है प्रीत जहाँ की रीत सदा" गाने का भावार्थ यह है कि भारत वह देश है जहाँ की प्रेम की परंपरा हमेशा से बनी रही है, और यह गीत भारतीय संस्कृति और सभ्यता की महानता का जश्न मनाता है। गीत भारत की उपलब्धियों और मूल्यों को उजागर करता है, जो दुनिया भर के लिए प्रेरणा रहे हैं, और यह गीत मनोज कुमार की फिल्म 'पूरब और पश्चिम' से जुड़ा है। इस गीत के गायक है मोहम्मद रफी।

यह गीत भारत की महानता का गुणगान करता है और बताता है कि कैसे भारत ने दुनिया को कई महत्वपूर्ण चीजें सिखाईं।

१)सभ्यता का जन्मस्थान: गीत भारत के उन मूल्यों पर जोर देता है जिनका दुनिया अनुकरण कर सकती है।
गीत कहता है कि भारत ही सभ्यता और कला का पहला स्थान है, और इसीलिए पूरी दुनिया ने भारत का अनुसरण किया।

२)गणित में योगदान: यह गीत भारत की उस भूमिका पर प्रकाश डालता है, जब विश्व को गिनती, कला और विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता थी, तब भारत ने उसे यह सब प्रदान किया.
यह गीत भारत के शून्य (जीरो) के आविष्कार का उल्लेख करता है, जिसके कारण दुनिया को गिनना और दशमलव को समझना आया। यह बताता है कि दशमलव पद्धति का अविष्कार भी भारत में हुआ, जिससे धरती और चंद्रमा के बीच की दूरी का अनुमान लगाना आसान हो गया.

३)प्यार की रीत: गीत भारत की सबसे बड़ी पहचान प्यार को बताता है, जो हर व्यक्ति के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करता है और किसी भी प्रकार के भेदभाव से परे है। यह गीत भारत की उस भूमिका पर प्रकाश डालता है, जब विश्व को गिनती, कला और विज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता थी, तब भारत ने उसे यह सब प्रदान किया. गीत उन मूल्यों का भी वर्णन करता है जिनका भारत समर्थन करता है और विश्व से उन्हें सीखने का आह्वान करता है.

४)देशभक्ति का संदेश:मनोज कुमार द्वारा गाए गए इस गीत का उद्देश्य भारतवासियों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना और भारत की महानता का गुणगान करना है। यह गीत उन प्रवासी भारतीयों के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में भी गाया गया था जो विदेश में भारत का मजाक उड़ाते

हैं, और मनोज कुमार भारत की ओर से उनका बचाव करते हैं। यह गीत भारत के लोगों में देशभक्ति की भावना जगाता है और उन्हें भारत की महानपरंपराओं पर गर्व करने के लिए प्रेरित करता है।

है प्रीत जहाँ की रीत सदा" एक ऐसा गीत है जो भारत की सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान और प्रेममय स्वभाव को उजागर करता है और यह व्यक्त करता है कि कैसे भारत ने दुनिया को समृद्ध किया है।भारत ने ही विश्व को सभ्यता, कला, और शून्य जैसी महत्वपूर्ण चीजें दी हैं, जिससे दुनिया को गिनती आई और चंद्र-पृथ्वी की दूरी का अनुमान लगा पाना संभव हुआ. यह गीत देशभक्ति से ओत-प्रोत है और भारत की महान उपलब्धियों तथा मूल्यों को उजागर करता है, जो भारतीयों के दिलों में स्वाभिमान और प्रेरणा भरता है

झंडा गीत - श्यामलाल गुप्त पार्षद
प्र 26 भारत के सम्मान में लिखा गया झंडा गीत का वर्णन किजिए।

सन १९२३ में फतेहपुर जिला काँग्रेस का अधिवेशन हुआ। सभापति के रूप में पधारे श्री मोतीलाल नेहरू को अधिवेशन के दूसरे दिन ही आवश्यक कार्य से बंबई जाना पड़ा। उनके स्थान पर सभापतित्व संभालनेवाले गणेश शंकर विद्यार्थीजी को अंग्रेज़ सरकार के विरोध में भाषण देने के कारण जेल जाना पड़ा। काँग्रेस ने उस समय तक झंडा तो 'तिरंगा झंडा' तय कर लिया था पर जन-मन को प्रेरित कर सकनेवाला कोई झंडागीत नहीं था। श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पार्षद जी की देशभक्ति और काव्य-प्रतिभा दोनों से ही प्रभावित थे, उन्होंने पार्षदजी से झंडागीत की रचना करने को कहा।

काव्य-रचना ऐसी चीज़ तो है नहीं कि जब चाहा हो गई। पार्षदजी परेशान, समय सीमा में कैसे लिखा जाए? काग़ज-कलम लेकर लिखने बैठ गए। रात को नौ बजे कुछ शब्द काग़ज पर उतरने शुरू हो गए। कुछ समय बाद एक गीत तैयार हो गया जो इस प्रकार था - राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति राष्ट्रीय पताका नमो नमो। रचना बन गई थी, अच्छी भी थी, पर पार्षदजी को लगा बात बनी नहीं। लगा, गीत सामान्य जन-समुदाय के लिए उपयुक्त नहीं था। थककर वह लेट गए। पर व्यग्रता के कारण नींद नहीं आई। जागते-सोते, करवटें बदलते-बदलते रात दो बजे लगा- जैसे रचना उमड़ रही है। वह उठकर लिखने बैठ गए। कलम चल पड़ी। स्वयं पार्षदजी के अनुसार, "गीत लिखते समय मुझे यही महसूस होता था कि भारत माता स्वयं बैठकर मुझे एक-एक शब्द लिखा रही है।" जो झंडागीत बना वह इस प्रकार था -

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति सरसानेवाला वीरों को हर्षानेवाला।
शांति सुधा बरसानेवाला मातृभूमि का तन-मन सारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

झंडा गीत, 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा', का भावार्थ देशभक्ति, विजय, और राष्ट्रीय गौरव का संदेश देता है, जहाँ तिरंगे को विश्व विजयी और प्रेम बरसाने वाला कहा गया है, और देश के

मान-सम्मान को बनाए रखने का संकल्प लिया गया है। यह गीत देश की स्वतंत्रता, एकता और अखंडता के प्रति समर्पण की भावना को जगाता है।

गीत के प्रमुख भावार्थ:

१)देशप्रेम और गौरव: यह गीत 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा' कहकर भारतीय ध्वज को दुनिया के लिए गौरवशाली और विजयी बताता है, जो भारत के सम्मान और स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह गीत नौजवानों और युवतियों के लिए देश पर मर मिटने का प्रेरणा स्रोत बना, जिससे देशभक्ति की भावना प्रबल होती है.

२)राष्ट्रीय एकता: तिरंगा पूरे देश की एकता और पहचान का प्रतीक है, और झंडे को ऊंचा रखने का अर्थ है देश के मान-सम्मान और स्वतंत्रता को हमेशा बनाए रखना। गीत में झंडे को मातृभूमि का 'तन-मन' बताया गया है, और यह भारत के राष्ट्रीय ध्वज के गौरव का गान है. गीत राष्ट्रीय स्तर पर ध्वजगीत घोषित हुआ, जो स्वतंत्रता और गणतंत्र दिवस समारोहों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है.

३)समर्पण और त्याग: गीत यह भी बताता है कि हमें अपने देश की शान, स्वतंत्रता और सम्मान के लिए त्याग करने और संघर्ष करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कवि कहते हैं कि यह तिरंगा झंडा सम्पूर्ण विश्व (संसार) पर विजय प्राप्त करने वाला है। यह ध्वज (झंडा) सदैव ऊँचा रहे। (यहाँ पर कवि तिरंगे झंडे को हमारे देश का गौरव प्रतीक मानते हुए कहते हैं कि यह सदैव ऊँचा रहे जिससे हमारे देश का मान सम्मान हमेशा बना रहे।) कवि तिरंगे झंडे का गौरव गान करते हुए कहते हैं कि यह झंडा हमेशा शक्ति प्रदान करने वाला है और प्रेम रूपी अमृत का संचार करने वाला है। यह ध्वज वीरों में आनंद पैदा करता है। यह हमारी मातृभूमि (भारत माता) का तन मन सर्वस्व है। हमारा यह झंडा सदैव ऊँचा रहे।

४)प्रेरणादायक भावना: यह गीत स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक उत्प्रेरक का काम करता था, जो लोगों में राष्ट्रभक्ति और देश के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरा करने की प्रेरणा भरता था। वीर पुरुषों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि हे वीरों! आओ और हमारे देश भक्ति ,देश-प्रेम के धर्म पर बलिदान हो जाओ। आओ हम एक साथ मिलकर गाए, यह भारत देश हमारा है और हमारा यह झंडा सदैव ऊँचा रहे।इस तिरंगे झंडे का गौरव कभी भी समाप्त न हो, भले ही हमारी जान चली जाए, हम बलिदान हो जाए। जब हम इस ध्वज के तले विश्व विजय करके दिखा देंगे तभी हमारी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी। इस तरह यह झंडा हमारा सदैव ऊँचा रहे।

५)सदा ऊँचा रहने का संकल्प: 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' का अर्थ है कि भारत का ध्वज सदा बुलंद रहे और देश का गौरव कभी कम न हो। स्वतंत्रता संग्राम की भयंकर लड़ाई में, वीरों के अंदर इसे देख देख कर प्रति-पल जोश पैदा होता है। इस तिरंगे झंडे को देखकर दुश्मन के मन में भय पैदा होता है। इस झंडे के कारण हम सभी के अंदर का सम्पूर्ण डर समाप्त हो जाता है। इस तरह यह झंडा हमारा सदैव ऊँचा रहे।इस झंडे की क्षत्रछाया में हम सब बिना भय के रहते हैं, हमें किसी प्रकार का भय नहीं रहता है। (कवि स्वतंत्रता सेनानियों से आग्रह करते हैं) हम अपने स्वतंत्रता प्राप्ति लक्ष्य के लिए निश्चय करके अडिग रहें। इस तरह कवि कहते हैं कि सब मिलकर बोलो, भारत माता की जय। हम सभी का उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्त करना है। यह हमारा झंडा हमारा ऊँचा रहे।

यह गीत श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' द्वारा रचा गया था, जिसे 1938 में कांग्रेस अधिवेशन में स्वीकार किया गया था और यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक महत्वपूर्ण देशभक्ति का गीत बन गया।

27 **यह देश है वीर जवानों का - साहिर लुधियानवी**

जीवन परिचय:

साहिर लुधियानवी (असली नाम: अब्दुल हई) एक प्रसिद्ध भारतीय उर्दू कवि और हिन्दी गीतकार थे, जिनका जन्म ८ मार्च १९२१ को लुधियाना में हुआ था और जिनकी मृत्यु २५ अक्टूबर १९८० को हुई. उन्होंने अपने जीवनकाल में 'प्रगतिशील कविताओं' का सृजन किया और हिन्दी सिनेमा के लिए गीत लिखे, जिसके लिए उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

प्रारंभिक जीवन और शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा: उन्होंने लुधियाना के खालसा हाई स्कूल से शिक्षा प्राप्त की और बाद में गवर्नमेंट कॉलेज, लुधियाना में दाखिला लिया.

साहित्यिक करियर

शुरुआत: कॉलेज के दिनों से ही वे अपनी गजलों और नज़्मों के लिए काफी लोकप्रिय थे.
प्रकाशन: उन्होंने अपनी पहली किताब 'तल्ख़ियाँ' (कड़वाहट) के रूप में १९४३ में प्रकाशित की.
संपादन: उन्होंने लाहौर में चार उर्दू पत्रिकाओं का संपादन किया, जिनमें 'आदाब-ए-लतीफ़', 'शाहकार', 'पृथलारी' और 'सवेरा' शामिल हैं.
प्रगतिशील कवि: वे प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़ गए और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध अपनी कविताओं और गीतों के लिए जाने गए.

फ़िल्मी करियर और पुरस्कार

फ़िल्मों में योगदान: १९४८ में फिल्म 'आज़ादी की राह पर' के साथ उन्होंने फ़िल्मों में काम करना शुरू किया.

प्रसिद्ध गीत: उन्होंने 'हम दोनो', 'ताजमहल', 'कभी कभी' और 'चित्रलेखा' जैसी कई सफल फ़िल्मों के लिए यादगार गीत लिखे.

पुरस्कार: उन्हें फ़िल्मफेयर पुरस्कार दो बार मिला: 'ताजमहल' और 'कभी कभी' के लिए.
पद्मश्री: १९७१ में भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मश्री' से सम्मानित किया.
विवाह: साहिर ने विवाह नहीं किया.
निधन: २५ अक्टूबर १९८० को मुंबई में उनका निधन हो गया।

प्र 28 यह देश है वीर जवानों का इस जीत की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

फ़िल्म 'नया दौर' (1957) का यह गीत भारत की शक्ति, समृद्धि और उसके लोगों के जीवंत उत्साह का संदेश देता है। यह गीत देशभक्ति की भावना को प्रेरित करता है और भारत के नायकों की वीरता का गौरवगान करता है।

ये देश है वीर जवानों का' गीत का भावार्थ यह है कि यह गीत भारत देश और यहाँ के लोगों के उत्साह, साहस और देशभक्ति की भावना को दर्शाता है। यह गीत 1957 की फ़िल्म नया दौर का है, जिसे साहिर लुधियानवी ने लिखा था और मोहम्मद रफ़ी ने गाया था। यह देश वीर जवनों का है | यहां हर एक जवान वीरता का परिचय देता हे । इन जवानोको आपनी बालेदानो की परवाह नहीं होती । यह हर एक युद्ध को तयार होते हे । इनका एक ही लक्ष्य होता है वह हे आपने देश की रक्षा करना और देस को सुरक्षहित रखना हे । इसलिए हमें आपने जवानों का सम्मान करना चाहि

गीत के मुख्य भावार्थ और संदेश इस प्रकार हैं:
१)देश की महिमा: देश का गौरव: यह गीत भारत को दुनिया का गहना और वीर तथा मस्तमौला जवानों का देश बताता है। यह देश की सुंदरता और लोगों के जोश की प्रशंसा करता है।

गीत में भारत को एक ऐसा देश बताया गया है जो न सिर्फ़ बहादुर सैनिकों का है, बल्कि अपने मस्त-मौला और खुशमिज़ाज लोगों के लिए भी जाना जाता है। इसे दुनिया का गहना (आभूषण) कहा गया है, जो इसकी सुंदरता और महानता को दर्शाता है।

२)शूरवीरों का सम्मान:गीत में कहा गया है कि भारतीय अपने प्रेमियों के लिए दिलदार होते हैं, लेकिन दुश्मनों के लिए तलवार की तरह होते हैं। यह दिखाता है कि भारतीय मैदान में डटकर मुकाबला करते हैं और आसानी से पीछे नहीं हटते

यह गीत हमारे सैनिकों के साहस और बलिदान का गुणगान करता है। इसमें बताया गया है कि देश के जवान अपनी जान की परवाह किए बिना देश की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
३)खुशहाली और उत्सव: में भारत की रंगीन संस्कृति और खुशहाली का वर्णन किया गया है, जहाँ हर जगह मेले सजते हैं, ढोल बजते हैं, और लोग मस्ती में गाते हैं।

गीत में भारत के रंगीन और जीवंत संस्कृति का वर्णन है, जहाँ हमेशा मेले सजते हैं, ढोल-ताशे बजते हैं, और हर तरफ़ खुशी का माहौल होता है।

४)प्यार और मित्रता: इस गीत में यह भी कहा गया है कि हम प्यार करने वालों के लिए दिलदार हैं, लेकिन दुश्मनों के लिए तलवार की तरह हैं। यह हमारे लोगों के कोमल हृदय और देश की सुरक्षा के प्रति उनकी दृढ़ता को दर्शाता है।

५)साहस और अटल इरादे: गीत के बोल बताते हैं कि मैदान में डट जाने के बाद पीछे हटना हमारे जवानों के लिए नामुमकिन है, जो उनके अटल साहस और संकल्प को दिखाता है।
देश है वीर जवानों का देशभक्ति गीत हमारे जवानों के साहस और त्याग को समर्पित है। यह गीत हमें उनके बलिदान की महत्ता और देश के प्रति उनकी निष्ठा को याद दिलाता है। आइए, इस गीत के ज़रिये हम देश के जवानों के प्रति अपना सम्मान प्रकट करें।

६)राष्ट्र निर्माण की भावना: भारत की रंगीन संस्कृति और खुशहाली हैं।1950 के दशक में बने इस गीत में राष्ट्र-निर्माण की भावना झलकती है, जब देश विकास के लिए प्रयास कर रहा था। यह गीत भारतीय जनता की आशाओं, आकांक्षाओं और राष्ट्रवादी भावनाओं को दर्शाता है।
यह गीत नए स्वतंत्र भारत की आशाओं और राष्ट्रवादी भावनाओं को दर्शाता है, जब देश प्रगति और राष्ट्र निर्माण की राह पर आगे बढ़ रहा था।वीरों की शौर्य गाथा और देश के प्रति समर्पण को उजागर करता यह गीत ये देश है वीर जवानों का हमें गर्व और देशभक्ति की भावना से भर देता है।

यह गीत श्रोताओं में राष्ट्रीय गौरव और एकता की भावना जगाता है, खासकर जब भारत आजादी के बाद राष्ट्र-निर्माण के शुरुआती दौर से गुजर रहा था।

यह भारतीय लोगों की बहादुरी और साहस को दर्शाकर उनकी प्रशंसा करता है। यह बताता है कि भारतीय लोग प्रेम के मामले में उदार हैं, लेकिन दुश्मनों के खिलाफ मजबूती से खड़े रहते हैं।यह गीत भारत की जीवंत संस्कृति, उत्सवों और लोगों के खुशमिजाज स्वभाव को दिखाता है। यह देश की समृद्धि और खुशी को दर्शाता है।

यह गीत एक सकारात्मक और उत्साहजनक संदेश देता है, जो लोगों को अपने देश के लिए बेहतर काम करने के लिए प्रेरित करता है।

इस गीत का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि एक मजबूत, एकजुट और गौरवशाली भारत की कल्पना को लोगों के बीच फैलाना है।

29. **कर चले हम फ़िदा जानो - कैफ़ी आज़मी**

जीवन परिचय:

कैफी आज़मी एक उर्दू के शायर थे। कैफी का असली नाम अख्तर हुसैन रिजवी था। उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के छोटे से गांव मिजवां में 14 जनवरी 1919 में जन्मे। गांव के सिधेसाधे माहौल में कविताएं पढ़ने का शौक लगा। भाइयों ने प्रोत्साहित किया तो खुद भी लिखने लगे और अपने भाइयो को भी बताना शुरू करते थे।11 साल की उम्र में उन्होंने अपनी पहली गज़ल लिखी।
मई 1947 में इनका विवाह शौकत से हुआ। आर्थिक रूप से संपन्न और साहित्यिक संस्कारों वाली शौकत को कैफी के लेखन ने प्रभावित थीं। उनके यहां एक बेटी और एक बेटे का जन्म हुआ, जिनका नाम शबाना और बाबा है। शबाना आज़मी हिंदी फिल्मों की एक अज़ीम अदाकारा बनीं।

साहित्यिक परिचय:
कविता संग्रह:
'झंकार' (1943), 'आख़िर-ए-शब', 'सरमाया', 'आवारा सजदे', 'कैफ़ियात' और 'नई गुलिस्तान'.

प्रसिद्ध कविताएँ:
' औरत', 'मकान', 'दायरा', 'सांप' और 'बहुरूपनी'.

पुरस्कार एवं सम्मान:

१)क़ैफ़ी आज़मी को राष्ट्रीय पुरस्कार के अलावा कई बार फिल्मफेयर अवॉर्ड भी मिला।
२)1974 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया।

कैफ़ी आज़मी 20वीं सदी के एक प्रभावशाली कवि और गीतकार थे, जिनका काम अपनी भावनात्मक गहराई और सामाजिक सरोकारों के लिए जाना जाता है. 10 मई, 2002 को मुंबई में उनका निधन हो गया.

प्र : 30 'कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो'मे राष्ट्रीय चेतना स्वर है , स्पष्ट कीजिए।

देशभक्ति केवल युद्ध के मैदान में बंदूक उठाने तक सीमित नहीं होती, वह एक विचार है , एक ऐसा जीवंत संकल्प, जो हर भारतवासी के दिल में धड़कता है। आज़ादी की लड़ाई के दौरान और उसके बाद भी कई कवियों और लेखकों ने इस भावना को शब्दों में ढाला, परंतु कुछ कविताएँ या गीत ऐसे होते हैं जो हर पीढ़ी के दिलो-दिमाग़ में हमेशा के लिए घर कर जाते हैं। कैफ़ी आज़मी का लिखा गीत

"कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो"।

ऐसी ही एक अमर रचना है, जो भारत की राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना का अद्वितीय प्रतीक है। यह गीत केवल काव्य नहीं है, यह एक प्रेरणा है, एक घोषणा है, और एक उत्तरदायित्व का संदेश है। इसमें सैनिकों की शहादत, उनके त्याग, साहस और बलिदान के साथ-साथ अगली पीढ़ियों के लिए एक स्पष्ट आह्वान है कि वे इस देश को संभालें, उसकी रक्षा करें और उसे आगे बढ़ाएँ। यह उस उत्तरदायित्व का हस्तांतरण है जो वह अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंप रहा है। “अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो” केवल एक पंक्ति नहीं, यह एक ऐतिहासिक संकल्प है , कि हमने अपना काम पूरा कर दिया, अब देश की रक्षा, उसका सम्मान और उसका विकास तुम्हारे कंधों पर है।

१)सैनिकों का बलिदान और समर्पण:
कविता में देश के वीर और शहीद सैनिकों की भावनाओं को व्यक्त किया गया है, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी अपने प्राणों का बलिदान देकर देश की सीमाओं की रक्षा की।

कैफ़ी आज़मी की यह रचना एक भावनात्मक विस्फोट है, जिसमें सैनिकों के बलिदान, मातृभूमि के प्रति प्रेम, नारी-सम्मान की रक्षा, और नागरिक उत्तरदायित्व जैसी गूढ़ भावनाएँ एक साथ समाहित हैं। इस गीत की पहली ही पंक्ति हमें सीधे युद्धभूमि में खड़ा कर देती है, जहाँ सैनिक अपने प्राणों की आहुति देने के पश्चात् निश्चिंत भाव से देश को भावी नागरिकों को सौंपते हैं। यहाँ किसी प्रकार की शिकायत नहीं, कोई पश्चाताप नहीं — केवल गर्व है, समर्पण है, और अगली पीढ़ी पर विश्वास है।

२)देशभक्ति की भावना:

कवि भारतवासियों में देशभक्ति की भावना को जागृत करते हुए यह संदेश देते हैं कि देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करना ही जीवन की सार्थकता है।

इस गीत में राष्ट्रीय चेतना का वह स्वरूप देखने को मिलता है जो केवल कर्तव्य और अधिकार के भाषणों से नहीं उपजता, बल्कि हृदय के सबसे कोमल और सबसे मजबूत भावों से आकार लेता है। जब गीतकार लिखते हैं, "साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई, फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया" , तब यह केवल एक युद्ध की स्थिति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन बन जाता है। यह पंक्ति एक ऐसे मनोबल का प्रतीक है जो मृत्यु के निकट भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता। यही भावना उस राष्ट्रीय चेतना का केंद्र है, जो भारत जैसे देश को जीवंत बनाए रखती है।

'कट गए सर हमारे तो कुछ ग़म नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया'

यह पंक्ति न केवल भारतीय सैनिकों की वीरता का प्रतीक है, बल्कि यह उस आदर्श की भी घोषणा है कि देश की गरिमा के लिए अपना सर्वस्व भी न्योछावर किया जा सकता है। हिमालय, यहाँ भारत की अस्मिता का प्रतीक बनता है — एक ऐसा मूल्य जिसे किसी भी हाल में झुकने नहीं दिया जा सकता। यही तो है वह राष्ट्रीय चेतना, जिसमें व्यक्ति स्वयं को मिटाकर भी देश की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने का संकल्प करता है।

कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियो

३)देश की रक्षा का भार:

सैनिक अपने बलिदान के बाद अपने साथियों से कहते हैं कि अब देश की रक्षा की जिम्मेदारी उनके कंधों पर है और उन्हें इस कर्तव्य का निर्वाह करना होगा.

देशभक्ति केवल युद्ध के मैदान में बंदूक उठाने तक सीमित नहीं होती, वह एक विचार है ,एक ऐसा जीवंत संकल्प, जो हर भारतवासी के दिल में धड़कता है। आज़ादी की लड़ाई के दौरान और उसके बाद भी कई कवियों और लेखकों ने इस भावना को शब्दों में ढाला, परंतु कुछ कविताएँ या गीत ऐसे होते हैं जो हर पीढ़ी के दिलो-दिमाग़ में हमेशा के लिए घर कर जाते हैं। कैफ़ी आज़मी का लिखा गीत अमर रचना है, जो भारत की राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति की भावना का अद्वितीय प्रतीक है।

यह गीत केवल काव्य नहीं है, यह एक प्रेरणा है, एक घोषणा है, और एक उत्तरदायित्व का संदेश है। इसमें सैनिकों की शहादत, उनके त्याग, साहस और बलिदान के साथ-साथ अगली पीढ़ियों के लिए एक स्पष्ट आह्वान है कि वे इस देश को संभालें, उसकी रक्षा करें और उसे आगे बढ़ाएँ। यह उस उत्तरदायित्व का हस्तांतरण है जो वह अपनी आने वाली पीढ़ियों को सौंप रहा है। यह एक ऐतिहासिक संकल्प है ,कि हमने अपना काम पूरा कर दिया, अब देश की रक्षा, उसका सम्मान और उसका विकास तुम्हारे कंधों पर है।

४)भारत माता का सम्मान:

कवि भारत माता को सीता के समान पवित्र बताते हैं और देशवासियों से आह्वान करते हैं कि किसी भी दुश्मन को भारत माता के आँचल को छूने न दें।

कैफ़ी आज़मी की यह रचना एक भावनात्मक विस्फोट है, जिसमें सैनिकों के बलिदान, मातृभूमि के प्रति प्रेम, नारी-सम्मान की रक्षा, और नागरिक उत्तरदायित्व जैसी गूढ़ भावनाएँ एक साथ समाहित हैं। इस गीत की पहली ही पंक्ति हमें सीधे युद्धभूमि में खड़ा कर देती है, जहाँ सैनिक अपने प्राणों की आहुति

देने के पश्चात् निश्चिंत भाव से देश को भावी नागरिकों को सौंपते हैं। यहाँ किसी प्रकार की शिकायत नहीं, कोई पश्चाताप नहीं , केवल गर्व है, समर्पण है, और अगली पीढ़ी पर विश्वास है।

इस गीत में राष्ट्रीय चेतना का वह स्वरूप देखने को मिलता है जो केवल कर्तव्य और अधिकार के भाषणों से नहीं उपजता, बल्कि हृदय के सबसे कोमल और सबसे मजबूत भावों से आकार लेता है। जब गीतकार लिखते हैं, "साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई, फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया" , तब यह केवल एक युद्ध की स्थिति नहीं, बल्कि एक जीवन-दर्शन बन जाता है। यह पंक्ति एक ऐसे मनोबल का प्रतीक है जो मृत्यु के निकट भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटता। यही भावना उस राष्ट्रीय चेतना का केंद्र है, जो भारत जैसे देश को जीवंत बनाए रखती है।

यह पंक्ति न केवल भारतीय सैनिकों की वीरता का प्रतीक है, बल्कि यह उस आदर्श की भी घोषणा है कि देश की गरिमा के लिए अपना सर्वस्व भी न्योछावर किया जा सकता है। हिमालय, यहाँ भारत की अस्मिता का प्रतीक बनता है — एक ऐसा मूल्य जिसे किसी भी हाल में झुकने नहीं दिया जा सकता। यही तो है वह राष्ट्रीय चेतना, जिसमें व्यक्ति स्वयं को मिटाकर भी देश की प्रतिष्ठा को अक्षुण्ण रखने का संकल्प करता है।

इस गीत की विशेषता यह है कि यह केवल वीरता की बात नहीं करता, यह संवेदना, संस्कृति और समाज के प्रति भी सजग है। उस गरिमा की बात करती है जो मृत्यु के क्षण में भी व्यक्ति को छोटा नहीं होने देती। यह बाँकपन केवल बाहरी शौर्य नहीं, यह आत्मबल है, वह आत्मगौरव है जो एक सैनिक अपने अंतिम श्वास तक बनाए रखता है ।यह एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी पर विश्वास है, जिसे निभाना हर नागरिक का धर्म है।

यह गीत केवल युद्ध और सीमा की बात नहीं करता, यह देश की सामाजिक चेतना को भी स्पर्श करता है। जब कवि लिखते हैं, वे एक गहरे सत्य को उजागर करते हैं। जीवन जीने के अवसर बार-बार मिलते हैं, पर देश के लिए मरने का सौभाग्य विरले को मिलता है। यह पंक्ति एक ओर देशभक्ति की ऊँचाई को दिखाती है, तो दूसरी ओर हमें उस सोच से परिचित कराती है जिसमें बलिदान गर्व की बात होती है, बोझ नहीं।

राष्ट्रीय चेतना के साथ एक तीखा प्रश्न जुड़ा है। क्या हमारी जवानी केवल प्रेम-प्रसंगों और सुख-साधनों में बीत रही है, या वह राष्ट्र निर्माण में भी अपना रक्त और पसीना बहा रही है? यह पंक्ति हर उस युवा को आत्मचिंतन की ओर उकसाती है जो केवल अपने जीवन की चिंता करता है, पर राष्ट्र को भूल जाता है। यह आलोचना नहीं है, बल्कि एक जागरूक आह्वान है — कि सच्ची जवानी वही है जो देश के लिए समर्पित हो।

'आज धरती बनी है दुल्हन साथियो,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों। भारत माता को दुलहन के रूप में प्रस्तुत करता है। यह भावनात्मक प्रतीक राष्ट्रीय चेतना को एक और स्तर पर ले जाता है, जहाँ देश केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि एक श्रद्धेय और पूज्य सत्ता बन जाती है। जब धरती दुलहन बनती है, तो उसका सम्मान, उसकी

गरिमा और उसकी रक्षा हमारी पहली जिम्मेदारी बन जाती है। यह वही भावना है जो हमें सिखाती है कि देश का अपमान किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं।

राष्ट्रीय चेतना केवल अतीत के बलिदानों को याद करने का नाम नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य को उस बलिदान के योग्य बनाने का संकल्प भी है। कवि हमें यह याद दिलाते हैं कि, शहीदों की दी हुई आज़ादी तभी जीवित रह सकती है जब हम उस पर चलने वालों की कतारें बनाते रहें। यह पंक्तियाँ हमें यथार्थ के धरातल पर लाकर खड़ा करती हैं , जहाँ देशभक्ति केवल भावनाओं का विषय नहीं, कर्म और निरंतर संघर्ष का विषय है।

यह युद्ध और बलिदान का सौंदर्यशास्त्र है। यहाँ जीत का जश्न तभी सच्चा है जब हम मृत्यु और जीवन के संगम को समझें। राष्ट्रीय चेतना तभी पूर्ण होती है जब हम यह स्वीकारें कि देश की उन्नति, उसकी आज़ादी और उसकी गरिमा के लिए कुछ मूल्य चुकाने पड़ते हैं — और वे मूल्य केवल भौतिक नहीं, आत्मिक होते हैं।

यह आदेश है कि,वह भी प्रेम से भरा हुआ आदेश। कफ़न, जो सामान्यतः मृत्यु का प्रतीक होता है, यहाँ जीवन का सबसे पवित्र संकल्प बन जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने सिर पर कफ़न बाँध लेता है, तो वह हर भय से मुक्त हो जाता है। यह वही भावना है जो स्वतंत्रता सेनानियों और सैनिकों को प्रेरणा देती है। यह भावना राष्ट्रीय चेतना का मूल स्तंभ है — मृत्यु से परे जीने की भावना।

५)सीता और लक्ष्मण का प्रतीक:

देश की रक्षा करने का दायित्व देशवासियों पर है, उन्हें राम और लक्ष्मण की तरह अपनी भूमिका निभानी होगी और किसी भी शत्रु का सामना करने के लिए तैयार रहना होगा।

जब गीतकार कहते हैं,

खींच दो अपने ख़ूँ से ज़मीं पर लकीर।
इस तरफ़ आने पाए न रावण कोई,"

तो वे आधुनिक संदर्भों में सामाजिक और राष्ट्रीय मर्यादा की रक्षा की बात करते हैं। रावण यहाँ केवल एक पौराणिक पात्र नहीं, वह हर वह शक्ति है जो देश की अस्मिता, उसकी नारी-सम्मान या उसकी संस्कृति को लांघना चाहती है। यह पंक्ति हमसे कहती है कि यदि ज़रूरत हो तो अपने लहू से भी देश की सीमा खींच दो।

"तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे, छू न पाए सीता का दामन कोई"

यह स्पष्ट संकेत है कि देश की संस्कृति, नारी गरिमा और मर्यादा की रक्षा के लिए हर संभव उपाय करने होंगे। यह केवल युद्ध की बात नहीं, यह सामाजिक संरचना और राष्ट्रीय चरित्र की भी बात है।

अंततः तो यह हर भारतीय को उसकी भूमिका की याद दिलाता है। अब कोई राम, कोई लक्ष्मण बाहर से नहीं आएगा; अब हम ही हैं जो इस देश की रक्षा करेंगे, इसका निर्माण करेंगे, इसकी संस्कृति

को आगे बढ़ाएंगे। यही राष्ट्रीय चेतना है — एक ऐसी भावना जो व्यक्ति को केवल अपने जीवन की चिंता करने वाले जीव से, एक जागरूक नागरिक, एक सजग सैनिक, एक कर्मठ कर्मयोगी में बदल देती है।

कैफ़ी आज़मी का यह गीत साहित्य के क्षेत्र में एक अमूल्य धरोहर है, पर इससे भी बढ़कर यह गीत राष्ट्रीय चेतना की वह जीवंत मिसाल है, जो आने वाली पीढ़ियों को हमेशा यह याद दिलाता रहेगा कि यह देश हमें यूं ही नहीं मिला है ।यह हमें सौंपा गया है, अपार बलिदानों की नींव पर।

इस गीत की विशेषता यह है कि, यह केवल वीरता की बात नहीं करता, यह संवेदना, संस्कृति और समाज के प्रति भी सजग है। उस गरिमा की बात करती है जो मृत्यु के क्षण में भी व्यक्ति को छोटा नहीं होने देती। यह बाँकपन केवल बाहरी शौर्य नहीं, यह आत्मबल है, वह आत्मगौरव है जो एक सैनिक अपने अंतिम श्वास तक बनाए रखता है। और फिर उसी गर्व के साथ वह कहता है यह एक पीढ़ी का दूसरी पीढ़ी पर विश्वास है, जिसे निभाना हर नागरिक का धर्म है।

यह गीत केवल युद्ध और सीमा की बात नहीं करता, यह देश की सामाजिक चेतना को भी स्पर्श करता है। जब कवि कहते हैं, तो वे एक गहरे सत्य को उजागर करते हैं। जीवन जीने के अवसर बार-बार मिलते हैं, पर देश के लिए मरने का सौभाग्य विरले को मिलता है। यह पंक्ति एक ओर देशभक्ति की ऊँचाई को दिखाती है, तो दूसरी ओर हमें उस सोच से परिचित कराती है जिसमें बलिदान गर्व की बात होती है, बोझ नहीं।

गीत में राष्ट्रीय चेतना के साथ एक तीखा प्रश्न जुड़ा है। क्या हमारी जवानी केवल प्रेम-प्रसंगों और सुख-साधनों में बीत रही है, या वह राष्ट्र निर्माण में भी अपना रक्त और पसीना बहा रही है? यह पंक्ति हर उस युवा को आत्मचिंतन की ओर उकसाती है जो केवल अपने जीवन की चिंता करता है, पर राष्ट्र को भूल जाता है। यह आलोचना नहीं है, बल्कि एक जागरूक आह्वान है — कि सच्ची जवानी वही है जो देश के लिए समर्पित हो।

भारत माता को दुलहन के रूप में प्रस्तुत करता है। यह भावनात्मक प्रतीक राष्ट्रीय चेतना को एक और स्तर पर ले जाता है, जहाँ देश केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि एक श्रद्धेय और पूज्य सत्ता बन जाती है। जब धरती दुलहन बनती है, तो उसका सम्मान, उसकी गरिमा और उसकी रक्षा हमारी पहली जिम्मेदारी बन जाती है। यह वही भावना है जो हमें सिखाती है कि देश का अपमान किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं।राष्ट्रीय चेतना केवल अतीत के बलिदानों को याद करने का नाम नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य को उस बलिदान के योग्य बनाने का संकल्प भी है। कवि हमें यह याद दिलाते हैं कि शहीदों की दी हुई आज़ादी तभी जीवित रह सकती है जब हम उस पर चलने वालों की कतारें बनाते रहें। जहाँ देशभक्ति केवल भावनाओं का विषय नहीं, कर्म और निरंतर संघर्ष का विषय है।

यह जीत का जश्न तभी सच्चा है जब हम मृत्यु और जीवन के संगम को समझें। राष्ट्रीय चेतना तभी पूर्ण होती है जब हम यह स्वीकारें कि देश की उन्नति, उसकी आज़ादी और उसकी गरिमा के लिए कुछ मूल्य चुकाने पड़ते हैं ,और वे मूल्य केवल भौतिक नहीं, आत्मिक होते हैं।

यह आदेश है, वह भी प्रेम से भरा हुआ आदेश। कफ़न, जो सामान्यतः मृत्यु का प्रतीक होता है, यहाँ जीवन का सबसे पवित्र संकल्प बन जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने सिर पर कफ़न बाँध लेता है, तो वह हर भय से मुक्त हो जाता है। यह वही भावना है जो स्वतंत्रता सेनानियों और सैनिकों को प्रेरणा देती है। यह भावना राष्ट्रीय चेतना का मूल स्तंभ है — मृत्यु से परे जीने की भावना।
यह स्पष्ट संकेत है कि देश की संस्कृति, नारी गरिमा और मर्यादा की रक्षा के लिए हर संभव उपाय करने होंगे। यह केवल युद्ध की बात नहीं, यह सामाजिक संरचना और राष्ट्रीय चरित्र की भी बात है।

अंततः जब यह गीत हर भारतीय को उसकी भूमिका की याद दिलाता है। अब कोई राम, कोई लक्ष्मण बाहर से नहीं आएगा; अब हम ही हैं जो इस देश की रक्षा करेंगे, इसका निर्माण करेंगे, इसकी संस्कृति को आगे बढ़ाएंगे। यही राष्ट्रीय चेतना है — एक ऐसी भावना जो व्यक्ति को केवल अपने जीवन की चिंता करने वाले जीव से, एक जागरूक नागरिक, एक सजग सैनिक, एक कर्मठ कर्मयोगी में बदल देती है।

कैफ़ी आज़मी का यह गीत साहित्य के क्षेत्र में एक अमूल्य धरोहर है, पर इससे भी बढ़कर यह गीत राष्ट्रीय चेतना की वह जीवंत मिसाल है, जो आने वाली पीढ़ियों को हमेशा यह याद दिलाता रहेगा कि यह देश हमें यूं ही नहीं मिला — यह हमें सौंपा गया है, अपार बलिदानों की नींव पर।